ओ३म्

घर का वैद्य

[द्वितीय भाग]

प्रकाशक :
हरयाणा साहित्य संस्थान
गुरुकुल झज्जर (रोहतक)

श्री वैद्य बलवन्तसिंह आर्य

द्वितीयवार २०३३ वि० मूल्य १-७५ पैसे

विषय सूची

भूमिका

"घर का वैद्य" नामक पुस्तक के प्रथम भाग के पश्चात् यह द्वितीय भाग पाठकों की सेवा में उपस्थित किया जा रहा है। मैं अपने परिश्रम में कहां तक सफल हो पाया हूँ, इसका निर्णय तो पाठकों पर ही छोड़ता हूं क्योंकि इसकी विशिष्टताओं को तो इसे पढ़ने के पश्चात् तदनुसार प्रयोग करने से ही समझा व जाना जा सकता है।

देश में प्रचलित अनेक प्रकार की चिकित्सा पद्धतियों में से आयुर्वेदिक पद्धति ही आर्यावर्त देश के मनुष्यों के लिये सर्वोत्तम सिद्ध हुई है। पुनरपि कुछेक लोग आक्षेप करते हैं कि आयुर्वेदिक औषधियां कुछ काम नहीं करतीं, कोई-कोई तो व्यर्थ भूसामात्र ही होती हैं. इस चिकित्सा पद्धति में तो रोगी भाग्य से ही ठीक होता है। वास्तव में रोग का उपचार तो ऐलोपैथिक चिकित्सा से ही होता है, इत्यादि।

इस प्रकार सचमुच सामान्य वैद्यों के सम्मुख एक विचारणीय समस्या उपस्थित हो जाती है। कतिपय चिकित्सक भी कह देते हैं कि काष्ठौषधियां काम नहीं करतीं, किन्तु रस, भस्म आदि मूल्य-वान् औषध ही लाभ करते हैं। दूसरी ओर मंहगाई के इस युग में इनका बनाना बहुत व्ययसाध्य है और रोगी भी आयुर्वेदीय औषध के नाम पर खर्च नहीं करना चाहता। वह डाक्टरों को पैसा देना जानता है वैद्यों को नहीं। फलतः दोष रोगियों को ही प्रमुख लगता है।

इधर हमारे ग्रामीण चिकित्सक यह दावा करते हैं कि हमारी काष्ठौषधियां वह कार्य करती हैं जो कार्य अच्छी से अच्छी विलायती और ऐलोपैथिक औषधियां नहीं कर सकतीं। जैसे मधु-

मेह, सर्पविष, बिच्छूविष, विषमज्वर, दन्तरोग, प्रसव विलम्ब, गुल्म आदि पर हमारे पास वे वनस्पतियां हैं जिन के सामने अन्य पद्धति की औषधियां नगण्य हैं।

किन्तु उन्हें बहुत क्रम से, सम्मान पूर्वक, ठीक विधि और कालानुसार प्रयोग में लाना चाहिए अन्यथा वे वैसी दीखने पर काम न करेंगी और व्यर्थ ही अपना दोष वैद्यों के सिर म[illegible] जायेगा। इसलिए औषध निर्माण और प्रयोग में बनाने की विधि[illegible] विधियों, ताजगी, काल, तिथि आदि का विशेष ध्यान रख[illegible] चाहिये। जीर्ण, पुरानी, प्रभावशून्य औषधों का प्रयोग बन्द क[illegible] देना चाहिये, चाहे वे फेंकनी ही क्यों न पड़ें। अपने अल्प आर्थिक स्वार्थ के स्थान पर आयुर्वेद की प्रतिष्ठा और रोगियों की रोगमुक्ति का ही ध्यान विशेष रखना चाहिये। क्योंकि बिना त्याग और पुरुषार्थ के आयुर्वेद का मुख उज्जवल करना कठिन ही है।

कुछ आवश्यक निर्देश

आयुर्वेदीय चिकित्सा करने में एक कठिनाई यह पड़ती है कि रोगी विचारता है कि रोग तत्काल चला जाये। "हरड़ खाई और दस्त हुवा" वह इस प्रकार की चिकित्सा चाहता है। साथ ही परहेज, अनुपान आदि को व्यर्थ का झंझट (वबाल) समझता है। किन्तु वैद्यों के क्रम में ये दोनों बातें एकदम नहीं हो सकतीं। यहां यह कदापि सम्भव नहीं है कि एक रोग को शीघ्र दबाकर दूसरा रोग उत्पन्न होने देवें। सफल चिकित्सक सदा यही चाहता है कि वर्तमान रोग समूल नष्ट होजाये और साथ ही अन्य रोग भी उत्पन्न न होने पावें। बहुत से रोगी आयुर्वेदिक चिकित्सा की निन्दा करके उल्टी धौंस जमाते हैं। किन्तु वे नहीं जानते कि अन्य पद्धति से चिकित्सा करके अपना पैसा देकर दो हानियां करते हैं। एक तो पैसा खर्च किया, दूसरे एक रोग को

दबाकर दूसरा नया रोग मोल ले लिया, किन्तु वे इन बातों की तनिक भी चिन्ता नहीं करते, क्योंकि उन्हें तत्काल लाभ जो हुआ है। ऐसे स्थानों पर रोगी भागकर जाते हैं। यदि तत्काल लाभ के कारण उन्हें अर्थ व्यय भी करना पड़े, तो वे प्रसन्नता से अपना बटुवा खोल देते हैं। वे कहते हैं आगे जो होगा, फिर देखा जायेगा, इसी प्रकार पुनः ठीक हो जायेंगे। कहां तक लिखें, कुयें में भांग पड़ी है।

विभिन्न फार्मेसियों की दवाइयां कैसी बन रही हैं, इसका उत्तर देना कठिन है। किसी ने औषध प्रसिद्ध हो जाने पर उसमें से बहुमूल्य द्रव्य हटा दिये। कोई-कोई मंहगी असली दवा के स्थान पर सस्ती से सस्ती मिलने वाली दवा डालकर ऊंचा लेबिल लगाकर वेचते हैं। कोई-कोई एकमात्र बातों विज्ञापनों और प्रचारकों के बल पर अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं। इन बातों को देखकर बड़ा ही दुःख होता है। रोगी के लिये किसी के यहां की औषध लिख देना भी प्रायः मुश्किल ही हो गया है क्योंकि अधिकतर फार्मेसियां विशुद्ध विधि से औषध तैयार नहीं करतीं। वे सोचते हैं कि एक बार दवा ले जाये पुनः न आयेगा तो कोई चिन्ता नहीं उसका दूसरा भाई आयेगा। यह स्वार्थसिद्धि का क्रम अच्छे औषध निर्माताओं और प्रामाणिक चिकित्सकों को भी बदनाम किये हुये है। चालाकों के लम्बे गुटों के बीच ये गिने चुने ईमानदार सज्जन खद्योतवत् यत्र तत्र देखने में आते हैं।

आयुर्वेदीय चिकित्सक और आयुर्वेद पर श्रद्धा रखनेवाले रोगियों को चाहिए कि औषधों की उत्तमता और प्रामाणिकता के साथ-साथ संयम पर ध्यान रक्खे बिना लाभ नहीं हो सकता। चिकित्सा में आवश्यक संयम दो प्रकार का होता है। पहला

ब्रह्मचर्य सम्बन्धी अर्थात् चिकित्सा काल में और उसके पश्चात् जब तक पुनः पूरी शक्ति का सञ्चय न हो जाये तब तक ब्रह्मचारी रहें और आगे जीवन पर्यन्त सम्भल कर रहे। अर्थात् सिनेमा उपन्यास प्रभृति कामोद्दीपक प्रसंगों से बचना चाहिये। दूसरा जिह्वा सम्बन्धी संयम—इसमें चटोरापन, बेढंग से बनी हुई मिठाई आदि का प्रयोग वर्जित है अर्थात् चिकित्सा काल में और उसके पीछे कुछ काल तक वैद्य द्वारा निर्धारित पथ्याहार पर रहना चाहिये। योग्य शाक, भाजी, दूध और फलों पर निर्भर रहना। मानसिक श्रम अत्यल्प कर देना तथा चिन्ता भार से मुक्त होकर प्रातः सायं हरी घास पर नंगे पैर घूमना और ऋतु के अनुसार वायु सेवन करना आदि। इन पर ध्यान रखने से रोगी सदा के लिये स्वस्थ रहेगा अन्यथा अच्छी से अच्छी चिकित्सा करने पर भी वैसी ही अवस्था बनी रहेगी, जैसी पहले थी और अब भी है। आयुर्वेदीय चिकित्सा क्रम में इसका पूरा ध्यान रखना चाहिये अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी।

चिकित्सा में जल्दबाजी करना ठीक नहीं। रोगी का रोग निर्णय व्यवस्थित रीति से करना चाहिये। रोग के कारणों को समझना चाहिये। और रोगी से आवश्यक प्रश्नों जैसे-कब्ज तो नहीं रहता ? आंखें जलती हैं ? हडफूटन रहती है ? हाथ पैर के तलवों में ज़लन है ? कमर या सिर में दर्द तो नहीं रहता, आदि का पूरा उत्तर अवश्य लीजिये। किस समय कैसी औषधी लेनी है यह स्पष्ट समझा दीजिये। यह भी कभी न भूलिये कि इसका अनुपान क्या है ?

इस पुस्तक में एक आध योग को छोड़कर सरल और सस्ते योग दिये गये हैं, जिनसे साधारण मनुष्य भी लाभ उठा सकें।

प्रस्तुत पुस्तक में अत्यन्त परिश्रम करके अपने निजी अनुभव और प्रसिद्ध वैद्यों के अनुभूत प्रयोगों के आधार पर योग लिखे हैं साथ ही अन्य ग्रन्थों की भी सहायता लेनी पड़ी है उनका भी आभारी हूँ। इसी प्रकार हम आयुर्वेद के उन प्राचीन विद्वान् लेखकों का भी सविनय आभार प्रदर्शन कर रहे हैं, जिनसे किसी भी रूप में सहायता ली है। साथ ही अपने स्नेही मित्रों को भी भूल जाना अकृतज्ञता होगी जिन में विशेषकर वैद्य बलराम जी का नाम उल्लेखनीय है। वैद्य जी ने अपने कई अनुभूत योग भी इसमें लिखे हैं।

आशा है जिज्ञासु रुग्ण महानुभाव इसके अनुसार प्रयोग करके अपना तथा आर्यों का कल्याण कर सकेंगे जिससे जनता में स्वास्थ्य लाभ हो सके।

विनीत
बलवन्तसिंह वैद्य

लेखक का संक्षिप्त परिचय
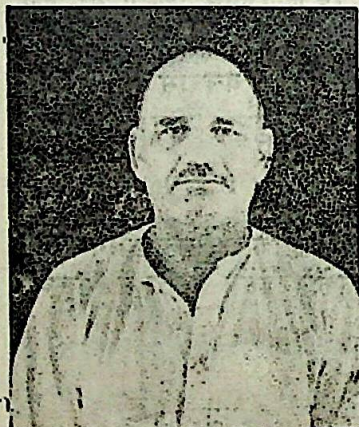
श्री वैद्य बलवन्तसिंह आर्य

१. ग्राम वलियाना (रोहतक) में श्री चौ० रामदास जी के यहां भाद्रपद कृष्णा चतुर्दशी सम्वत् १९७० वि. को जन्म हुआ।

२. २१ वर्ष की आयु से श्री पं० बसन्तराम जी वैद्य आर्योपदेशक से आयुर्वेद का क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त किया।

३. औषधियों तथा आर्य सिद्धान्तों द्वारा समाज सेवा तथा कुश्ती लड़ना जीवन में रुचिकारक कार्य रहे।

४. सन् १९५७ ई० में पञ्जाब के हिन्दी आन्दोलन में ४ मास कारावास में रहे।

५. सन् १९६६ ई० में गोरक्षा आन्दोलन में डेढ मास कारावास में रहे।

६. आजकल "विद्यार्य सभा गुरुकुल झज्जर" के प्रधान तथा गुरुकुल में मुख्य वैद्य के रूप में निःशुल्क सेवा कर रहे हैं।

घर का वैद्य

[द्वितीय भाग]

छर्दि-रोग (वमन)

कारण—अति तरल, चिकने पदार्थों के सेवन से. तथा अरुचिकर, असमय और अधिक मात्रा में खाने से, जो भोजन नित्य किया जाता है, उसके परिवर्तन से अथवा अजीर्णता से, घृणास्पद द्रव्यों के देखने से सुनने से वमन रोग हो जाता है। स्त्रियों को गर्भस्थिति में भी यह रोग प्रायः हुआ करता है।

सामान्य निदान

खाया हुवा भोजन एवं तरल पदार्थ मुख के द्वारा बाहर निकल जाता है. इसी को वमन (कय-कै) रोग कहते हैं।

असाध्य लक्षरण

वमन रोग के साथ खांसी हो जावे, कय अधिक मात्रा में बार-बार आती हो, जिसके कारण रोगी बेचैन हो जावे, श्वास, हिक्का, ज्वरादि का उपद्रव हो, तृषा सतावे, वमन के साथ रक्त पीप आवे। कै में मल मूत्र जैसी दुर्गन्धि हो और वमन का रंग मयूर (मोर) पंख जैसा नीला हो, वह वमन रोगी असाध्य जानना चाहिये। बुद्धिमान् वैद्य उस का उपचार कभी न करें।

चिकित्सा

छर्दिहर योग—१

मयूर पंख की भस्म—मक्की के भुट्टे (दाना रहित) की भस्म
बड़ी इलायची दाना——नारियल की जटा की भस्म
असली बंशलोचन —नींबू के छिलके की भस्म
प्रत्येक एक-एक तोला, पीपरमेन्ट ६ माशे; मिश्री ८ तोला ।

इन सब को कूट पीस कर कपड़छान करके शीशी में सुरक्षित रखें।

मात्रा—२ माशे मधु से चटायें।

गुण—किसी प्रकार की वमन (कै) हो, थोड़ा २ चटाते रहें। प्रथम मात्रा में लाभ दिखाती है, जादू के समान कार्य करती है। आवश्यकता होने पर दूसरी तथा तीसरी मात्रा भी दी जा सकती है। पित्तज्वर की तृषा भी इस से शान्त हो जाती है।

छर्दिहर योग—२

राई को कूटकर बारीक करलें, फिर पानी में पीस कर बारीक करलें, और आमाशय (कलेजे) पर लेप करदें।

प्रभाव—जो वमन किसी प्रकार बन्द न होती हो, हठीली, और भयंकर वमन भी बन्द हो जाती है। औषधि पीने के पश्चात् एकदम मुख से बाहर आजाती हो, कोई प्रभाव न होता हो, राई का लेप करके पुनः औषधि पिलाओ, औषधि की वमन नहीं होगी, और अपना प्रभाव करेगी।

सावधानी—इस में एक बात जानने योग्य है, राई का लेप पांच छः मिनट तक ही रखना चाहिये, जब अधिक जलन होने लगे तब गीले कपड़े से पोंछ कर उतार देनी चाहिए, क्योंकि यह उपाड़ लाती है। उतारने के पश्चात् घृत मल देना चाहिए। यह योग शत प्रतिशत सफल है। राई का लेप करने से पहले भी घृत लगाना चाहिए। हैजा आदि रोगों में जब वमन बन्द न होती हो, उस समय भी इसका प्रयोग होना चाहिए।

छर्दिहर योग—३

आक की जड़ का छिलका उतार लें, जितनी छाल हो उतना ही अदरक का स्वरस मिला कर खरल में डाल कर घुटाई करें।

इसकी एक-एक रत्ती की गोली बनायें, शुष्क हो जाने पर वमन के रोगी को शहद से चटावें। इस से सब प्रकार का वमन बन्द हो जाता है।

अनुपान व गुण—पेचिस में जल से, हैजा में अर्क पोदीना से, शुष्ककास में खांड मलाई से, कफ कास में शहद से, वात रोग में गो-घृत से प्रयोग करें।

छर्दिहर योग–४

आक की जड की छाल—५ तोले, रस सिन्दूर—५ तोले, कौड़ी भस्म—५ तोले

विधि—इन को पृथक्-पृथक् बारीक पीस कर एकत्र मिला कर स्त्री के दूध में घोट कर आधो-आधी रत्ती की गोलियां वनालें। यदि स्त्री का दूध प्राप्त न हो, तो गौ के दूध से गोलियां वनालें।

इन गोलियों को अर्क सोंफ अथवा नारियल जल आदि किसी अनुपान से प्रयोग करें। इससे तत्काल लाभ होगा।

वमननाशक योग--५

उत्तम रससिन्दूर-१ तोला, सत्व नींबू-६ माशे, इन दोनों को बारीक पीस कर रखलें।

मात्रा—एक से दो रत्ती तक, दिन में तीन बार शर्बत अनार आदि से प्रयोग करें।

वमननाशक योग–६

दो तोन बड़े पतासे पीस छः माशे गो-घृत मिला कर गरम करें, जब पतासे घी में मिल जावें तो उतार कर थोड़ा-थोड़ा गरम रहने पर ही चटा देवें, स्मरण रहे वमन के रोगी को भूल कर भी जल न देवें। इस के आध घण्टे बाद निम्नलिखित औषधि देवें।

किसी मिट्टी के पात्र में आध सेर नींबू का रस डाल कर एक सेर खांड डाल कर अग्नि पर पकावें। जब अवलेह जैसा गाढ़ा हो जावे, तो आध सेर छोटी इलायची का चूर्ण बारीक पीसकर मिलादें। इस में से वमन के रोगी को थोड़ा २ कई बार चटावें। तृषा अधिक हो, तो सन्तरे आदि का रस, अनार का रस पिलावें, किशमिश चुसावें। अन्न. जल बन्द रखें। जब वमन बन्द हो जावे. तब वड़ी इलायची जल में उबाल छान कर उस जल को पिलावें अथवा पोदीने आदि का अर्क देवें। छः सात घण्टे बाद अंगूर, सेव खाने के लिए दे सकते हैं।

गुण—यह योग सब प्रकार के वमन रोग में उत्तम है। बतासे के अभाव में खांड या मिश्री का प्रयोग भी किया जा सकता है।

छर्दिहर योग–७

सरसों के तैल का पुराणा दीपक (दीया) तोड़ कर टुकड़े-२ करके अग्नि में डाल दें। जब टुकड़े लाल रगं के हो जावें, तो एक पाव जल में एक तोला देशी अजवायन मिला कर रख लें, फिर दीपक के लाल तप्त हुऐ टुकड़े उस में डाल देवें, और ऊपर से ढ़क्कन ढ़क देवें, ताकि उसकी वाष्प बाहर न निकल सके। इस को छानकर पिलावें। एक बार में लाभ हो जाता है, अन्यथा एक-२ घण्टे पश्चात् दो तीन बार पिलादें। यह वैद्य दयानन्द जी निडाना का अनुभूत है।

छर्दिहर योग--८

दरियाई नारियल-१ तोला, जहर मोहर खताई-१ तोला, बंशलोचन-१ तोला

विधि—सब को बारीक पीस कर रूह गुलाब ३ तोला डाल कर खरल करें, फिर रूह केवड़ा ३ तोला में खरल करके सुखा लें।

मात्रा—एक से दो रत्ती तक किसी अर्क के साथ प्रयोग करें। एक दो बार के सेवन से ही लाभ हो जाता है।

वमनकुठार रस—९

शुद्ध शिंगरफ—५ तोला, टाटरी—१० तोला, सत पोदीना—३ माशे।

विधि—इन सब को पूर्णिमा की रात्री में घोटें। पश्चात् शीशी में भरकर कार्क लगादें। तीन रत्ती तक समय और रोग के अनुसार न्यूनाधिक देवें। अनार शर्बत, नींबू अथवा गाजुवां के शर्बत के साथ प्रयोग करें।

गुण—विशूचिका (हैजा) वमन, घबराहट, मतली पर उत्तम है। ज्वर की तीव्रता में वमन होता हो और जल तक न पचता हो, उस समय यह अच्छा लाभ करता है यह बहुत वार का परीक्षित है।

छर्दिहर योग—१०

कपूरकचरी—२ तोला, मयूरचन्द्रिका भस्म—१ तोला, जहर मोहरा पिष्टी—१ तोला।

विधि—इन सब को पीस कर अर्क गुलाब में खरल करके रख लें, अथवा गोलियां बना लें। छायाशुष्क करके शीशी में रख लें। एक माशा अर्क पोदीना से प्रयोग करें।

गुण—सब प्रकार की वमन बन्द करने में लाभदायक है। पित्त की वमन के लिए विशेष है। यदि कपूरकचरी को ही अर्क गुलाब में खरल करके गोली बनालें, और चार रत्ती प्रमाण में सेवन करें, तो भी लाभ हो जाता है।

छर्दिहर योग—११

पीपल वृक्ष की भीतरी छाल १ पाव छाया शुष्क करलें, सुखा कर आग में जला देवें। साथ ही एक सेर जल लेकर एक तोला

ताजा छाल पीपल (अश्वत्थ) को लेकर जल में घोल दें, और छाल के अंगारों को भी इस जल में डाल देवें और पात्र को ढ़क कर रख दें। दो तीन घण्टे पश्चात् स्वच्छ सुनहरी रंग को देखने में सुन्दर प्रतीत हो, निथार कर छानकर शीशी में भरलें। ध्यान रहे निथारते समय पानी के साथ राख न आने पावे। यह लाल रंग का जल वमन रोगी के लिए अमृत तुल्य है।

सेवनविधि—बालक, वृद्ध, स्त्री, पुरुष तथा गर्भवती स्त्री के जब वमन (कै) होती हो और किसी भी दवा से बन्द न होती हो, इसके सेवन से तुरन्त बन्द हो जाती है। जब ग्रीष्म ऋतु में बालकों को वमन का रोग हो जाता है। उस समय एक-एक चम्मच प्रत्येक दो घण्टे पर देते रहें। पहले ही दिन वमन बन्द हो जावेगी। बड़े आदमी को एक से दो तोले तक प्रत्येक दो घण्टे के बाद देवें। यदि इस के साथ राई का लेप भी कर दिया जावे, तो वमन शीघ्र बन्द हो जावेगी। यह योग मैंने अनेक बार रोगियों पर अनुभूत किया है। कई ऐसे रोगियों पर भी अनुभव किया, जिन का भोजन करने के बाद वमन हो जाती थी। अन्य औषधियों के साथ प्रयोग किया, तो कुछ दिनों में लाभ हो गया। इस के अतिरिक्त हैजे की तृषा, और अतिसार पर अत्यन्त प्रभावशाली प्रतीत हुआ है। पित्तज्वर में देने से उपद्रव सहित ज्वर दूर हो जाता है। हृदय की दुर्बलता पर १०-१० तोला दो-दो घण्टे पर प्रयोग करने से कैसी ही बेचैनी हो शक्ति आजाती है। यह छोटी सी औषधि बड़ी २ शक्तिप्रद औषधियों का कार्य करती है। हृदय अवसाद को उसी समय रोक देती है। इस से किसी प्रकार की हानि होने की भी सम्भावना नहीं है।

छर्दिहर योग-१२

एक गोली एफेड्रीन, मीठा सोडा-४ रत्ती मिला कर प्रयोग करें। उसी समय वमन बन्द हो जायेगी।

तृष्णा रोग

निदान—क्रोध, परिश्रम, चिन्ता, शोक, सुरापान धातुओं के क्षय होने से, आग के समीप अधिक देर बैठने से, भय से, किसी शस्त्र आदि के प्रहार अथवा चोट लगने से, शुष्कान्न के प्रयोग से, उष्ण और खट्टे पदार्थों से, सूर्य ताप में अधिक भ्रमण करने से, अजीर्ण तथा उपवास से मनुष्य को तृष्णा रोग हो जाता है।

सामान्य लक्षण

मनुष्य बार बार जल पीता है, परन्तु तृषा (प्यास) न्यून नहीं होती, और जल पीने की इच्छा ही रहती है। आयुर्वेद में इसी को तृष्णा रोग की संज्ञा दी है। यह रोग सात प्रकार का होता है।

असाध्य लक्षण

श्वास का कष्ट से आना, कास (खांसी), कमजोरी, ज्वर, जिह्वा का बाहर निकल जाना, मूर्च्छा, कानों से न सुनना इत्यादि उपद्रव हों, तो तृषारोगी असाध्य होता है अथवा कष्टसाध्य होता है।

सामान्य चिकित्सा

१ ज्ञातव्य—तृष्णा के रोगी को क्षयज तृष्णा, जो धातुओं के नाश होने से होती है इसके अतिरिक्त सब प्रकार की तृषा में अधिक जल पीने से पेट फूल कर कुप्पा सा हो गया हो, तो उस अवस्था में १ तोला पीपल लेकर जोकुट करके छः छटांक पानी में पकाकर दो छटांक शेष रहने पर छानकर रोगी को पिलायें तो इससे तृषा बन्द हो जाती है और पेट भी ठीक हो जाता है। शीतल जल में शहद मिला कर पिलावें। इसके सेवन से वमन होकर तृषा बन्द हो जाती है।

योग—२

यदि गर्मी से प्यास हो तो वस्त्र को जल में भिगो कर निचोड़, रोगी को वस्त्र में लपेट दो तृषा शान्त हो जाएगी।

योग—३

इमली का गूंद—२० तोला, काला नमक-५ तोले, सैंधा नमक-५ तोले, धनियां-५ तोले, भुना जीरा-५ तोले, सौंफ-५ तोले, छोटी इलायची-१ तोला, खांड-१॥ सेर।

विधि—सब को बारीक पीस कर ५ सेर जल में मिलाकर रख लें।

मात्रा—एक-एक पाव दिन में कई बार देवें।

गुण—इससे पित्तज्वर, तृषा, दिल की घबराहट, बेचैनी, वमन हैजे के लिए उत्तम है।

योग—४

खस की जड़ छः माशे, मुनक्का छः माशे बीजरहित जल के साथ घोंट कर पिलाने से तृषा रोग शान्त हो जाता है।

योग—५

धनियां-२ माशा, पोदिना-६ माशा, सौंफ १ तोला, इलायची-४ रत्ती, गुलकन्द-५ तोला, जल-२ पाव।

सबको बारीक पीस कर जल में मिलालें। इसमें से थोड़ा-२ पिलाते रहें, इससे तृषा शान्त हो जाती है, हैजे की तृषा को भी शान्त करता है।

योग—६

बर्फ चूसने से तृषा शान्त हो जाती है।

योग—७

शाम को धनियां-२ तोला को कूटकर एक मिट्टी के ताजा पात्र में डाल ४० तोले पानी भर दें। प्रातः मथकर छान कर मिश्री मिलाकर पीने से गर्मी की तृषा शान्त हो जाती है।

लोकेश्वर रस-८

रस सिन्दूर-१ तोले को खरल में डाल कर ग्राम के पत्तों के रस में तथा जामुन के पत्तों के रस में घोट कर एक-एक रत्ती की गोलियां वना लो। आवश्यकता पड़ने पर दिन में दो तीन वार एक एक गोली बकरी के दूध से प्रयोग करें इस से सब प्रकार की तृषा शान्त हो जाती है।

योग-९

गोदुग्ध में बराबर का पानी मिला कर मिश्री डाल कर बर्फ से शीतल करके पेट भर पीने से गर्मी की तृषा शान्त हो जाती है।

योग-१०

शस्त्र आदि के लगने से जो तृषा होती है उसके लिए गोदुग्ध में घृत मिलाकर मिश्री डालकर पिलाने से तृषा शान्त होती है।

योग-११

वमन रोग में लिखित पीपल वृक्ष की छाल का जल पिलाने से सव प्रकार की तृषा शान्त हो जाती है, अनुभूत है।

मूर्च्छा भ्रम तन्द्रा संन्यास रोग निदान

वल तथा मांस के क्षीण होकर शरीर कमजोर हो जाने से, वातादि दोष के बढ़ने से, विरुद्ध भोजन करने से, मल मूत्रादि वेग रोकने से, शस्त्र अथवा चोट लगने से, मानसिक शक्ति के नाश होने से मूर्च्छा रोग होता है।

सामान्य लक्षण

ज्ञानवाही नशों में वातादि दोषों के विकार होने से दुख सुख का ज्ञान नहीं होता, और मनुष्य पत्थर लकड़ी की भांति भूमि पर धड़ाम से गिर जाता है। इसी को आयुर्वेद ने मूर्च्छा रोग कहा है आयुर्वेद में मूर्च्छा रोग छः प्रकार का होता है।

मूर्च्छा तथा संन्यास में भेद

मूर्च्छा थोड़ी बहुत देर में दोषों के न्यून हो जाने से स्वयम् दूर हो जाती है, परन्तु संन्यास रोगी तो सर्वथा मुर्दे जैसी अवस्था में ही पड़ा रहता है। आयुर्वेद में प्रायः इसको असाध्य ही माना है। यदि कोई मृत्यु के पंजे से बच जाए तो बिना औषध के इस को ज्ञान नहीं होता।

मूर्च्छा, भ्रम तथा तन्द्रा में भेद

आयुर्वेद ने भ्रम, तन्द्रा एवं मूर्च्छा को भिन्न २ माना है, परन्तु सामान्यत देखने में भेद प्रतीत नहीं होता यदि ध्यान से देखा जाये तो भेद प्रत्यक्ष दिखाई देता है। मूर्च्छा रोग में रोगी नितान्त लकड़ी की भांति पड़ा रहता है, किन्तु भ्रम में बेहोश पड़ा हुआ और तन्द्रा में अर्ध बेहोशी में होता है। इन में अपने समीप को वस्तुओं का ज्ञान बना रहता है अथवा उन वस्तुओं को घूमता हुआ देखता है।

चिकित्सा में ज्ञातव्य

मूर्च्छा होते ही बड़ी २ औषधियों की भरमार न करनी चाहिए किन्तु शीतल जल के छींटे मस्तिष्क एवं नेत्रों पर लगायें। और भ्रम में पुराने घृत की मालिश करनी चाहिए। संन्यास रोग में इन उपचारों से लाभ होने की सम्भावना नहीं है। उसमें तीक्ष्ण अञ्जन का प्रयोग करना चाहिए अथवा किसी प्रकार सूई चुभाने पर दर्द करें इससे उसको चेतना (होश) आजाती है। इसी पुस्तक के प्रथम भाग में तीक्ष्ण अंजन का प्रयोग सन्निपात रोग में लिखा है। यदि किसी मनुष्य को कृमिरोग के कारण मूर्च्छा हुई हो तो प्रथम कृमिरोग की चिकित्सा करनी चाहिये। उससे स्वयं मूर्च्छा रोग दूर हो जायेगा।

तीव्र नस्य देने से भी मूर्च्छा रोग दूर हो जाता है। कब्ज से मूर्च्छा हुई हो तो कब्ज दूर करें। यदि नस्य से मूर्च्छा दूर न हो तो, मैनफल आदि से वमन लानी चाहिये, इससे निश्चित मूर्च्छा रोग दूर होगा। चिकित्सक को एक बात का ध्यान रखना चाहिये कि मूर्च्छा पित्त से होती है। भ्रम रोग वातपित्त की प्रबलता से और तन्द्रा में कफ की उल्वणता होती है। तन्द्रा में आधे नेत्र बन्द रहते हैं और आधे खुले रहते हैं।

चिकित्सा प्रयोग १

मुख पर शीतल जल के छींटे देने से मूर्च्छा दूर हो जाती है।

प्रयोग २

नाक में पलाण्डु (प्याज) का रस डालने से मूर्च्छा दूर होती है तथा हिस्टेरिया अपस्मार (मृगी) आदि किसी प्रकार की मूर्च्छा हो वह भी दूर हो जाती है।

प्रयोग ३

नमक का जल नाक में डालने से मूर्च्छा तथा हिस्टेरिया दूर हो जाता है। यह जादू जैसा कार्य करता है।

प्रयोग ४

कायफल—४ तोला।
अरण्य (जंगली) उपले की राख—४ तोला।
पोटासियम परमेगनेट (लाल दवाई)—३ माशे।

निर्माण विधि—प्रथम सबको अलग-अलग पीस कर रखें, फिर सबको एकत्र मिला पीस लें, शीशी में भर लें। आवश्यकता पड़ने पर थोड़ी सी नस्य नाक से सुंघा दें। बहुत श्रेष्ठ नस्य है।

गुण—उन्माद, अपस्मार और शिरःशूलादि पर उपयोगी है।

प्रयोग ५

चूना बिना बुझा(सफेदी नाम की वस्तु जिससे घरों में पुताई करते हैं)–१ तोला, नौशादर-१ तोला, कपूर देशी-३ माशा।

विधि—इनको भिन्न-भिन्न पीस कर दृढ़ कार्क वाली शीशी में रख दें। अथवा चूना और नौशादर को भिन्न-भिन्न पीस कर शीशी में रख दें। अथवा हाथ की हथेली पर दोनों को घिसकर सुंघा देवें। इसमें चार गुणा जल मिलाकर भी शीशी में रख लें यह सब का योग समान ही है। बन्द नजला, सिर दर्द, जुकाम, मूर्च्छा में सूंघने से लाभ होता है। बिच्छू, भिरड़, ततैया, मक्खी के दंश स्थान पर थोड़ा सा जल मिलाकर लगा देवें उसी समय लाभ हो जायेगा। दन्त पीड़ा, गला बैठ जाने पर मुख के द्वारा भीतर खींचने से लाभ होगा।

प्रयोग ६

(मूर्च्छा पर अंजन)

सैंधा नमक–१ तोला, मैनशिल-१ तोला, काली मिर्च १ तोला।

विधि—इन तीनों को सुर्मा जैसा बारीक पीस कर वस्त्र में से छान कर रख लें और शहद में मिलाकर आंखों में लगावें, उसी समय मूर्च्छा दूर हो जाती है।

सुधानिधि रस–७

रस सिन्दूर-१ तोला, पीपल-१ तोला।

विधि—दोनों को खूब बारीक पीसकर रख लें। दो रत्ती की मात्रा में तीन माशा शहद में मिलाकर चटा देवें। ऊपर से नागौरी असगन्ध।६ माशा, शतावर-६ माशा कूट कर एक पाव दूध तथा एक पाव जल में डालकर पकावें, जब दूध मात्र शेष रहे छानकर

इच्छानुसार खांड मिलाकर अथवा मिश्री मिलाकर पिलादें। इसी भांति प्रातः सायंकाल कुछ दिनों तक देते रहने से अवश्य स्थायी लाभ होगा।

प्रयोग ८

इस रोग में अश्वगन्धारिष्ट अमृत के समान काम करता है। यदि उपरोक्त सातवां प्रयोग प्रातः सायं भोजन से पूर्व तथा भोजन के पश्चात् अश्वगन्धारिष्ट समान जल मिला कर देवें, तो निश्चित लाभ होता है।

प्रयोग ९

काली मिर्च-१ तोला, पीपल-१ तोला, नकछिकनी-१ तोला, रीठे का छिलका-१ तोला, कश्मीरी पत्र-१ तोला।

विधि—इन को बारीक पीस कर शीशी में सुरक्षित रखें। आवश्यकता होने पर एक-एक रत्ती नाक में डालकर नलिका से फूंक मार दें, इससे चार पांच छींक आकर मूर्च्छा दूर हो जायेगी।

प्रयोग १०

मैनफल-६ माशे बारीक पीस कर रख लें। रोगी की शक्ति के अनुसार थोड़ा-थोड़ा दूध में मिला कर रोगी के मुख में डालें और रोगी का नाक बन्द कर देवें, इससे अवश्य वमन हो जावेगी; और मूर्च्छा भी दूर हो जायेगी। कभी-कभी दस्त भी हो जाया करते हैं।

प्रयोग ११

काली मिर्च को घोड़े की लार में पीस कर आंख में आंज देवें, इससे मूर्च्छा दूर हो जायेगी।

कास (खांसी) रोग

कारण—श्वास मार्ग से धुआं, मिट्टी, धूल भीतर चली जावे, अधिक व्यायाम, रूक्ष भोजन नित्य करने से, छींक रोकने से, मल मूत्रादि के वेग रोकने से, दुष्ट हवा प्राणवायु, उदान वायु जो कण्ठ एवं हृदय में रहने वाला है, उसके साथ मिलकर, टूटे हुए कांस्य पात्र के समान शब्द करता हुआ बाहर निकलता है। आयुर्वेद के ज्ञाताओं ने इस को कास रोग की संज्ञा दी है। इस रोग को पांच भागों में विभक्त किया है।

असाध्य लक्षण

क्षतज (घाव, चोट आदि से), क्षयज (वीर्यादि धातुओं के नाश से) यह दोनों प्रकार की खांसो कमजोर तथा बृद्ध मनष्यों के होने पर अच्छी नहीं होती। परन्तु चिकित्सा के चारों पाद हों, (वैद्य, औषध, रोगी, शुश्रूषा करने वाला) और रोग नवीन हो, तो खांसी प्रायः अच्छी जाती है। वृद्ध की खांसी तो याप्य होती है, अर्थात् जब तक चिकित्सा रहे, तब तक लाभ रहता है, चिकित्सा बन्द करने पर फिर खांसी हो जाती है।

खाँसो की जानकारी

जो मनुष्य खांसी को छोटा सा रोग समझकर प्रमाद करते हैं, वह भूल करते हैं, क्योंकि आयुर्वेद ने 'कासात्संजायते क्षयः' कहा है, अर्थात् इससे राजयक्ष्मा (तपेदिक) हो जाता है। कहावत भी है, "लड़ाई की जड़ हांसी, रोग की जड़ खांसी" अतः खासी को छोटा सा रोग जानकर प्रमाद न करना चाहिये। खांसी से ज्वर, मन्दाग्नि, अरुचि, वमन (मतली), स्वरभेद आदि रोग हो जाते हैं। इसकी चिकित्सा में शीघ्रता करनी चाहिये।

चिकित्सा पहला योग

गुड़ ६ माशे को अर्क (आक) के एक हरे पत्ते पर लगा कर दोनों को घोट कर रख लें। यह एक दिन की औषधि है। इस को प्रातः अथवा दोनों समय सेवन करें। तीन चार दिन के सेवन करने से कफ सरलता से बाहर निकल जाता है। और खांसी में लाभ हो जायेगा।

योग दूसरा

आक के पत्ते पर रेत जैसा पदार्थ लगा हुआ होता है, उसको चाकू से उतार कर बाजरे के समान गोली बनालें। एक पान के पत्ते में जिस में कत्था, चूना लगा हो, उस के बीच में लगा कर खालें।

गुण—इस से पुरानी से पुरानी खांसी भी चली जाती है। तीन चार दिन के सेवन से ही लाभ हो जाता है। यह औषधि श्वास रोग में भी लाभ कर देती है। प्रातः सायंकाल सेवन करें।

योग तीसरा

धतूरे के हरे पत्ते–५ तोले, आक के पीले पत्ते–५ तोले
अड़ूसा (वासा) के हरे पत्ते–५ तोले, गुड़ पुराना–१५ तोले,

विधि—पत्तों को खूब बारीक पीस कर गुड़ मिला कर घोट कर भली भाति मिला लें। चने प्रमाण गोली बनाकर रख लें। शहद के साथ प्रातः सायं एक-एक गोली सेवन करावें। इस से खाँसी में अवश्य लाभ पहुँचेगा और श्वास में भी लाभ करेगा।

योग चौथा

शगरतिगाल– ६ माशे, निशास्ता गेहूं का—६ माशे,
गोंद कतीरा—६ माशे, पोस्तदाना—९ माशे,
मुलहटी—९ माशे, बिहीदाना—९ माशे,
बादाम की गिरी—१॥ तोला

विधि—बिहीदाने के लुम्राब में रगड़ कर गोलियां बनावें। एक गोली मुंह में रख कर चूसते रहें। इस प्रकार दिन रात में ५-६ गोली चूस लें। गोली चने प्रमाण बनावें। लाभ अवश्य होगा। यह गर्म खुश्क खांसी में प्रयोग करें।

योग पांचवां

सितोपलादि चूर्ण—५ तोले, सत गिलोय—१ तोला
सत मुलहटी—१ तोला

विधि—सब को एकत्र मिलाकर रखलें। अनुपान भेद से प्रयोग करें। पित्त प्रकृति वाले को शर्बत बनफशा से, वात प्रकृति वाले को शहद से, शुष्क खांसी में दूध की मलाई से प्रयोग करें। एक-एक माशा करके दिन में तीन बार देवें। निश्चित लाभ होगा। यह खांसी तथा जीर्ण ज्वर में अनुभूत है।

योग छठा

अमृतधारा विशूचिका प्रकरण में (प्रथम भाग) में लिखी है उसको रूई के फोये में लगाकर भीतर वाष्प रूप में खींचें। दिन में कई बार ऐसा करें। यह शुष्क कास तथा घसक में जादू का काम करेगी। प्रथम बार में ही लाभ अनुभव होगा।

कासहर क्वाथ सातवां

गावजुवां…नीलोफर…उन्नाब, लिसौडा–मुनक्का–पोस्तदाना
गिरी बादाम…सौंफ…मुलहटी
बिलायती अंजीर…खतमी…खुब्बाजी
बीदाना…सौंठ…गुलबनफशा

प्रत्येक को छः छः माशे लेकर तीन पाव जल में क्वाथ करें। तीन छटांक शेष रहने पर छानकर, तीन तोले शहद मिला कर निर्वात स्थान में रख दें। प्रति छः घण्टे पर पिलावें।

गुण—पहली बार में रोग शान्त हो जायेगा। दो तीन दिन के प्रयोग से रोग दूर हो जायेगा। यह क्वाथ छाती के प्रत्येक रोग पर अनुभूत है। निमोनियां, श्वास-कास प्रतिश्याय कितना ही बिगड़ा हुआ हो ज्वर तथा कण्ठ रोग पर पूर्ण अनुभूत है।

योग आठवां

सत मुलहठी—५ तोला	गोंद कीकर—२ तोला
खाँड—२ तोला	कत्था—१॥ तोला
मुलहटी—१ तोला	पीपरमेंट—१॥ माशा
दाना छोटी इलायची—१ तोला	सौंफ—१ तोला
शगर तिगाल—१॥ माशा	लौंग—१ तोला
छिलका बहेड़ा—१ तोला	काली मिर्च—६ माशे
शीतल चीनी—६ माशे	जायफल—३ माशे

विधि—इनमें से सूखी औषधियों को कूटकर कपड़छान करलें पीपरमेंट से अलग जितनी औषधि हैं उनको जल के द्वारा खरल करके तथा पीपरमेंट को पीसकर पुनः सबको एकत्र मिलाकर एक-एक रत्ती की गोलियां बनालें। दिन में तीन बार चूसने को देवें। खांसी में शीघ्र लाभ होगा।

प्रयोग नोवाँ

खांसी में छाती से रक्त आने पर

नारियल के ऊपर जटा उतार कर तवे पर डालकर इसकी भस्म बनालें। फिर पीसकर कपड़छान करके रखलें। मात्रा ४ रत्ती।

अनुपान—वासावलेह, वासा शर्बत, वासार्क अथवा बांसापत्रस्वरस, १ तोला, शहद ६ माशे, खांड १ तोला तीनों को मिलाकर इसके साथ औषधि देने से अच्छा कार्य करेगी। खांसी में रक्त आना,

राजयक्ष्मा की खांसी एवं रक्तपित्त में तथा खांसी में कफ के साथ रक्त आने पर अनुभूत है। इसका प्रातः सायं प्रयोग करें। अधिक रक्त आने पर मध्याह्न में भी सेवन करा सकते हैं। भोजन पथ्य से देवें। सुपाच्य चावल, गेहूं, मूंग जौ इत्यादि देवें।

योग–१०

एक-एक तोला खांड की चार पुड़िया बनाकर छः-छः घण्टे पर सेवन करें, परन्तु जल पुड़िया लेने के एक घण्टे पश्चात् तक न देवें। शीघ्र लाभ होगा। यह सूखी खांसी पर अनुभूत है।

योग–११

बांसाक्षार–१ तोला, कालानमक–१ तोला

विधि – दोनों को पीस कर रख लें। एक माशा प्रमाण शहद अदरक स्वरस अथवा जल के साथ प्रयोग करें। बच्चों को आयु के अनुसार देवें। सब प्रकार की खांसी में लाभ होगा।

बांसा–घृत–१२

बांसा (अड़ूसा) पंचांग को दो सेर लेकर १६ सेर जल में क्वाथ करें, चार सेर क्वाथ शेष रहने पर छानकर कढ़ाही में डालें। फिर उस में गो-घृत १ सेर, बांसा पुष्प २० तोला तथा बांसामूलत्वक २० तोला, इन सब को मिला कर मन्दाग्नि से पाक करें। घृत मात्र शेष रहने पर छान कर रख लें। छः माशे से एक तोला तक गो-दुग्ध अथवा बकरी के दूध के साथ मिश्री मिला कर दोनों समय सेवन करें।

गुण - यह आयुर्वेद का प्रसिद्ध योग है, यदि कास का रोगी अस्थिमात्र रह गया हो, वह भी अच्छा हो जाता है। राजयक्ष्मा, श्वास रोग सब अच्छे हो जाते हैं। अनुभूत है।

बांसावलेह—१३

बांसा के पत्तों को कूटकर एक गोला बनाकर ऊपर अरण्ड पत्र लपेट कर उसके ऊपर गेहूँ का गूंदा हुआ आटा लपेट देवें। पश्चात् इस गोले को मूबल (चूल्हे की गर्म राख) में दबा दें। जब चून पक जावे, तो गोले को निकाल कर चून तथा अरण्ड पत्तों को हटा कर कुटे हुए बांसा पत्रों का रस निचोड़ लेवें। अथवा अन्य किसी प्रकार से (मशीनादि से) बांसा पत्रों का स्वरस निकाल लें। इस प्रकार निकला हुआ बांसा पत्र स्वरस—६४ तोला खांड—३२ तोला, पीपल (मघा)—८ तोला, गोघृत—८ तोला सब को मिलाकर कलईदार पात्र में मन्दाग्नि से पकावें। जब गाढ़ा हो जाने उतार कर उस में शहद—३२ तोले मिला कर रख लें। इस में से दोनों समय तीन माशा से छः माशा पर्यन्त गोदुग्ध अथवा बकरी के दूध के साथ प्रयोग करें।

गुण—राजयक्ष्मा, प्रतिशाय, खांसी, अजीर्ण छाती दर्द आदि में लाभ करता है। यदि इस में सितोपलादि चूर्ण—१६ तोला और मिला दिया जावे, बहुत उत्तम कार्य करेगा। यह उपरोक्त कार्यों के अतिरिक्त पायोरिया, मुख से रक्त आना, रक्तातिसार, रक्तप्रदर आदि रोगों को दूर करता है।

योग—१४

धतूरे के फूल—२ तोले, लौंग—२ तोला

दोनों को बारीक पीस कर अदरक के स्वरस में खरल करके मटर समान गोली बनालें। एक-एक गोली प्राय: सायंकाल सेवन करें। शीतल जल तथा चावल का सेवन न करें।

योग—१५

बकायन के फलों को जलाकर कोयला कर लें। फिर पीस

कर तीन रत्ती की मात्रा में शहद के साथ प्रयोग करें। कफ की खांसी के लिए उत्तम योग है। कफ को निकाल कर कण्ठ को शुद्ध कर देता है।

योग—१६

कद्दू के बीज—१ तोला
गिरी बादाम—१ तोला
पोस्त दाना—१ तोला
गोंद कतीरा—१ तोला
निशास्ता गेहूं—१ तोला
गोंद बबूल—१ तोला
बिहीदाना—१ तोला
सत्व मुलहटी—१ तोला

विधि—इन को बारीक पीस कर थोड़ा सा बिहीदाने का लुआब डालकर चने प्रमाण गोली बनालें और छाया में शुष्क करके शीशी में बन्द करलें। यह सूखी खांसी के लिए परीक्षित है। रात को सोते समय एक गोली मुख में डाल कर रस चूसते रहें। यदि खांसी अधिक हो तो दिन में दो तीन बार सेवन करें। सूखी खांसी किसी प्रकार की हो, निश्चित लाभ हो जाता है। अनेकों बार की अनुभूत है।

योग—१७

मारवाड़ (अजमेर) के फार्माकोपिया-सरकारी में खांसी की गोलियों का योग—

अपीकाक पाउडर—६ ग्राम
देशी कपूर—२ ग्राम
अफीम—१ ग्राम

विधि इन सब को गोंद के जल में (गोंद को थोड़े से जल में घोल लें) पीस कर एक-एक रत्ती की गोलियां बनालें। एक गोली एक दिन की मात्रा है। इससे खांसी में शीघ्र लाभ होता है।

योग—१८ कासश्वासघ्न

बांसा पंचांग–१ पाव छोटी कंटकारी–१ पाव
मुलहटी–१० तोले अदरक का स्वरस–५ तोले

निर्माण विधि—तीनों औषधियों को जवकुट करके ३॥ सेर जल में क्वाथ करें। क्वाथ से पूर्व शाम को मिट्टी के पात्र में भिगो कर रखें। पश्चात् क्वाथ करें। जब एक पाव क्वाथ शेष रहे, छान लेवें। और इस छने हुए जल में तीन पाव मिश्री अथवा खांड डाल देवें, और अदरक का रस भी मिलाकर आग पर पकावें, जब शहद जैसा गाढ़ा हो जावे, तो उतार कर रख लेवें। औषधि तैयार है।

मात्रा—६-६ माशे दिन में तीन बार प्रातः मध्याह्न तथा शाम को प्रयोग करें।

गुण—हर प्रकार की खासी तथा हर प्रकार का श्वास प्रतिश्याय समूल नष्ट होता है। यदि खांसी में रक्त आता हो, तो अदरक स्वरस के स्थान पर द्राक्षा (मुनक्का) १० तोले का आधा सेर जल में क्वाथ करके १० तोले क्वाथ शेष रहने पर छान कर पिलादें। यह रक्त कास में लाभ करता है यदि इस औषधि को अधोगत रक्तपित्त में प्रयोग करना हो, तो मुनक्का के बराबर हरड़ का छिलका क्वाथ बना कर और सम्मिलित करदें।

कासावलेह—१९

असली बंशलोचन—६ माशे, सत मुलहटी—६ माशे;
दारचीनी—४ माशे; शगर तिगाल—६ माशे
गोंद कीकर—४ माशे, गोंद कतीरा—४ तोले
छोटी इलायची—२० नग, शहद—५ तोले

विधि—काष्ठादि औषधियों को महीन पीस कर वस्त्रपूत कर के शहद में मिलाकर कांच के पात्र में सुरक्षित रखें। तीन माशे से ६ माशे तक प्रयोग करें।

गुण—शुष्क कास में यह अवलेह अमृत तुल्य कार्य करता है। अत्यन्त कष्टप्रद कास में प्रत्येक तीन-तीन घण्टे पर देते रहें। यह औषधि जादू के समान कार्य करती है। आप इसका प्रयोग करके देखें। सफल अनुभूत योग है।

टि०—इस योग में शगरतिगाल है, इसको सावधानी से शुद्ध करलें, क्योंकि इसमें कीड़े बहुत होते हैं।

खांसी की अचूक दवा—२०

बांसा पत्र स्वरस—२० तोले, शहद—२० तोले
पीपरमेंट—६ माशे, कपूर देशी—६ माशे
यवक्षार—१ तोला

विधि—इन सब को यथाविधि मिला एक शीशी में रखें। ६ माशे से १ तोला तक दुगुणा जल मिलाकर दिन में तीन बार लेवें। इस से सब प्रकार की खांशी दूर हो जाती है। कपूर को रेक्टीफाईड स्प्रिट में मिलाकर पिलावें तो उत्तम रहेगा।

योग—२१

गुड़—२ सेर, बांस पंचांग—२ सेर,

विधि—वांसे को काटकर छोटे-२ टुकड़े करलें। पश्चात् वांसा और गुड़ को कूट कर एक जीव कर लें, और मिट्टी के पात्र में भर कर कपड़ मिट्टी करके पातालयन्त्र से अर्क निकाल लें। यह कालिमा लिए हुए अर्क आसव के रंग का नीचे वाले पात्र में मिलेगा। सावधानी पूर्वक शीतल होने पर निकाल लें, मिट्टी आदि न गिरे। इसकी

मात्र एक एक तोला प्रातः सायं प्रयोग करें। 'यह भी कास श्वास के लिए उपरोक्त योग से कम नहीं है। इस का प्रयोग मैंने बहुत किया है। यह एक सफल प्रयोग है।

योग—२२

कोकर का गोंद, सत मुलहटी, छिली हुई मुलहटी, काली मिर्च दाना छोटी इलायची, मिश्री, सब १-१ तोला।

इन सब को पीस कर जल से जंगली बेर प्रमाण गोली बना लें। जब शुष्क कास का वेग आरम्भ हो गोली मुख में रखकर चूस लें। इससे तत्काल शान्ति मिलेगी कण्ठ शुद्ध होगा तथा रुचि बढ़ेगी।

कास सुधाकर—२२

सत पोदीना, कपूर, सत अजवायन, सत लोबान, बांसाक्षार प्रत्येक ६-६ माशे, शहद २॥ तोले।

विधि—सब को मिलाकर रखलें। पाँच बूंद पान पर डाल कर (जिसमें कत्था लगा हो) सेवन करें। कास और श्वास में शीघ्र लाभ होगा।

ज्ञातव्य—इस की प्रथम चार औषधियों को मिला लें, जब जल जैसा रूप हो जावे, तब बांसाक्षार तथा शहद मिलाकर रखलें।

योग—२४

बांसाघनसत्व—८ तोले; अर्क (आक) मूलत्वक् २ तोला, अफीम १ तोला, कपूर १ तोला।

विधि—इन सब को पीसकर दो दो रत्ती की गोली बनावें। एक दो गोली सेवन करावें।

गुण—उरःक्षत, श्वास, रक्तपित्त, अतिसार रक्तप्रदर, कास, संग्रहणी आदि पर लाभप्रद है।

टि०—एक सेर बांसा-पंचांग को चार सेर जल में सायंकाल को भिगो दें, प्रातः क्वाथ करें। एक सेर शेष रहने पर छानकर पुनः पकावें, जब अफीम जैसा गाढ़ा हो जावे उतार लें, यही बांसा-घनत्व है।

बांसा शर्बत—२५

बांसा पंचाग-४० तोले, छोटी कण्टकारी का पंचांग-४० तोले खांड-४० तोले।

शर्बत विधि के अनुसार शर्बत बनावें।

इसकी मात्रा एक से ढ़ाई तोले तक है।

गुण—श्वासयुक्त कास और पुराना कास, मन्द-मन्द ज्वर का बने रहना, बालकों की खांसी में लाभ करता है।

कासारि मधु—२६

बांसा पत्र पके हुए पीले रंग के भबके में दबा-दबा कर भर देवं। भवके वाले पात्र को थोड़ा सा खाली रक्खें और मन्दाग्नि से अर्क निकाल लें। यह अर्क बांसा पत्र पसीज कर ही अर्क निकलेगा। इस को पत्र परिश्रुत जल कहते हैं। इस अर्क के समान मधु मिला कर सेवन करें।

मात्रा—एक-एक तोला दिन में दो तीन बार देवें। बच्चों के लिए थोड़ी मात्रा में प्रयोग करें।

गुण—यह कासारि मधु। श्वास, क़ास, क्षयज कास, साधारण कास, जुकाम, बच्चों की काली खांसी पर अद्भुत चमत्कार दिखाता है।

योग—२७

छोटी कण्टकारी के फल २० तोला लेकर कूट लें, फिर किसी मिट्टी के पात्र में आधे फल कुटे हुए रखकर सैंधा नमक ५ तोला रख दें, ऊपर कण्टकारी के आधे फल भी रखदें। फिर कपड मिट्टी करके सुखालें। फिर छः सेर जंगली उपलों में फूंक कर भस्म बनालें। फिर निकालकर पीसकर सुरक्षित रखें। इसकी चार रत्ती से एक माशा तक की मात्रा प्रयोग करें।

योग—२८

वांसा के पत्ते १ सेर,	सैंधा नमक ५ तोले

काली मिर्च १ तोला, हल्दी की भुनी हुई बड़ी-बड़ी गांठ २ नग।

विधि—इन सबको कूट पीस कर कीकर के गोंद के संयोग से चने समान गोलियाँ बनालें। आवश्यकता पड़ने पर चूसते रहें। इससे सब प्रकार की खांसी ठीक होती है। बांसा खांसी, श्वास, रक्तपित्त यक्ष्मा के लिए अमृत है।

कासावलेह—२९

पोस्तदाना-१ तोला	गोंद कतीरा-१ तोला
बीदाना-१ तोला	गिरी बादाम-१ तोला
काकड़ासीगी-३ माशे	मुलहटी-१ तोला
शगर तिगाल-३ माशे	दारचीनी-३ माशे
छोटी इलायची-६ माशे	बंशलोचन-६ माशे

विधि – इन सबको कूट कर चूर्ण बनालें। पश्चात् ईशबगोल में पानी मिलाकर इसका रेशा (लुआब) निकाल कर सूखी औषधियों में मिलाकर चटनी जैसा बनालें। इसको दिन में दो तीन बार छः-छः माशे चटावें। यदि इसको मधु में मिला कर

चटावें तो शीघ्र लाभ होगा। यह शुष्क कास में अति लाभ करता है।

कासश्वासहर योग—२३

इन्द्रायण स्वरस १ सेर।

दोनों को मिलाकर एक कांच या चीनी मिट्टी के अमृतबान में भर कर चालीस दिन तक रख छोड़ें। ऊपर से सुन्दर वर्ण का आसव ले लेवें। यह सब प्रकार की खाँसी में लाभ करता है। इस की मात्रा एक माशा से तीन माशे तक है। दिन में एक दो बार पिला देवें। यदि कब्ज हो तो अधिक मात्रा में प्रयोग करें। इससे अतिसार हो जाते हैं। यह औषधि वैद्य दयानन्द जी की परीक्षित है।

योग—३१

अलसी भुनी हुई एक तोला प्रतिदिन प्रयोग करें। शुष्क कास हो और जिस मनुष्य का चलते समय अथवा वैसे ही श्वास फूलता हो, उसके लिए लाभदायक है।

कासामृत—३२

अजवायन खुरासानी—१ तोला	अजवायन देशी – १ तोला
सैंधा नमक—१ तोला	काला नमक—१ तोला
समुद्र नमक—१ तोला	तम्बाकू देशी—१ तोला
केशर काश्मीरी—१ माशा	अफीम – १ माशा
आक के पत्ते—२० नग	

निर्माण विधि—आक के पत्तों के अतिरिक्त सबको कूट कर बारीक करलें। पश्चात् आक के पत्तों में रखकर गोला सा बना कर ऊपर धागा बांध कर जिससे पत्ते खुले न रह जावें। मिट्टी के पात्र में रख कर कपड़ मिट्टी कर सुखालें। फिर उपलों की अग्नि में

पुट देवें । आग इतनी देनी चाहिए, जिस से काले रंग को भस्म बने श्वेत रंग की भस्म न होने पावे । पश्चात् इसको घीक्वार के गूदे में खरल करके रख लें । इसकी मात्रा एक रत्ती से दो रत्ती तक है । यह खांसी के अतिरिक्त शीतपित्त पर भी अच्छा कार्य करती है ।

योग-३३

गोंद कीकर — गिरी बादाम
मुनक्का बीजरहित — सत मुलहटी

इन को समान भाग लेकर बारीक पीसलें, फिर जल संयोग से ४-४ रत्ती की गोलियां बनालें । रात दिन (२४ घण्टे) में ६ गोली चूसने को देनी चाहियें । इस के प्रयोग से खांसी, निमोनियां, छाती का दर्द, फेफड़ों का क्षत, रक्त आना, कफ युक्त कास सब ठीक हो जाते हैं । बड़ा उत्तम योग है ।

योग-३४

पीपल ५ तोले को एक सेर गौ के दूध में पकावें, जब पकते २ दूध सूख जावे, पीपल को निकाल छाया में सुखालें, फिर पीस कर रखलें । एक माशा से तीन माशा तक शहद के साथ प्रयोग करने से कफ को नष्ट करता है । अधिक कफ की बृद्धि होने पर छः माशे तक भी दे सकते हैं ।

गुण—इस से किसी प्रकार का कफ हो सूख जाता है । कफ युक्त कास और कफ युक्त श्वास में चमत्कार दिखाता है । इस से बृद्धों का कफ वाला कास, श्वास चला जाता है । यकृत्, प्लीहा को शक्ति देता है । रक्त की वृद्धि होती है । यह योग अनुभूत है ।

कासहर शर्बत योग-३५

अडूसा पंचांग—२० तोले, — कंटकारी पंचांग—२० तोले
मुलहटी—१० तोले — सोमलता—५ तोले
अदरकस्वरस—२॥ तोले

निर्माण विधि—अदरक स्वरस को छोड़कर सब औषधियों को जौकुट करलें, यदि ताजा हों तो छोटी २ काटलें। इन को शाम के समय साढ़े तीन सेर जल में भिगो दें, प्रातः मन्द २ अग्नि पर पकावें जब तीन पाव जल शेष रहे छान कर तीन पाव खांड मिला कर तथा अदरक रस भी मिला दें, शर्बत की चासनी बनालें। शहद जैसा गाढ़ा कर लेवें। शीतल होने पर शीशियों में भरलें।

मात्रा—६-६ माशे, दिन में तीन बार प्रयोग करें। प्रातः शाम और रात्रि में चटा देवें।

गुण—यह शर्बत सब प्रकार की खाँसी में उपयोगी है। पुरानी से पुरानी खाँसी में भी लाभ करता है। श्वास रोग में भी लाभ करता है। यह विश्वास के योग्य दवा है। यह शर्बत कफ को ढ़ीला करके बाहर निकाल देता है। श्वास की नली की खारिस दूर कर देता है। इस की तीन चार मात्रा लेने पर खांसी और श्वास में लाभ आरम्भ हो जाता है। बच्चों की खाँसी शीघ्र दूर हो जाती है।

योग—३६

अडूसे की जड़ १॥ सेर लेकर छोटे २ एक एक अंगुल प्रमाण टुकड़े करलें। इन को जल से धोकर मिट्टी दूर कर दें। फिर इनको चीनी मिट्टी अथवा पत्थर के पात्र में रख दें। फिर इसमें एक पाव बकरी का दूध डाल देवें और धूप में रख दें। जब दूध सूख जावें, तब एक पाव बकरी का दूध पुनः मिला देवें। इसी प्रकार धूप में सुखाते रहें और बकरी का दूध मिलाते रहें. जब चालीस पाव दूध बांसा की जड़ में शोषण हो जावे, तब पाताल यंत्र से घृत निकाल लेवें। पाताल यंत्र से अन्य पदार्थ शीशम, चना, गेहूं, नारियल आदि का तेल निकाला जाता है। इसी प्रकार इस का भी घृत निकाल लें।

यह पाताल यन्त्र भूमि में खड्ढा खोद कर उसमें एक पात्र रख उस पात्र के ऊपर बांसे वाला पात्र रखकर ऊपर उपले चुन कर अग्नि लगादें। यह अग्नि मन्द होनी चाहिये तथा निर्वात स्थान में किया करें। इस उपलों वाले पात्र पर थोड़ी सी मिट्टी डाल दें, जिससे धीरे-धीरे नीचे वाले पात्र में घृत संग्रह हो जाय। यदि अग्नि तीव्र होगी तो घृत नहीं निकलेगा और परिश्रम व्यर्थ जायेगा। जब शीतल हो जाय, तब घृत नीचे वाले पात्र से निकाल लें। सावधानी से निकालें. मिट्टी न पड़ने पावे, यदि मिट्टी पड़ जावे तो कपड़े से छानलें। इस की मात्रा एक बूंद से दो बूंद है। बच्चों को थोड़ी मात्रा में प्रयोग करावें। पान के पत्र में रख कर सेवन करें।

गुण—समस्त प्रकार के कास, श्वास, उरःक्षत, मुख से रक्त का आना, हिक्का, बच्चों की काली खांसी पर रामबाण जैसा असर करेगी। यह औषधि पहले दिन ही अपना प्रभाव दिखाती है और जादू जैसा कार्य करती है। इससे श्वास का दौरा उसी समय रुक जाता है।

योग—३७

बांसे का सफेद फूलों वाला गुच्छा काटकर पानी में पकालें। इस क्वाथ को छानकर पुनः अग्नि में चढ़ाकर घनसत्व करें। रबड़ी जैसा गाढ़ा करलें। इसमें खांड मिलाकर जंगली बेर समान गोली बनालें। प्रातः सायं सेवन करें। इससे खाँसी अच्छी हो जाती है। मिर्चलाल, खटाई, गुड़, तैलादि न खावें।

कास श्वास हर योग—३८

लोंग	८ तोला	बहेड़ा छिलका	४ तोला
छोटा पीपल	४ तोला	शगर तिगाल	४ तोला

काकड़ा सींगी	४ तोला	छिलका अनार	१ तोला
दारचीनी	२ तोला	नौशादर	२ तोला
देशी कपूर	१ तोला	भुना सुहागा	१ तोला
सत मुलहटी	२० तोला	सोमलता चूर्ण	२।। तोला
छोटी कण्टकारी का घनसत्व		— —	५ तोला
बांसा (अड़ूसा) का घनसत्व		— —	५ तोला
कत्था	१० तोला	मुनक्का	१० तोला
आक पुष्प	५ तोला	अदरक स्वरस	२० तोला

निर्माण विधि—इन औषधियों से कूटने वाली औषधियों को कूट लेवें। मुनक्का और अर्क पुष्प को चुचलकर चौगुने जल में क्वाथ करें। चतुर्थांश शेष रहने पर छानकर अदरक का स्वरस मिलादें। इस क्वाथ और अदरक के रस में सतमुलहटी, बांसा-घनसत्व, कण्टकारी घनसत्व, नौशादर, भुना सुहागा, कपूर मिला कर खरल करें। सबको मिलाकर खूब घुटाई करें। पश्चात् तीन तीन रत्ती की गोली बनालें। छाया में सुखाकर शीशी में रखलें।

मात्रा—प्रातः सायं दो दो गोली शहद के साथ मिलाकर सेवन करें। अथवा आवश्यकता पर चूसते रहें। चार गोली पर्यन्त दिन रात में प्रयोग करें।

गुण—काली खांसी श्वास, कास, कफयुक्त में शीघ्र लाभ करती है। यह औषधि गले तथा फुफ्फुस में चिपके हुए कफ को बाहर निकाल देती है। यह सफल प्रयोग करें।

हिक्का निदान (हिचकी)

कारण—छाती और कण्ठ में जलन करने वाले पदार्थों का अधिक सेवन, अफारा उत्पन्न करने वाले पदार्थ, शीतल भोजन अथवा धूल, धूआँ धूप एवं दूषित वायु का सेवन करना, उपवास,

मल मूत्र का रोकना, अधिक भार उठाना, तथा बिना भूख के भोजनादि करने से मनुष्यों को हिक्का रोग जाता है।

सामान्य लक्षरण

प्राण वायु (जो मुख के द्वारा बाहर निकलता है) उदानवायु से युक्त होकर सन् सन् शब्द करता हुआ बार-२ हिक् शब्द मुख से बाहर निकालता है। इसी को आयुर्वेद ने हिक्का रोग कहा है। हिक्का (हिचकी) रोग पांच प्रकार का होता है।

असाध्य लक्षरण

हिचकी आते समय जिसका शरीर तण जाता हो (अकड़ जाना), जिसकी दृष्टि सर्वथा ऊपर चढ़ गई हो। क्षीण हो मन्दाग्नि हो, अधिक छींक आती हों, जिसको अन्तिम हिचकी गम्भीरा और महती हिचकी हो, उस रोगी को बुद्धिमान् वैद्य त्याग देवे। क्योंकि यह असाध्य लक्षरण हैं।

ज्ञातव्य—ध्यान रहे राजयक्ष्मा (तपेदिक) संग्रहणी आदि भयंकर रोगों में अत्यन्त कमजोर (क्षीरण) मनुष्यों को हिचकी का रोग हो जाता है। यह प्रायः असाध्य हो जाता है। यश चाहने वाले चिकित्सक को चाहिये कि चिकित्सा करने से पूर्व उसके संरक्षक को सूचित कर देवें, जिससे अपनी प्रतिष्ठा में कोई कमी न आवे। यह स्वतन्त्र हिचकी रोग नहीं है, अन्य रोग का उपद्रव होता है, और उपद्रव मारक होते हैं। सावधानी से चिकित्सा करनी चाहिये।

चिकित्सा, योग—१

जिस मनुष्य को अकस्मात् हिचकी आरम्भ हो जावे, तो उसे श्वास बन्द करने को कहें, जितना श्वास बन्द कर सके करे, इससे हिचकी बन्द हो जायेगी।

योग-२

कोई भय करने वाली बात अथवा कथा कहे, जिस से चिन्ता होकर हिचकी के रोगी का ध्यान परिवर्तन हो जाये, और रोग की तरफ ध्यान सर्वथा ही न रहे, तो हिचकी बन्द हो जायेगी।

योग-३

रोगी के शरीर पर अति शीतल जल के छींटे लगावें।

योग-४

हिचकी वाले रोगी को नमक मिलाकर गरम जल पिलावें, जिससे वमन हो जावे, इससे हिचकी बन्द हो जाती है। नहीं तो पश्चात् औषध देवें।

योग-५

कलौंजी ३ माशे को पीसकर नवनीत घृत में मिलाकर चटाने से हिक्का रोग शान्त हो जाता है।

योग-६

हरड़ की भूसी का धूम्रपान करने से हिचकी शान्त हो जाती है। किसी नाली की चिलम में भूसी रखकर धूम्रपान करना चाहिये।

प्रयोग-७

छोटी इलायची दाना — बंशलोचन
सूखा पोदीना — जहरमोहरा खताई
अगर प्रत्येक १ माशा
पीपल ४ रती — शर्बत अनार २ तोला

इन सबको बारीक पीसकर शर्बत में मिलाकर चटनी बनालें। आवश्यकता पर थोड़ी-थोड़ी चटनी चटाते रहें, तो लाभ हो जायेगा।

योग-८

सिरका १ तोला खांड ६ माशे
जल ३ तोला तीनों को मिलाकर पिलाने से बन्द न होने वाली हिचकी भी बन्द हो जाती है।

योग-९

दाना इलायची मस्तगी
लौंग
जायफल पोदीना
प्रत्येक ६-६ माशे गुलकन्द २।। तोले

पीसने वाली सब औषधियों को पीसकर गुलकन्द में मिलाकर रखलें। प्रातः सायंकाल एक-एक माशा औषध प्रयोग करने से शीघ्र लाभ होगा।

योग-१०

कोई तीव्र छींक आने वाला नस्य देने से छींकें आकर हिक्का बन्द हो जाती है।

प्रयोग-११

मीठा कूठ—१ तोला एलवा—३ माशे
तगर—१ माशा अफीम—१ माशा

इन को बारीक पीसकर ईशबगोल के लुआब में रगड़कर जंगली बेर समान गोली बनालें। दो-दो गोली तीन बार गरम जल से देने से हिचकी शान्त हो जाती है। अनुभूत है।

योग-१२

सुरा (शराब)—१ तोला नमक—२ माशे इन को मिला कर दो मात्रा बनावें।

प्रयोग विधि—एक मात्रा पिलाकर पांच काली मिर्चों का धुआं अग्नि पर रख कर मुख द्वारा कण्ठ तक पहुँचावें, हिचकी बन्द हो जाएगी। दो घण्टे बाद दूसरी मात्रा देवें। यह औषधि प्रत्येक प्रकार की हिचकी को बन्द कर देती है। अनेक बार परीक्षित है।

योग-१३

आम के पत्तों को चिलम में रखकर धुआं मुख में खींचने से हिचकी बन्द हो जाती है।

प्रयोग-१४

पीपलामूल का चूर्ण १ माशा, खाड ६ माशे में मिलाकर प्रयोग करने से हिचकी में लाभ हो जाता है।

प्रयोग-१५

भांग को पीस कर वस्त्रपूत करके स्त्री के दूध में मिलाकर सलाई से आंख में डालने से हिचकी तत्काल बन्द हो जाती है।

प्रयोग-१६

यदि हक्का किसी औषधि से बन्द न हो, तो हल्दी और उड़द (माष) दोनों को समान भाग लेकर चिलम में रख कर मुख द्वारा धुवां सेवन करें, इससे हिचकी निश्चित बन्द हो जाती है। मैंने इस का प्रयोग अनेक बार किया है। पूर्ण सफल योग है। केवल हल्दी मात्र से भी पर्याप्त लाभ होता है। परन्तु इस के पश्चात् कुछ दिन तक दूसरी औषधि सेवन कराते रहें। हिचकी रोग निर्मूल हो जायेगा।

प्रयोग-१७

मोर पक्षी का पंख कैंची से काट कर चिलम में रख धुआं का सेवन करें। इससे हिक्का रोग शान्त हो जाता है। यह उत्तम योग है।

योग–१८

सैंधा नमक पीस कर थोड़े जल में मिलाकर दो चार बूंद नाक में डालने से हिक्का शान्त हो जाती है। यह ओषधि मूर्च्छा रोग में तत्काल लाभ पहुंचाती है।

योग–१९

मयूर पक्षी के चन्दे की भस्म–४रत्ती, शहद–१ तोला, पीपल का चूर्ण–१ माशा। इन को मिलाकर चटा देवें। रोग में उस समय लाभ हो जायेगा।

योग–२०

त्रिकुटा—९ माशा, पान की जड़—१ तोला इन सबको पीस कर रख लें। तीन माशे से छः माशे तक एक तोला शहद में मिला कर चटावें। तुरन्त लाभ होगा।

हिक्कान्तकरस योग–२१

शुद्ध पारा—१ तोला, शुद्ध गन्धक—१ तोला,
शुद्ध मैनशिल—१ तोला, शुद्ध बत्सनाभ—१ तोला,
काली मिर्च—८ तोला।

विधि—प्रथम पारे गन्धक की कज्जली करें, फिर दूसरी ओषधियों को बारीक पीसकर मिलाकर घोटें, जब सब ओषधि मिल कर एक जीव हो जायें, तब शीशी में सुरक्षित रखें।

अनुपान - ४ रत्ती से १ माशा तक, एक तोला शहद में मिला कर प्रयोग करें। यह हिक्का के लिए अमूल्य ओषधि है। इस से हिचकी अवश्य बन्द हो जाती है। पुराने रोग में कुछ दिन लगातार सेवन कराते रहें। बालकों को आधी रत्ती तक प्रयोग करावें

योग–२२

श्वास रोग प्रकरण का छठा योग है वह हिक्का में पूर्ण अनुभूत है।

———

श्वास रोग निदान

कारण—उष्ण, रूक्ष, कब्जकारक तथा गरिष्ठ पदार्थों का सेवन करने से, शीतल जल और शीतल प्रकृति का भोजन करते रहने से, धूल, धुम्रां का मुख द्वारा या नाक द्वारा अन्दर जाने से, शक्ति से अधिक भार उठाने से, अधिक परिश्रम करने से, मल, मूत्रादि के वेगों को रोकने से और अधिक उपवास करने से, श्वास रोग, हिक्का तथा खांसी रोग हो जाता है।

सामान्य लक्षण

श्वास प्रश्वास की जो परम्परा है, उसमें विकार होकर श्वास लेने में जो कष्ट होता है, उसी को श्वास रोग कहते हैं। जब वायु, कफ से मिलकर श्वास लेने वाली नली को रोक देता है, कफ को शुष्क करके इतस्तत बहने नहीं देता, उस समय श्वास रुक कर आने लगता है इसी को श्वास रोग कहते हैं। यह पांच प्रकार का होता है।

असाध्य लक्षण

श्वास के रोगी का श्वास मुख के द्वारा निकलता हो, शीतल हो और नाक से आनेवाला गरम हो। नाड़ी की गति तीव्र हो, रोगी अत्यन्त कमजोर हो गया हो, जो चलने में अशक्त हो, वह जीवित नहीं रह सकता और जिसके मस्तिष्क का रंग केशर जैसा लाल हो गया हो, शौच के समय वायु का निस्सरण अधिक मात्रा में

होता हो, वह मृत्यु के निकट ही समझना चाहिये। पांचों प्रकार के श्वास रोग में महाश्वास, ऊर्ध्वश्वास और छिन्नश्वास यह तीनों असाध्य होते हैं और तमकश्वास याप्य अथवा कष्टसाध्य है। यदि तमक श्वास नवीन हो तो साध्य ही है। क्षुद्र श्वास साध्य ही है।

श्वास रोगी के लिये कुछ आवश्यक बातें

१—रोगी को शुद्ध स्थान पर रखें, और सुखशय्या पर लिटा देवें।

२—गरम जल में रूई अथवा फलालीन, खद्दर के कपड़े को भिगो कर कण्ठ तथा छाती का सेक करें।

३—गोघृत में नमक मिलाकर (नमक को बारीक पीसकर) छाती और कण्ठ पर मालिश करें।

४—जल को खूब गरम करके रोगी के पैर उसमें रखें।

५—जब श्वास रोग का दौरा हो, उस समय गरम जल पिलावें।

इन उपरोक्त उपचारों से श्वास का तीव्र वेग न्यून हो जाता है। श्वासनलियों में जमा हुआ शुष्क कफ कोमल होकर सरलता से बाहर निकल जाता है और रोग में लाभ हो जाता है। श्वास रोग बड़ा कष्टदायक रोग है। इसके कष्ट को भुक्तभोगी ही जानता है। जिस समय श्वास रोग का आक्रमण होता है, उसकी अवस्था का वर्णन करना हमारी लेखनी से बाहर है। किसी ने ठीक कहा है, जिसको लगे वही जाने। रोगी श्वास न आने के कारण इतना दुखी हो जाता है, कि चेतनता ही नहीं रहती। कभी लेटता है, कभी बैठता है, कभी छाती को आगे करके श्वास लेने का यत्न करता है। कभी उल्टा सिर को करके भूमि पर रख कर अपने प्राण छुड़ाना चाहता है। अत्यन्त दुखित होता है। कफ श्वास की नली में सूख

जाता है और बार बार खांसने पर कभी २ थोड़ा २ कफ निकलता है। ऐसी अवस्था में उसी समय श्वास वेग शान्त करने वाली औषधि देनो चाहिये। इस में दस्त कराना, स्वेद निकालना, धूम्रपान करना, वमन कराना, छाती से लेकर पृष्ठ को ओर फेफड़ों पर दाग देना, कफ निकलना लाभ करता है।

सामान्य चिकित्सा

१. गैस का जला हुआ मैन्टल १ रत्ती पान के पत्ते पर रख कर रोगी को खिला देने से तत्काल लाभ हो जाता है। परन्तु यह स्थायी लाभ नहीं है।

२. वांसा (अडूसा) पत्र और धतूरे के पत्र (यदि काले धतूरे के हों ता अच्छा है) इन दोनों के सूखे पत्ते लेकर सिगरेट बनाकर धूआं लेने से लाभ होता है।

३. छोटी कण्टकारी के पके फल, जो पीले रंग के होते हैं, एक तोला का क्वाथ करें। तीस तोले जल का जब सात तोले क्वाथ शेष रहे, तव उसे छानकर हींग १ माशा, सैंधानमक २ माशा मिलाकर पीने से तत्काल लाभ होता है।

४. कपूर देशी ३ रत्ती, गुड़ १ माशा में मिला कर खिलादें यदि एक बार के देने से लाभ न हो, तो दो दो घण्टे पर, तीन चार बार देने से दौरा शान्त हो जाता है। अनुभूत है।

५. मल्लसिन्दूर आधा रत्ती, अदरक का रस ३ माशा, शहद २ तोले। इन को मिलाकर चटा देवें, इस से कफ पतला होकर निकल जाता है और दौरे में शान्ति हो जाती है। इसकी दो मात्रा से ही जादू जैसा कार्य होता है।

३. सोमलता का बारीक किया हुआ चूर्ण ६ माशे, सितोपलादि चूर्ण ६ माशे, अभ्रक भस्म २ रत्ती, इन को मिलाकर चार

मात्रा बनावें। एक मात्रा को शहद में मिलाकर चटावें। यदि लाभ न हो तो लाभ होने पर्यन्त तीन तीन घण्टे में देते रहें। यह औषधि श्वास के दौरे पर रामबाण जैसा कार्य करती है। अनेक बार की परीक्षित है।

७. काले धतूरे का एक पाव फल लेकर उसमें तीन पाव कल्मी शोरा मिलाकर तीन सेर जल में डालकर मिट्टी के पात्र में आग में रखकर पकावें। जब एक पाव शेष रहे उतार कर फल को निकाल लें और फल को धूप (सूर्य ताप) में सुखाकर एक छटांक गोघृत में भूनलें, बस दवा तैयार हो गई। इसकी दो माशे की मात्रा चिलम में रखकर, तम्बाकू के समान धूआं पीवें। यह दवा अद्भुत चमत्कार दिखाती है। एक सप्ताह तक सेवन करने से श्वास रोग में पूर्ण लाभ करती है।

८. कल्मी शोरा २ तोले — धतूरे के सूखे पत्ते २ तोले
सत लोबान ३ माशे — सौंफ ५ तोले

विधि—सौंफ का एक सेर जल में क्वाथ करें, एक पाव क्वाथ शेष रहने पर छान कर दूसरी सारी औषधि छानकर डालकर घोटलें। सूखने पर दो माशा दवा चिलम में रखकर मुख से धूआं पीवें। यह जादू जैसा कार्य करती है।

श्वास रोग की चिकित्सा

सर्वप्रथम श्वास के रोगी को वमन कराना हितकर है। वमन काल आश्विन, कार्तिक, चैत्र, वैशाख है। अधिक आवश्यकता हो, तो कभी भी वमन करा सकते हैं। उत्तम तो यह है कि स्नेहन, स्वेदन कराके वमन करावें। शेष जैसा समय हो, करना चाहिये।

वमन कारक योग १

उसारा रेवन्द बढ़िया लेकर पीस कर रख लें। एक माशा से दो माशा तक, आयु, बल, रोग को ध्यान में रखते हुए उचित मात्रा में गरम जल से प्रातः एक दो घण्टे दिन निकलने के पश्चात् सेवन करायें। इससे थोड़े समय के पश्चात् कै और दस्त आने आरम्भ हो जायेंगे और सारा कफ वमन तथा दस्तों से निकल जाएगा। कुछ समय पश्चात् श्वास से आराम मिल जायेगा। यह अनुभूत योग है तथा किसी प्रकार का भय नहीं है। सर्व साधारण मनुष्य भी सेवन कर सकते हैं। अनेकों बार का परीक्षित है। यह श्वास रोग के लिए अमृत है।

योग २

तुरई (तोरई) कड़वी, इसको जंगली अथवा वन तोरई भी कहते हैं। एक तोरी हरी अथवा सूखी लेकर शाम को बकरी के तीन छटांक दूध में (कच्चे में) चीनी या कांच के पात्र में भिगोदें। प्रातः तोरई को मसल कर निचोड़ लें। उस निचोड़े हुए जल में तीन तोले खांड या बूरा मिलाकर सेवन करें और इसके ऊपर तत्काल दस तोला खांड फांक लेवें। इसके थोड़ी देर पीछे वमन होकर संग्रह हुआ कफ निकल जाता है। इसी प्रकार दो तीन वमन होंगी। जिस दिन यह औषधि सेवन करनी हो उस दिन प्रातः एक घण्टा पूर्व डेढ पाव दूध में तीन तोले खांड मिलाकर और साथ बिना कुटा ईशबगोल फांककर ऊपर से दूध पी लें। इससे वमन (कै) भलीभांति हो जायेगी। पहले दिन भी खूब दूध, मलाई, घृत सेवन करना चाहिये। दूध, घृत, चावल खिलाकर प्रकृति को कोमल करें। दूसरे दिन यह औषधि प्रयोग करें। यह प्रयोग चैत्र अथवा आसौज में करें। गर्भवती स्त्री, वृद्ध, बालक को यह औषधि न देवें।

इस से कै आकर कफ के टुकड़े निकल कर शुद्ध हो जाता है। जब दो तीन कै आजावें, तब गोदुग्ध अथवा बकरी का दूध लेकर उबाल कर और उस में दो तोले खांड मिलाकर ठण्डा होने पर पीलें। इसके एक घण्टा पश्चात् कद्दू के मीठे बीज ६ माशे, दाना छोटी इलायची १ माशा, पोस्त दाना १ माशा, कतीरा ४ रत्ती, इसको अर्क गाजुवां अथवा जल में घोट कर (जल या अर्क की मात्रा २ तोला) इस में कूजा मिश्री दो तोला मिलाकर चटा देवें। यह उष्णता को मिटाने के लिए है। चिकित्सा तो एक वही है। इस के एक घण्टा पश्चात् मूंग चावल की खिचड़ी घृत मिलाकर खावें। इस से एक बार में ही लाभ हो जाता है। यदि पूर्ण रूपेण लाभ न हो, तो पन्दह, बोस, तीस दिन पुनः सेवन करें।

पथ्य—खटाई, तेल, भुने चने वर्जित हैं।

योग ३

इन्द्रायण के पके हुए फल का गूदा लेकर छाया में सुखा लें। ऊपर का छिलका तथा बीज निकाल दें और बारीक पीसकर रख लें।

मात्रा—बलवान् रोगी को एक तोला गरम जल में मिलाकर सेवन करावें और ऊपर से दस तोले खांड फांक लें। इस के सेवन करने से तीन दिन पूर्व गेहूं आदि का दलिया नरम भोजन करावें। इस से वमन द्वारा कफ की गांठें निकलेंगी। दस्त भी खूब आवेंगे। एक ही दिन में पूर्ण लाभ होगा। परन्तु एक सप्ताह पर्यन्त घृत खांड खूब खावें। यदि रोगी घृत, खांड न खावे अथवा न्यून खावे, तो हानि होने की सम्भावना है। रोगी निर्बल हो, तो यह दवा तीन दिन में देवें। इस के तीन भाग कर लें, एक बार में न देवें। इसका प्रयोग किसी अनुभवी वैद्य के सम्मुख करावें क्योंकि यह बहुत तीव्र है।

योग ४

एक माशा जमालघोटे का तैल दूध में प्रयाग करें (इस को अंग्रेजी औषध वाले क्राटन आयल कहते है) । इससे वमन तथा दस्त आकर कफ की निवृत्ति हो जाती है ।

योग ५

मैनफल—१ तोला, इन्द्रजौ—६ माशे
मुलहटी—६ माशे

विधि—इनको कूट कर एक पाव जल में क्वाथ करें। दो छटांक शेष रहने पर छान कर पिलावें । इस से वमन होकर कफ निकल जाएगा ।

योग ६

गुड़ दो तीन माशा लेकर सूर्योदय से पूर्व आक के दूध की पांच बूंद लेकर मिलाकर पांच गोली बनालें, और एक गोली उष्ण जल से नित्य प्रातः ही सेवन करें। इस से शीघ्र ही शमन हो जाता है।

पथ्य—गरम जल, गरम दूध, गेहूं की रोटी एवं सुपाच्य भोजन देवें । यदि तृषा लगे तो थोड़ा-थोड़ा जल पिलावें, तथा दिन में न सोवें ।

—०—

कफकुठार रस

व्याघ्रीक्षार	३ माशे	वासाक्षार	३ माशे
अपामार्गक्षार	३ माशे	नौसादर	६ माशे
पोटासियम आयोडाइड ३ माशे			

शुद्ध सुहागा	६ माशा	यवक्षार	६ माशा
कनकक्षार	६ माशा	शंखभस्म	६ माशा
कल्मीशोरा	६ माशा	फिटकरी भस्म	६ माशा

विधि—सबको बारीक पीस कर शीशी में रखलें। एक रत्ती से चार रत्ती शहद के साथ प्रयोग करें। इस योग को शृंग्यादि चूर्ण में मिलाकर भी प्रयोग कर सकते हैं, बच्चों की काली खांसी तथा उठवा रोग को लाभ देता है।

गुण—किसी भी प्रकार का गाढ़ा कफ अटका हो, इस औषधि से पतला होकर निकल जाता है। श्वास फूलना, कुकर कास, श्वास तथा अन्य कफ सम्बन्धी रोगों को नष्ट करता है।

श्वास-कल्प

शुद्ध मेनशिल	भुनी हींग
कूठ	वायविडंग
काली मिर्च	सैंधा नमक

विधि—सब औषधियों को समान भाग लेकर कपड़छान चूर्ण बनाकर शीशी में रखलें।

मात्रा—दिन में दो बार प्रातः सांयकाल शहद के साथ प्रयोग करें। दौरा पड़ने पर दो, दो, घण्टे पर सेवन करायें। कफ प्रधान होने पर शहद से, यदि कफ देर से निकलता हो, तो शहद और घृत मिलाकर प्रयोग करें।

उपयोग—श्वास, हिक्का, कास में सत्वर लाभ पहुंचाता है। हृदयावरोध और श्वास की रुकावट तुरन्त दूर हो जाती है। यह योग पुराना है, सरल भी है, और लाभ बहुत करता है। अनुभूत है।

विरेचन बटी

शकमूनियां	२० ग्राम	त्रिवी (निशोथ)	१० ग्राम
जुलाफा हरड़	१० ग्राम	हरड़ बड़ी	२० ग्राम
उशारा रेवन्द	२० ग्राम		

जल संयोग से चने समान गोली बनावें, जब रेचन कराना हो, पेट में अफारा आता हो, मलबद्धता हो, शाम को एक गोली दूध या गरम पानी के साथ प्रयोग करें। श्वास रोगी को इसका प्रयोग बहुत लाभदायक रहता है।

वमन कराने के पश्चात् देनेवाली औषधियां

निम्नलिखित योगों को वमन (कै) कराने के पश्चात् देने से बहुत लाभ होगा। यदि वमन कराने में कोई बाधा हो, रोगी वमन कराने के योग्य न हो, वृद्ध, बालक, गर्भवती स्त्री, दुर्बल अथवा ऋतु अथवा अन्य किसी प्रकार की रुकावट हो, तो औषधि वैसे ही बलानुसार यथायोग्य सेवन करावें।

योग—१

छोटी कण्टकारी (पसर कटेरी) की जड़ को सुखा कर बारीक पीसकर रखलें।

मात्रा—४ रत्ती, गोघृत ६ माशे से एक तोला तक गरम करके मिलाकर गरम २ ही पिलादें। दिन में तीन बार पिलावें। बालकों को एक वर्ष से चार वर्ष तक की आयु तक दो रत्ती तक। छोटे बच्चों को एक रत्ती तक देवें, और घृत की मात्रा भी न्यून कर देवें। निश्चित लाभ होगा। पूर्ण अनुभूत है। कास को पूरा लाभ करती है। यदि श्वास रोग पुराना हो, तो नित्य प्रति प्रातः सायं कुछ समय तक सेवन करना चाहिये।

योग—२

दुद्धी बूटी, यह दो प्रकार की होती है। इसके तोड़ने से दूध निकलता है। छोटी दुद्धी और बड़ी दुद्धी। इन में छोटी जो कुछ लाल रंग की होती है, भूमि पर बिछी हुई छोटे २ (खशखश के समान) दोनों से भरी होती है। बस यही श्वास रोग के लिये उत्तम दवा है। यह श्वास रोग पर अपना चमत्कार दिखा देती है। श्वास रोग के दौरे को समाप्त कर देती है। कभी २ देखने में आया है, जब मूल्यवान् औषधि कार्य नहीं करती, उस समय यह कार्य कर देती है। यदि इसका कुछ दिन नित्य प्रति सेवन किया जावे, तो श्वास रोग का दौरा नहीं होता। यदि है तो बहुत दिन के बाद सूक्ष्म सा।

सेवन विधि—छोटी दुद्धी को मिट्टी से शुद्ध करके छाया में सुखा कर पीस कर रख लो। इसकी मात्रा एक तोला है। गोदुग्ध को गरम करके शीतल कर लो, जब बिल्कुल शीतल हो जावे, उस समय यह पिसी हुई दुद्धी दूध में मिला कर पिला देवें। याद रहे दूध में मीठा नहीं मिलाना चाहिये। इसी प्रकार दिन में दो बार प्रातः सायंकाल एक-एक तोला मिला कर पिलावें।

योग—३

अलसी के बीज ६ माशे लेकर ४ तोले जल में बिना कूटे ही भिगो दें, यदि सायंकाल भिगोवें तो प्रातः छान कर पीवें, और प्रातः भिगो कर सायंकाल को पीवें। इसी प्रकार दोनों समय पीते रहें। इसके सेवन करने से चलने से जो श्वास फूलता है, वह श्वास रोग ठीक हो जाता है। इसको कांच (शीशे) के पात्र में भिगोना चाहिये।

योग-४

नारियल (खोपा) लेकर उसमें एक छोटा सा टुकड़ा काट कर

छेद करके आक दूध से भर दें। और वही काटा हुआ टुकड़ा लगा कर बन्द कर दें। फिर सुरक्षित रख दें। सात दिन के बाद देखें, जितना दूध सूख गया हो, उतना ही आक का दूध भर कर पूरा कर दें, फिर उसी प्रकार रखदें। तीसरी बार सात दिन के बाद फिर आक के दूध से भर दें। फिर टुकड़ा लगा कर मिट्टी के पात्र में रख छोड़ें। जब आक का दूध भीतर ही सूख जाये, कपड़मिट्टी करके बीस सेर उपलों की अग्नि में पुट देकर भस्म बनालें। पीस कर सुरक्षित रखें।

विधि—एक रत्ती पतासे में रखकर सेवन करें, इस से कफयुक्त श्वास रोग दूर हो जाता है। यदि वायु का सूखा श्वास रोग हो, और बार २ खांसने से कुछ भी न आता हो, तो दूध की मलाई में अथवा लूणी घी (नवनीत) में मिला कर प्रयोग करें। इस से सूखा एवं वात का श्वास रोग दूर हो जाता है।

श्वासान्तक बटी-५

आक की उसी समय तोड़ी हुई कोंपल— २॥ तोले
अजवायन—१॥ तोला, अफीम—१॥ माशा

विधि—इन सब को बारीक पीसकर बांसा पत्रों के स्वरस में खरल करें। फिर काली मिर्च २ तोला पिसी हुई मिला कर, सब से पश्चात् गुड़ १२ तोला मिलाकर खरल करके रख लें। तीन तीन माशे की गोली बनालें।

मात्रा—एक गोली प्रातः ही गरम जल से सेवन करें। बिना भोजन किये खाली पेट यह दवा देनी चाहिये। यदि रोगी को तृषा लगे, तो गरम जल ही पीवे। अथवा शीतल करले, अत्यन्त शीतल न होने पावे। क्षुधा लगने पर पेट भर कर भोजन न करे। थोड़ा २ ही सेवन करे। जब इस रोग में श्वास लेने में घबराहट हो रही हो और कण्ठ में कफ रुक रुक कर सांय सांय का शब्द होता हो, रोगी ऊपर को उभर कर श्वास लेता हो, कफ बाहर न निकलता

हो, प्राणों पर बन रही हो, रोगी अपने जीवन से मृत्यु अच्छी समझता हो उस समय यह औषधि रोगी को शान्ति प्रदान करती है। पहली मात्रा ही असर दिखाती है। यह औषधि श्वास रोग पर अच्छा कार्य करती है।

श्वास पर अनुभूत ६

एक बड़ा इन्द्रायण फल लेकर उसको कूटकर स्वरस निकाल लें, जितना स्वरस हो, उतना ही थोहर का दूध, उतना ही आक का दूध, कुमारी का रस, गोमूत्र। यह चारों एक एक भाग करके इन्द्रायण स्वरस के समान हों। यह सब मिला इन्द्रायण स्वरस से चार गुना होने चाहियें। इन रसों में काला संखिया ६ माशा, काले धतूरे के बीज—१ तोला, सैंधा नमक १ तोला, खूब बारीक पीस कर मिला दें। फिर खरल करें। जब खरल करते करते गोली बनाने योग्य हो जावे, तो एक एक रत्ती की गोली बनालें। इसकी एक गोली शहद के साथ सेवन करें। सिर्फ एक ही गोली प्रातः सेवन करावें। भोजन में हलवा, गोदूध, घृत खिलाते रहें। एक समय हलवा अवश्य खिलायें। और हलवा में अदरक अथवा सोंठ भी अवश्य मिला देनी चाहिये। यह औषध बलवान् रोगी को देनी चाहिये जो घृत दूध को खूब पचा सके। यह श्वास रोग को सात दिन में समाप्त कर देती है। यदि सात दिन में लाभ न हो, तो भी खिलाते रहें चालीस दिन तक अथवा १५ दिन या २१ दिन तक खिलायें। ४० दिन इसकी अधिक से अधिक प्रयोग अवधि है। यह सुपरीक्षित योग है। इस औषधि का मैंने अनेक रोगियों पर प्रयोग किया है। और हलवे में अदरक मिलाना अपने अनुभव से आरम्भ किया है। मैंने इस योग को हिक्का पर भी प्रयोग किया, बहुत लाभ प्राप्त हुआ है। योग वैद्य दयानन्द जी ग्राम निडाना जिला जींद से प्राप्त हुआ था।

प्रतिशाय (जुकाम) निदान

मल, मूत्रादि वेगों के रोकने से, अजीर्ण से, अधिक बोलने से, क्रोध से, ऋतुओं की विपरीतता से, शिर पर गर्मी लगने से, रात्री में जागने से, दिन में सोने से, वर्षा में भीगने से. शीत (ठण्ड) लगने से. ओस में रहने से. मैथुन अधिक करने से, वाष्प लगने से, जमे हुये कफ से युक्त शिर में बढ़ा हुआ वायु प्रतिशाय कर देता है।

सामान्य लक्षण

छींक आना, शिर भारी रहना, शरीर में जकड़न, अंगों में पीड़ा, रोमाञ्च होना इत्यादि लक्षण होना प्रतिशाय कहलाता है। आयुर्वेद ने छः भागों में विभक्त किया है।

असाध्य लक्षण

आयुर्वेदाचार्यों ने इस रोग को भयंकर बतलाया है। इसको साधारण रोग समझ कर प्रमाद न करना चाहिये। क्योंकि यह असाध्य हो जाता है। अथवा अन्य रोग को प्रकट करता है। खांसी राजयक्ष्मा जैसा रोग कर देता है। आचार्य लिखता है—प्रतिश्यायाद् जायते कासः, कासात् संजायते क्षयः, इसका यह अर्थ है, यदि जुकाम में लापरवाही की जावे, तो बिगड़ कर कास और तपेदिक रोग कर देता है। अथवा असाध्य हो जाता है। विज्ञ पाठक आजकल के अंग्रेजी पढ़े लिखे बाबू, जिन्होंने न तो आयुर्वेद को देखा और न सुना, आंखों के अन्धे, कानों के बहरे एलोपैथी के गीत गाते फिरते हैं। आज के डाक्टर ने तपेदिक के रोग में क्रमियों को ढूंढ़ निकाला है, किन्तु यह उनकी भूल है। जो अपने ऋषियों के (आर्ष) ग्रंथों को नहीं पढ़ते। आचार्य लिखता है—

मूर्च्छन्ति चात्र क्रिमयः श्वेताः स्निग्धास्तथाणवः।
क्रिमितो यः शिरोरोगस्तुल्यं तेनास्य लक्षणम्॥

माधवनिदान, नासारोगनिदाने २६ श्लोक

इस प्रतिशाय में श्वेत चिकने ऐवं सूक्ष्म कृमि होते हैं। इसके वही लक्षण होते हैं, जो कृमिजनित शिर रोग के होते हैं। तत्त्व-वेत्ता ऋषियों ने हमारे लिए उपदेश कर दिया है। प्रतिशाय में सूक्ष्म कृमि होते हैं। और यही जुकाम बढ़कर खांसी तपेदिक आदि भयंकर रोगों का कारण होता है। इसमें तो एलोपैथी वाले भी सहमत हैं कि तपेदिक अथवा तपेदिक की खांसी होने से पहले एक प्रकार का जुकाम होता है। फिर वही जुकाम बिगड़ कर खांसी और तपेदिक को उत्पन्न कर देता है। क्योंकि बिगड़े हुए जुकाम के कृमि रक्त के दौरे में प्रवेश कर जाते हैं। वही कृमि रक्त के दौरे में फेफड़ों को खराब कर देते हैं। इसके अतिरिक्त जुकाम बिगड़ कर मनुष्य के कान बहरे हो जाते हैं। कई मनुष्यों के नेत्र रोग तथा सूंघने की शक्ति नष्ट हो जाती है, तथा कृशता व मन्दाग्नि आदि रोग हो जाते हैं। इसी से पीनस रोग (सदा रहने वाला नजला) हो जाता है।

चिकित्सा

जुकाम प्रारम्भ होते ही तेज बुखार की दवा जो कफ को रोक देवे, नहीं देनी चाहिए, क्योंकि इस से जुकाम बिगड़ जाता है। आरम्भ में एक दो दिन उपवास रखें अर्थात् भोजन न करें, और उष्ण जल पीते रहें। इससे रोग स्वयं शान्त हो जाता है।

योग-१

अमलतास की फली लेकर कूट लेवें, फिर मिट्टी के पात्र में डालकर अग्नि पर पकावें, जब धुआं निकलना बन्द हो जावे, उतार कर अमलतास के कोयलों को पीस लेवें। औषध तैयार है। इस में

से १ से २ रत्ती मुनक्का जल के साथ प्रयोग करें। यह मात्रा बालकों की है, बड़ों को चार रत्ती से एक माशा तक अर्क सौंप से सेवन करावें। शीतकाल में जो प्रतिश्याय (जुकाम) हो जाता है, उस में लाभ करता है। निमोनियां में भी लाभ करता है।

नस्य योग-२

कायफल—१ तोला
सोंठ—१ तोला
नौशादर—१ तोला
कालीमिर्च—१ तोला
धनियां—१ तोला
रीठा छाल—१ तोला

इन सबको बारीक पीस कर सूक्ष्म नस्य बनालें। थोड़ी सी नस्य लेने से बन्द नाक खुल जाएगा। इसको मस्तिष्क हलका करने के काम में न लावें।

विशेष वात—प्रारम्भ में छीकें लाने वाली कोई नस्य न लेनी चाहिए, इससे हानि होती है। जब जुकाम पक जावे, फिर नस्य लेनी चाहिए, उससे लाभ होता है। साथ-साथ

तुलसीपत्र-१ तोला
हरड़ छाल-१ तोला
बहेड़ा छिलका-१ तोला
काली हरड़-१ तोला
आंवला-१ तोला
धनियां-१ तोला
उस्तोखद्दूस-१ तोला
पोस्त डोडा-२ तोला
मुलहटी-२ तोला
सौंफ-१ तोला
काला नमक-१ तोला

इन सब को कूट पीस कर चूर्ण बनालें। छः माशा गरम जल से शाम को सेवन करावें। यह औषधि लेने से पूर्व उदर शुद्धि अवश्य करलें। मृदुविरेचन ही देना चाहिये।

योग—३

अदरक का स्वरस ६ माशा, मधु ६ माशा, दोनों को मिलाकर प्रात: सायंकाल पीने से दो दिन में जुकाम अच्छा हो जाता है।

योग—४

चावल अथवा जंगली उपले को राख आक के दूध में भिगो कर रख लें। पीसकर छानकर महीन नस्य वनालें। आवश्यकता पर इसकी थोड़ी सी नस्य लेवें। इस से छींक आती हैं, और बन्द जुकाम खुल कर शुद्ध हो जाता है। यदि अधिक छींक आवें, तो नाक में घृत लगाना चाहिए।

योग—५

प्रारम्भ में जब जुकाम हो जाता है, और वह बहकर बाहर निकल रहा हो, तो उस को रोकने का यत्न न करें। किन्तु उस को पका कर निकालने का यत्न करना चाहिए। अच्छा तो यही है कि जुकाम बहकर निकल जावे। किन्तु कई वार रोकना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। बहुत अधिक वह रहा हो, अथवा किसी प्रकार की हानि का डर न हो, उस समय इस औषधि का प्रयोग करें। योग इस प्रकार है—

भांग की पत्ती १।। माशा, गुड़ ३ माशा, दोनों को मिलाकर बटक वनालें। इसका सेवन सोते समय शाम को करें, और उसी समय सो जावें। जल न पीवें। प्रात: जुकाम न मिलेगा। यह योग भांग पीने वालों पर लाभ नहीं करता।

योग—६

जुकाम होने पर भोजन बन्द कर देवें। सब कार्य से निवृत्त

होकर सोते समय दो तोले खांड अथवा बूरा और सात काली मिर्च मिलाकर खा लेवें, और शीघ्र सो जावें। जल न पीवें, मूत्रादि जो भी आवश्यक कार्य हो पहले ही करके सोवें। प्रातः जुकाम ठीक हो जायेगा। यदि कुछ शेष रह जावे, तो दूसरे दिन भी इसी प्रकार करना चाहिये।

योग—७

सफेद फिटकरी एक तोला को लेकर चार पहर आक के दूध से खरल करें, सूख जाने पर दूसरे दिन धतूरे के पत्तों के रस में चार पहर खरल करें, फिर सुखाकर टिकिया बना कर एक मिट्टी की छोटी हाँडी में रख कर कपड़ मिट्टी करके सुखा कर दस सेर उपलों में भस्म कर लेवें, शीतल होने पर फिटकरी की सफेद भस्म निकाल कर बारीक पीस लें। शीशी में सुरक्षित रखलें।

मात्रा—एक रत्ती से दो रत्ती तक मलाई, दूध, हलवा अथवा मुनक्का में रख कर प्रयोग करें। पीने को जल न देवें। इस दवा से कई मनुष्य जो शीत काल में महीनों जुकाम में ही उलझे रहते थे, तीन चार मात्रा से ही ठीक हो गये। यह औषधि नवीन तथा पुराने दोनों प्रकार के प्रतिश्यायों को ठीक करती है। पुराने जुकाम में सात दिन तक सेवन करायें। यह ज्वर, तथा ज्वर सम्बन्धी दर्दों को दूर कर देती है।

नस्य योग—८

पोटाशियमपरमेगनेट (लाल दवा जो कुएं में डालते हैं) ४ तोला, सोडावाईकार्ब (मीठा सोडा) १ सेर। इन दोनों को पीसकर रख लें। आवश्यकता पर थोड़ी सी नाक द्वारा सूघें। इस से छींक आकर रुका हुआ जुकाम ठीक हो जाता है। इस से शिर दर्द, मूर्च्छा, मृगी आदि भी ठीक हो जाते हैं।

योग-९

राई का तैल पांवों के तलवे और नाक की नोक के आगे मलने से जुकाम निश्चित दूर हो जाता है।

योग—१०

सुहागा भूनकर पीसकर शीशी में रखलें। दो से चार रत्ती, चाय या गरम जल से सेवन करें। दिन में तीन बार देवें। पहले ही दिन में लाभ हो जायेगा। अनुभूत है।

पीनस पर योग—११

निशोथ, एलवा, सत मुलहटी, गोंद कतीरा, यह समभाग ले कर बारीक कूट लें। फिर इस में बादाम तैल मिलाकर एक-एक माशा की गोली बनालें।

मात्रा—दो गोली रात्रि को सोते समय कदोष्ण जल से सेवन करें, लाभ होगा। जिन मनुष्यों को नजला जुकाम बना रहता है उनके लिए यह गोलियां अच्छा कार्य करती हैं। यह विशेष कर गर्मी के जुकाम पर अधिक लाभ करती हैं।

योग—१२

कागफल-१ तोला	कश्मीरी पत्र-१ तोला
कलौंजी-३ माशे	दाना छोटी इलायची-३ माशा
बालछड़-३ माशा	कपूर-३ माशा
लाल चन्दन-३ माशा	चूरा सफेद चन्दन-३ माशा
कचूर-३ माशा	नौशादर-३ माशा
धनियां-६ माशा	फल छोटी कटेरी-४ माशा

इन सब को कूटकर कपड़ छान कर लें। शीशी में भर कर कार्क लगा कर रखें। यह अत्यन्त उत्तम नस्य तैयार हो गई। आप

ने बहुत नस्य देखी होंगी, परन्तु इस प्रकार की नस्य न्यून ही देखने में आई होंगी। आवश्यकता पर प्रयोग करें।

योग—१३

नकछिकनी-१ तोला	रीठा-१ तोला
कश्मीरी पत्र-१ तोला	कालीमिर्च-१ तोला

इन सब को बारीक पीसकर रखलें।

गुण—बन्द जुकाम हो, और छींकें न आती हों, सिर में दर्द हो, उस समय इस की नस्य सूंघायें, और लाभ उठायें।

राजयक्ष्मा, क्षत, क्षीण प्रकरण

इस रोग के कई नाम हैं, राजरोग, राजयक्ष्मा, क्षय (तपेदिक टी० वी०) आदि।

कारण

इस रोग के कई कारण हैं, परन्तु मुख्य कारण तो ब्रह्मचर्य का नाश है। क्योंकि वीर्य इस शरीर का राजा माना जाता है। उस के नाश होने से अन्य दूसरी धातुयें, जो प्रजा रूप में विद्यमान रहती हैं, वह भी साथ सूख जाती हैं, और शरीर कृश हो जाता है। इसलिए मनुष्य राजयक्ष्मा का रोगी हो जाता है। अपनी शक्ति से अधिक भार उठाना, कुश्ती करना आदि भी इस के कारण हैं।

सामान्य लक्षण

कन्धे और पशलियों में पीड़ा, हाथ, पैरों में जलन, तथा ज्वर, कास, जुकाम का बना रहना, दोपहर के पश्चात् ज्वर भोजन करने पर प्रारम्भ होता है।

असाध्य लक्षण

राजयक्ष्मा के रोगी की आंखें सफेद हों, भोजन में अरुचि, श्वास लेते समय छाती में दर्द हो, मूत्र कष्ट से आवे और बार २ आवे इस को असाध्य जाने। पेट और अण्डकोषों पर सूजन हो जावे वह भी अच्छा नहीं हो सकता। तपेदिक के रोगी को अतिसार होने पर असाध्य होता है। यदि रोगी खाता पीता भी सूखता जावे, वह भी अच्छा नहीं होता।

चिकित्सा

प्रथम जिन कारणों से तपेदिक (क्षय) होता है, उन को दूर कर देवे। इस में ब्रह्मचर्य अत्यन्त आवश्यक है। यदि रोगी चिकित्सा करने पर ठीक हो जाता है, और वह रोगी ब्रह्मचर्य को खण्डित कर देवे तो फिर रोग का आक्रमण हो जाता है, और असाध्य कोटि में चला जाता है। इसलिये ब्रह्मचर्य का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

योग (१)

प्रवाल भस्म २ रत्ती अभ्रक भस्म २ रत्ती
स्वर्ण बसन्त मालती रस आधी रत्ती।

इन तीनों को मिलाकर पीसकर रखलें। इस को पतासे में रख कर प्रातः सेवन करावें, और ऊपर से निम्नलिखित शर्बत पिलावें।

दोपहर के समय सितोपलादि चूर्ण जो किसी विश्वस्त आदमी का निर्माण किया हुआ हो। इसे बादाम तैल ३ माशा, शहद ६ माशा मिला कर चटा देवें। रात्रि को सोते समय च्यवनप्राश एक तोला, काली दवा जो इसी प्रकरण में लिखी है, एक रत्ती मिलाकर चटा देवें, और ऊपर से गोदूध अथवा बकरी

का दूध पिलावें। दूध में भी नीचे वाला शर्बत मिला कर पिलावें। इसी प्रकार नित्य देते रहें। दीर्घ काल तक सेवन करने से अवश्य लाभ होगा। अनुभूत है।

(शर्बत नं० १)

वांसा (अडूसा) की जड़	४० तोला	गावजुवाँ	२० तोले
गुलाब के फूल	२० तोला	नीलोफर	२० तोले
बनफशा	२० तोला	मुलहटी	२० तोला
बड़ी इलायची	१० तोला	बीजकद्दू	१० तोला
खीरा के बीज	१० तोला	बिहीदाना	५ तोला
विलायती अंजीर	५ तोला	खूबकलां	१० तोला

निर्माण विधि—इन सब को कूटकर शाम को १२ सेर जल में भिगो देवें, प्रातः अग्नि पर पकावें, आधा जल शेष रहने पर छान-कर खाण्ड ३ सेर अथवा मिश्री डालकर शर्बत बना लेवें, और बोतल में भरकर रखलें। प्रत्येक बोतल में गोदन्ती भस्म १ तोला मिला देवें। यह भस्म बोतल में डालकर ऊपर थोड़ासा शर्बत डालकर हिलाकर मिलालें, जब भलीभांति मिल जावे, शेष शर्बत भर देवें। इसी प्रकार सब बोतलों में भरदें।

मात्रा—शर्बत ३ तोला अर्क सौंफ में मिलाकर दिन में तीन बार प्रयोग करें। इसे उपरोक्त औषधि के साथ प्रयोग करें। यह शर्बत अकेले भी पिलाया जावे तो आप देखेंगे कि शर्बत क्या है, एक अमृत है। २१ दिन में राजयक्ष्मा के अतिरिक्त, कास, श्वास, रक्तपित्त आदि रोगों पर आश्चर्यजनक लाभ करता है।

शर्बत—२

उन्नाव विलायती—४० दाने	लसौड़े—१२० दाने
गोंद कतीरा—१।।। तोला	मुलहटी—४।। तोला
ख़िहीदाना—३ तोला	गोंद बबूल—१।।। तोला
बीज खतमी—४।। तोला	बीज खब्बाजी—४।। तोला
गुल नीलोफर—४।। तोला	गुलबनफशा—४।। तोला
बासा पत्र—१ सेर	खांड़—३ पाव

निर्माण विधि--गोंद कतीरा व बबूल (कीकर) के अतिरिक्त सब दवाओं को कूटकर पकालें। प्रथम शर्बत विधि से शर्बत तैयार करके, फिर गोंद मिला दें।

मात्रा—शर्बत १ तोला अर्क गाजुवां ५ तोला मिलाकर सेवन करें। गुण उपरोक्त शर्बत के समान ही हैं।

काली दवा

शुद्ध शिगरफ से निकाला हुआ पारा—५ तोला

शुद्ध गन्धक आमलासार—५ तोला, इन दोनों को खरल में डालकर घुटाई करें।

एक सप्ताह तक खरल करने पर काले रंग की कजली तैयार हो जायेगी। इस कजली को लोहे की करछुल में डालकर आग पर रखें। जब कजली पिघल जावे, तो इसको सम्भालू की लकड़ी से चलाते रहें। तब तक पकाते रहें, जब तक गन्धक का धुआं बन्न उड़ न जाये। धुआं बन्द होने पर आग से उतार लें, और शीतल होने पर पीसकर शीशी में रखें। यह काले रंग की पारा भस्म है। यह काली दवा ऊपर वाली औषधि में मिलानी चाहिये।

मात्रा अनुपान—आधी रत्ती से एक रत्ती तक, शहद ३ माशा, कालीमिर्च ५ नग, तुलसी के पत्ते २ नग, प्रातः सेवन करावें। इसी प्रकार शाम को प्रयोग करें। ऊपर बकरी का दूध मिश्री मिलाकर पिलादें। यह औषधि क्षय (तपेदिक) के ज्वर, अन्य पुराने ज्वर, को थोड़े ही दिन में दूर कर देती है। इसके प्रयोग से खांसी, श्वास (दमकशी) वमन, हिचकी आदि रोग दूर हो जाते हैं। यह अमूल्य औषधि है। जो उपरोक्त च्यवनप्राश के साथ दी जाती है।

योग—३

महारुद्रदन्ती के फल का चूर्ण—२० तोला
सर्पगन्धा की जड़ के छिलके का चूर्ण—१० तोला
हल्दी कच्ची छोटी गांठ वाली का चूर्ण—५ तोला
आक का ताजा दूध—१ तोला

उत्तम स्वर्ण बसन्त मालती रस—१ तोला, इन सबको इकट्ठा करके सबका बारीक चूर्ण करलें।

मात्रा—४ रत्ती से १ माशा, दिन में २ से ४ बार तक सेवन करावें। सब प्रकार की तपेदिक के लिए यह उत्तम औषधि है। इस योग के निर्माता का कहना है, कि यह मेरा अनुभूत है। हम ने भी प्रयोग किया लाभ करता है।

दाह (जलन) रोग

पित्त के विकृत होने से जलन हो जाती है। तब हाथ पैरों, आंखों तथा सारे शरीर में जलन होती है। जलन रोग पित्त का ही रोग है। उस की जलन पित्त ज्वर के समान ही होती है। आयुर्वेद ने इसे सात भागों में विभक्त किया है।

पित्तज्वरऔरदाहरोगमेंभेद

पित्तज्वर में जलन और ज्वर दोनों होते हैं, परन्तु दाह रोग में केवल दाह (जलन) होती है।

असाध्य लक्षण

मर्माभिघातज—अर्थात् मर्म स्थानों (शिर, हृदय, वस्ति) पर चोट लगने से जो जलन होती है, वह असाध्य होती है। तथा भीतर तीव्र जलन हो, बाहर शरीर शीतल हो वह सब प्रकार की जलन असाध्य होती है।

चिकित्सा योग-१ शर्बत इमली

पुरानी इमली का गूदा एक सेर लेकर शाम को दो सेर जल में भिगो दें। प्रातः आग पर रख कर पकावें। दो तीन उफान आने पर उतार कर मसल कर छान लेवें पश्चात् दो सेर खांड मिलाकर शर्बत की चासनी कर लेवें। गरम-२ ही छान लेवें। शीतल होने पर बोतल में डाल कर रख लें।

मात्रा—१ तोला से ४ तोला, तीन-तीन घण्टे पर देवें।

गुण—इस शर्बत से वमन (कै), पित्त, लू लगना, तृष्णा, हैजा, अजीर्ण, उबकाई; हृदय की गर्मी और शराब गांजादि का नशा दूर हो जाता है।

योग—२

कच्चे आम को भून कर दबा कर रस निकाल लें, खांड मिला कर पीने से, जिस को लू लगी हो, तो आराम आजाता है।

पेट की जलन पर—३

धनियां, सौंफ, दो-दो तोले लेकर कूट कर शाम को जल में

भिगो देवें। प्रातः मसल कर छान कर मिश्री मिलाकर पीवें। इस से पेट की जलन शान्त हो जाती है। यदि एक बार के पीने में पूर्ण लाभ न हो, तो दो तीन बार प्रयोग करें।

योग-४

अर्क गुलाब ५ तोला, अंगूर का स्वरस ५ तोले, चन्दन का तैल १० बूंद, मिलाकर पीने से पेट की जलन शान्त हो जाती है और शक्ति प्राप्त होती है।

योग-५

पैरों के तलवों पर महन्दी के हरे पत्ते पीस कर लेप करने से पैरों की जलन मिट जाती है।

गर्मी की ठण्डाई योग-६

शीशम के सूखे पत्ते (छाया में सुखाये हुए) एक सेर लेकर पीसकर कपड़छान करलें, फिर इस में कालीमिर्च ४ तोला कपड़ छान, और इस में सैक्रीन (खांड का सत) मिला लीजिये, ठण्डाई तैयार है।

प्रयोग—आवश्यकता पर एक तोला लेकर एक पाव जल में मिलाकर पांच मिन्ट तक उलट-पुलट करते रहो, दो गिलासों में जब भलीभांति मिल जावे, फिर पीलेवें। यह ठण्डाई बढ़िया, स्वादिष्ट, शीतल धातुपौष्टिक है। ग्रीष्म ऋतु में अच्छा कार्य करती है। गर्मी के कारण सिर में चक्कर, जलन (दाह) तृषा, हाथ पैरों की जलन, वीर्य का पतलापन आदि रोग दूर होते हैं। अत्युतम है।

ज्ञातव्य—यदि सैक्रीन न मिलावें, तो एक तोला ठण्डाई में, खांड, बूरा, मिश्री इच्छानुसार मिला सकते हैं।

योग-७

रोगी के शरीर पर नवनीत घृत जो सौ बार धोया हुआ हो, मालिश करें, इससे जलन शान्त हो जायेगी।

योग-८

उत्तम सिरका, ईख अथवा जामुन के रस से तैयार किया हुआ हो, वर्फ से शीतल करके एक खद्दर के वस्त्र को भिगोकर शरीर पर लपेट देवें। इस से जलन निश्चित शान्त हो जायेगी। यदि एक बार के प्रयोग से लाभ न हो, तो जब-जब चद्दर गरम हो जाये. पुनः इसी सिरके में शीतल करके लपेटते रहें। तीन-चार बार के प्रयोग से जलन शान्त हो जायेगी।

योग-९

जौ का आटा—४० तोला   कपूर देशी—६ माशे

इन दोनों को बकरी के दूध में पीस कर सारे शरीर पर लेप करने से जलन मिट जाती है।

योग-१०

केले के पत्ते शरीर पर लपेट देने अथवा शय्या पर बिछा देने से जलन मिट जाती है।

योग-११

पेट पर कांसे का पात्र रख कर उस पात्र में शीतल जल की धार डालने से जलन शान्त हो जाती है। कांसे का पात्र जल से भर जावे तब उसको खाली करके पुनः उसी प्रकार जल की धार देवें इसी प्रकार कई बार करने से लाभ होगा।

योग-१२

धनियां दो तोले शाम को एक पाव जल में मिट्टी के ताजा पात्र में भिगो देवें। प्रातः मलकर छानकर मिश्री मिलाकर पीने से जलन में लाभ होता है।

दाहान्तक क्वाथ योग-१३

पित्त पापड़ा, खस, अडूसा पत्र, नागर मोथा, लालचन्दन, पद्माख। प्रत्येक तीन-तीन माशे लेकर जौकुट करके आध सेर जल में शाम को भिगो दें, प्रातः एक दो उबाल देकर उतार कर छान लेवें। शीतल होने पर मिश्री मिलाकर पीवें। दिन में दो बार पीवें। इससे जलन में लाभ होगा।

रसादि बटी योग—१४

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, कपूर, सफेद चन्दन, वालछड़, नागर मोथा, खश, प्रत्येक १-१ तोला।

निर्माण विधि—प्रथम पारा गन्धक की कजली करें, फिर कपूर डाल कर खरल करें, फिर अन्य औषधियों का चूर्ण मिलाकर बढ़िया अर्क गुलाब अथवा एक भाग बुरादा चन्दन सफेद, दो भाग जल मिलाकर शाम को भिगो कर प्रातः खूब मसल कर छान लें। इस चन्दन के छने हुऐ जल से दो दिन खरल कर के दो-दो रत्ती की गोलियां बनालें। छाया में सुखा कर सुरक्षित रखें। यदि इस योग में छोटी इलायची तथा नारियल दरियाई भी एक-एक तोला मिला दिया जावे, तो उत्तम योग हो जाता है।

मात्रा—एक से तीन गोली अर्क गुलाब, अर्क पोदीना, शहद, दिन में दो, तीन बार देवें।

गुण—वमन (कै) उबकाई, हिचकी, तृषा, जलन में लाभ करती है। जब ज्वर का वेग अधिक हो, तृषा बेचैनी, जलन से

तड़प रहा हो, उस समय इसके देने से लाभ हो जाता है। ज्वर की गर्मी को शान्त करके तृषा को मिटाता है। यदि जहर मोहरा भस्म भी साथ प्रयोग की जावे, तो उत्तम रहेगा।

उन्माद रोग निदान

कारण—प्रतिकूल (विरुद्ध) भोजन करने से, धर्मात्माओं का अपमान करने से, भय, शोक, हर्ष आदि होने से, मन पर आघात होने और प्रकृति के विरुद्ध आचरण करने से अर्थात् विषयुक्त तथा नशीले पदार्थों के सेवन करने से, व्रत (उपवास) करके भोजन न करना, और वीर्य के क्षय करने से उन्माद रोग हो जाता है।

सामान्य लक्षण

उपरोक्त कारणों से मस्तिष्क में विकार आजाता है, वह मनुष्य बिना कारण ही, हंसता, रोता है, बिना बात गाली देता, नाचता है, गाता है। स्मृति नितान्त नहीं रहती, भोजन आदि छोड़ देता है। निद्रा नहीं आती, बहुत बकवास करता है, अथवा मन्द बोलता है और निद्रा में ही पड़ा रहता है उठाने से भी नहीं उठता और बोलने पर बोलता ही नहीं, चुप रहता है (यह कफज उन्माद में होता है) उन्माद रोग को आयुर्वेद ने छः प्रकार का बतलाया है।

असाध्य लक्षण

१- उन्माद रोगी मुख को नीचे की ओर रखे, अथवा ऊपर की ओर रखे, और शरीर सूख कर कमजोर होगया हो, दिन रात निद्रा न आवे, वह उन्माद रोगी असाध्य है।

२- आंखें तिरछी हो जावें, नेत्रों की पलक चलती रहें, निद्रा जैसी अवस्था रहे, चला, फिरा न जावे, शरीर में कम्प हो, ऐसा उन्माद का रोगी अच्छा नहीं हो सकता।

चिकित्सा

उन्माद के रोगी के शरीर पर प्रातः शीतल जल की धा
डालने, तथा ध्यान परिवर्तन करने से लाभ हो जाता है।

योग—२

हरड़ छाल—५ तोला
आमला छाल—५ तोला
बहेड़ा छाल—५ तोला
निशोथ—२॥ तोला
बिस्फायज—२॥ तोला
अफतीमून—२॥ तोला
उस्तोखद्दूस—२॥ तोला

विधि—इन सबको कूटकर कपड़छान करलें, दो माशे से ती
माशे मधु में मिलाकर दोनों समय प्रयोग करें।

गुण—सोते-सोते स्वप्न में डरना, उन्माद, अपस्मार, वा
कफ को रेचन द्वारा निकाल देता है।

सरस्वती बटी योग—३

ब्राह्मी, शङ्खपुष्पी, मीठी वच, कूठ, जठामासी, मालकांगनी
कायफल, शुद्ध कुचला, केशर, मुक्ताशुक्ति भस्म, अभ्रक भस्म, र
सिन्दूर, प्रत्येक—१-१ तोला, सर्पगन्धा—१ सेर

निर्माण विधि—सर्पगन्धा को जवकुट कर ८ सेर जल में २
घण्टे भिगो कर अनन्तर अग्नि पर चढ़ा कर २ सेर क्वाथ शेष रहे
पर छानकर रखलें, पुनः अग्नि पर चढ़ा कर मन्दाग्नि द्वा
पकाना। पकते समय क्वाथ में ५ तोला गोघृत डालदें। क्वाथ प
कर गाढ़ा हो जाये तब अग्नि पर से उतार लेवें. घनसत्व शीत
होने पर खरल में डाल कर उपरोक्त पिसी हुई औषधियों को मि

कर गुलाब जल डाल कर खूब खरल करें। जब गोली बनाने जैसा हो जावे, तब दो-दो रत्ती की गोली बनालें, और छाया में शुष्क करके रख लें।

अनुपान—एक से दो गोली, गोदुग्ध अथवा शीतल जल, प्रातः सायं अथवा रात्रि में सोते समय, अहोरात्र में तीन बार।

गुण—रक्तसम्भार, निद्रानाश, उन्माद, अपस्मार, योषापस्मार, मूर्च्छा, भ्रम आदि रोगों में पूर्ण लाभ करता है। भोजन में सात्विक भोजन, गोदुग्ध, गोदधि, गोतक्र, गोघृत, ऋतु अनुकूल अच्छे फल, और शुभ स्वच्छ विचार रखें।

निद्रा लाने वाली औषधी योग—४

मालकांगनी, जटामासी, सर्पगन्धा, प्रत्येक ५-५ तोले लेकर कूट कपड़छान करके रख ले, फिर १० तोला मिश्री मिला लें।

गुण—३ माशे चूर्ण, उत्तम सिद्ध मकरध्वज विश्वस्त रसायन शाला द्वारा निर्मित १ रत्ती मिलाकर और इस मात्रा को गोदुग्ध (गरम करके ठण्डा किये हुये) के साथ प्रयोग करावें। इस को उन्माद, मूर्च्छा, अपस्मार, चित्तभ्रम आदि रोगों में देवें। रोगी को जब दिन रात कभी भी निद्रा न आती हो, आंखें लाल रहती हों, रोगी असम्बद्ध भाषण करता हो, कपड़े फाड़ने की कुचेष्टा करता हो; तब इस दवा का प्रभाव देखें, नित्य कुछ दिन सेवन कराते रहने से उन्माद रोग जड़ से चला जायेगा, अनुभूत है।

योग—५

शंखपुष्पी-१ तोला
ब्राह्मी पत्र-७ नग
पेठा के बीज-२१ नग
बादाम गिरी-७ नग

सबको ठण्डाई की तरह १० तोला जल में घोटकर छानकर

मिश्री मिलाकर उसके साथ मोती भस्म—पांच रत्ती, मुक्ताशुक्ति-आधा रत्ती प्रवाल भस्म-आधा रत्ती इन सबको मिलाकर सेवन करें, ऊपर वही ठण्डाई पीवें। दिन में दो तीन बार पीने से पहले ही दिन में लाभ प्रतीत होंने लगेगा। जो उन्माद का रोगी कई दिन से नहीं सोया हो, वह अच्छी प्रकार से सो जायेगा। राजवैद्य कृष्णदयाल जी का अनुभूत है।

योग–६

गोमूत्र १० तोला से २० तोला प्रतिदिन पिलाने से पागल निश्चित अच्छा हो जाता है।

नस्य योग–७

यह नस्य उन्माद के उस रोगी पर लाभ करती है जो बोलता नहीं और निद्रा की अवस्था में रहता है, भोजन नहीं करता, उस समय इस औषधि का प्रभाव देखें।

कड़वी तोरई का गूदा छिलका हटा कर लेकर शाम को जल में भिगो दें और रात को बाहर ओस में रखें, प्रातः छानकर नाक में डालें और नीचे को मुख करादें, इससे पीले रंग का नाक से जल निकलेगा, यदि नाक में कीड़े होंगे तो एक एक करके सब बाहर गिर पड़ेंगे। जिस उन्माद के रोगी को डाक्टर विद्युत् लगाकर भी अच्छा नहीं कर पावे, वह इस नस्य से अच्छा हो जाता है। इस नस्य से नाक में जलन होती है, परन्तु अपने आप हीं ठीक हो जाती है। यदि इसकी एक मात्रा से लाभ न हो, कुछ कमी रह जावे तो एक सप्ताह पश्चात् दूसरी बार यही क्रिया करें। नस्य वाले दिन सुपाच्य दूध साबुदाना पतली खिचड़ी का सेवन करायें। इस से कामला, और सिर दर्द, आधा शीशी, जिस से नेत्रों में असह्य पीड़ा होती है तत्काल अच्छे हो जाते हैं।

लेप मस्तिष्क पर योग-८

खड़िया मिट्टी-१ सेर कल्मीशोरा-१ पाव
अफीम-६ माशा, सब को रेक्टीफाईड स्प्रिट में मिलाकर सिर पर लेप करें। लाभ होगा।

मृगी नस्य योग-९

अमरबेल का रस-१ सेर नाग केशर-५ तोला
कृष्ण धतूरा बीज-५ तोला वच-५ तोला

विधि—काष्ठादिक औषधियों को कूटकर शाम को दो सेर जल में भिगोदें, प्रात:काल क्वाथ कर, चतुर्थांश शेष रहने पर छान कर, उस में अमरबेल का स्वरस तथा आध सेर सरसों का तैल भी मिलादं। क्वाथादि जलकर तैल मात्र शेष रहने पर निथार कर शीशियों में भरलें।

गुण—मात्रा—तीन से छः बूंद रोगी को सीधा लिटाकर नासिका में डाल। यह तैल नस्य अपस्मार, उन्माद के लिये उत्तम है। इसके साथ उपरोक्त कोई भी दवा खिलाने से मृगी भी ठीक हो जाती है तथा यह नस्य प्रयोग करें। आशातीत लाभ होता है। इस के अतिरिक्त ब्राह्मी घृत इस रोग के लिए महौषधि है। और मृगी के लिए, दीर्घ समय तक देने से लाभ होता है।

वात रोग प्रकरण

कारण

रूक्ष, शीत, उपवास, अति उपवास, अति जागरण, जल में अधिक तैरना, चोट लगने, चिन्ता, शक्ति से अधिक व्यायाम करने,

तीव्र चलनेवाली सवारियों में बैठने, मल मूत्रादि के रोकने से, धातुओं के न्यून होने से इत्यादि कारणों से वात रोग होने की सम्भावना होती है।

सामान्य लक्षण

सन्धियों का जकड़ जाना, हड्डियों का और जोड़ों का टूटना, रोमांच, प्रलाप, हाथ, पैर, पीठ, सिर का गतिहीन होना, लंगड़ा, कुबड़ा होना, अंगों का सूज जाना, निद्रा का न आना, अंगों का फड़कना अथवा सूजना, मुख, गरदन का टेढ़ा हो जाना, शरीर में अत्यन्त पीड़ा होना, आदि लक्षण कुपित वायु के होते है। ऋतु एवं स्थान भेद से भिन्न २ रोगों को उत्पन्न करता है।

असाध्य लक्षण

दर्द के कारण कभी भी चैन नहीं पड़ता है। त्वचा का स्पर्श ज्ञान जाता रहता है। त्वचा फटी हुई हो, हड्डी कडकती हों, हर समय अफारा रहता हो, रोगी अत्यन्त कमजोर हो गया हो, ऐसा वात का रोगी अच्छा नहीं होते देखा। आयुर्वेदाचार्यों ने इस की गणना ८० प्रकार की करी है।

पक्षाघात (अर्धांग)

शरीर के दक्षिण (दायां) अथवा वाम (बायां) भाग में रहने वाला वायु विकृत हो जाता है। जब मनुष्य का एक भाग निरर्थक अर्थात् कार्य करने में समर्थ नहीं होता पैर, हाथ, कानादि एक ओर का भाग सुन्न हो जाता है और सूई चुभाने से दर्द नहीं होता। कई रोगियों के आधे नीचे के भाग कई रोगियों के ऊपर वाले भाग में यह रोग हो जाता। इस रोग का आक्रमण कभी कभी अकस्मात् पड़ता है, और कभी-२ धीरे-२ पड़ता है। इस रोग में धीरे वाले आक्रमण में थोड़ा-२ दर्द होता है, और पीछे उस अंग में

स्पर्श ज्ञान कम हो जाता है। शनैः शनैः बेकाम हो जाता है। इस रोग में, बोलने में, ज्ञान तथा स्मरणशक्ति में न्यूनता आजाती है। यदि इस रोग का मस्तिष्क पर प्रभाव हुवा. तो वह बोल नहीं सकता, अर्थात् तुतला कर बोलता है। स्वभाव चिड़-चिड़ा हो जाता है।

पक्षाघात का साध्य, असाध्य लक्षण

केवल वायु का पक्षाघात अत्यन्त कष्ट साध्य होता है और धातुओं के क्षय से होने वाला पक्षाघात असाध्य होता है। जिस में पित्त मिला हुवा हो, उस में बाहर अथवा भीतर जलन होती है। यदि कफ मिला हुवा हो. तो शोथ हो जाता है, और अङ्ग शीतल होता है, इनके मिलने से रोग साध्य होता है।

पक्षाघात की चिकित्सा

सर्वप्रथम उपद्रवों की चिकित्सा करें। आयुर्वेद ने लिखा है–

विसर्प. दाह, रुक्, संग, मूर्च्छा, रुच्यग्नि-मार्दवैः।
क्षीण-मांस-वलं बालाः घ्नन्ति पक्षवधादयः॥

अर्थ—पक्षाघात के यह घातक उपद्रव हैं, दाह की अधिकता, दर्द की अधिकता, बेहोशी, अरुचि पाचकाग्नि का मन्द होना, मांस क्षीणता, अशक्त बच्चे अथवा बूढ़े के पक्षाघात, उपद्रवों सहित हों तो वह मृत्यु को ही प्राप्त होता है। इस को ध्यान में रखते हुये, उपद्रवों को प्रथम शान्त करें। सात दिन दशमूल क्वाथ अथवा शहद युक्त गरम जल देवें। रोग के प्रारम्भ में अन्न बन्द कर देना चाहिए। यदि ज्वर हो, तो मृत्युञ्जय रस का प्रयोग तीन तीन घंटे में दशमूल क्वाथ के साथ करायें। दशमूलारिष्ट और दशमूल अर्क देवें। जल के स्थान पर दशमूल अर्क ही देवें, यह न मिल सके, तो उष्ण जल देवें, इस से ज्वर सरलता से उतर जायेगा। औषधि की मात्रा रोग के अनुसार कम कर देवें।

जीभ के न मुड़ने पर

योग—१

राई और अकरकरा असली असली समान लेकर पीस लो, और मधु मिलाकर जीभ पर मसलो, इस से रोग के साथ उपद्रव भी मिट जायेंगे। इससे अर्दित रोग भी मिट जाता है।

योग-२

केवल अकरकरा पीसकर मधु मिलाकर जीभ पर मर्दन करो, लाभ होगा।

योग—३

महानारायण तैल अथवा अन्य कोई वातनाशक तैल लेकर सिर पर मालिश करें। यदि कानों से सुनना वन्द हो गया हो, तो गरम करके कानों में डाल लें। इस रोग में कब्ज का विशेष ध्यान रखें। अरण्ड का तैल, दशमूलक्वाथ में डालकर अथवा महा—रास्नादि क्वाथ मिलाकर पिलावें।

योग—४

हरमल के वीज १० तोला लेकर पोटली बांधकर दो सेर गोदुग्ध में दोलायन्त्र से पकावें। (पोटली को दूध के पात्र में लटकावें, तल भाग में स्पर्श न करे) जब दूध पकते-२ आध सेर रह जावे, उस समय पोटली को दूध में ही हाथ से दवा कर निचोड़ देवें और बाहर निकाल कर फैंक देवें। उस आध सेर दूध में १० तोला गौ का घी और ५ तोला खांड मिलाकर (चीनी न मिलावें) गरम-गरम ही पिलादें, और रजाई आदि कोई गरम वस्त्र ओढ़ाकर सुला दें। इस से खूब पसीना आयेगा। इस प्रकार नित्य चार दिन करें। अवश्य लाभ होगा।

योग-५

सन के बीज—१ तोला, शुद्ध संखिया—१ रत्ती

दोनों को पीसकर रखें, बस दवा तैयार है। तीन-तीन माशा, शहद के साथ प्रातः सायंकाल प्रयोग करें। औषधि देते ही ऊपर गोमूत्र पिलावें, भोजन में गोघृत का सेवन करें, और सरसों के तैल में कालीमिर्च पीसकर मालिश करें, लाभ होगा। परीक्षित है। कुछ दिन नित्य प्रयोग करें। वैद्य श्री रामसिंह जी ग्राम मोरखेड़ी जिला रोहतक वालों का विशेष अनुभूत है।

योग—६

एक गड्ढ़ा इतना गहरा और चौड़ा खोदें, जिस में मनुष्य सुख पूर्वक सरलता से बैठ सके, उस में उपले भरकर अग्नि लगादें, जब गड्ढ़ा लाल हो जाये, तो अग्नि समेत राख को बाहर निकाल लें, फिर आक के हरे पत्ते जो उसी समय लाये गये हों, भर देवें, जब पत्ते गरम होकर वाष्प उड़ने लगे, और भीतर की गर्मी सहन करने योग्य हो जावे, तब रोगी को ऊन का पतला वस्त्र लपेट कर गड्ढ़े में बिठादें, मुख को खुला रखें, वाष्प मुख पर न लगने पावे, यह क्रिया निर्वात स्थान पर करें, जब रोगी पसीने से तर ब तर हो जावे, तब रोगी को उसी कमरे में वस्त्र लपेटे हुये ही निकाल कर पसीना पूछें और शय्या पर लिटा देवें, दूसरे दिन प्रातः रोगी को अरण्ड बीज छः माशा पीसकर बादाम तैल में भूनकर शहद के साथ चटादें, इससे वमन और अतिसार होंगे, पश्चात् उस को उसी गड्ढ़े में पहले की भांति बिठा देवें, और वाष्प देवें, इस प्रकार तीन दिन के प्रयोग से असाध्य रोग दूर हो जाता है। शरीर पर छोटी-छोटी फुंसियां निकल आती हैं, जो दूसरे अथवा तीसरे दिन स्वयं मिट जाती हैं। रोगी को ज्वर भी चढ़ जाता है, किन्तु उस से कोई भय नहीं करना चाहिए।

पक्षाघात नाशक पाक योग—७

सन के बीज, पिस्ता, कागजी बादाम की गिरी, तीनों को एक एक पाव लेवें, सबको अलग अलग गोघृत में भून लेवें फिर सब का चूर्ण बना कर छान लेवें, पश्चात् ६० तोला खांड लेकर उसकी चासनी वनाकर पाक विधि से पाक वनाकर थाली में घी चुपड़ कर जमादेवें। एक एक तोला की चकली काट कर रख लेवें। प्रातः शाम एक एक तोला पाक खिला कर ऊपर से घी, मिश्री मिला हुआ गोदूध पिलावें। इससे अशक्ति दूर होगी पक्षाघात भी तेजी से ठीक होगा। इस के साथ ही पक्षाघात नाशक तैल का भी प्रयोग करें। यह योग वैद्य पं० चन्द्रशेखर जी जैन जबलपुर का अनुभूत है तथा दो योग उन्हीं के नीचे दिये जा रहे हैं।

पक्षाघात नाशक तैल योग—८

बाबूना का तैल—५ तोला, तिल का तैल—१० तोला, काली-मिर्च बारीक चूर्ण—२॥ तोला, इन सब को मिलाकर रखलो, पश्चात् एक कटोरी लेकर आग पर गरम करो, जब वह गरम हो जावे, तो उसको आग पर से हटाकर रखलो, उस कटोरी में उपरोक्त तैल—२॥ तोला डाल दो, जब वह गरम हो जावे, तो इस तैल की हल्की-हल्की मालिश रोगी के शरीर पर करावो। चाहो तो लेप की भांति करदो, और धूप में बिठा दो, बहुत बार का अनुभूत है। इसके साथ पक्षाघात विनाशक बटी भी देवें, तो बहुत शीघ्र लाभ होगा।

पक्षाघात विनाशक बटी योग—९

शुद्ध कुचले का बारीक चूर्ण—१ तोला,
काले सर्प की कांचली बारीक कतरी हुई—१ तोला,

मल्लचन्द्रोदय, अथवा मल्लसिन्दूर–१ तोला,
असली कस्तूरी–१ तोला.

विधि—सब को मिलाकर खूब घोट लो। फिर रासना के स्वरस के आठ घण्टे तक घोट कर आधी-आधी रत्ती की गोली बनालें। प्रातःसायं एक-एक गोली खिलाकर ऊपर से रास्नादि क्वाथ के साथ प्रयोग करें। अवश्य लाभ होगा।

योग–१०

शुद्ध हरताल वर्की एक तोला को उत्तम पत्थर की खरल में डालकर खूब बारीक पीसकर पश्चात् कालीमिर्च एक-एक डाल कर खरल करते रहें, पहली मिर्च भलीभांति खरल होने पर दूसरी डालें, इस प्रकार चार तोला शामिल करदें, जब चार तोला कालीमिर्च हरताल में मिल जावे, उस के पश्चात् २१ दिन खरल करें। औषधि तैयार है।

मात्रा—आवश्वकता पर एक रत्ती से चार रत्ती औषधि लिवें, और दो रत्ती उत्तम रससिंदूर पीस कर मिलाकर मुनक्का में रख कर दिन में दो बार सेवन करावें। यदि पक्षाघात पुराना हो, अथवा अधिक बढ़ा हुआ हो, तो इसी औषधि में शुद्ध कुचला का बारीक चूर्ण एक से दो रत्ती मिलाकर सेवन करावें। यद्यपि पक्षाघात रोग कठिनता से अच्छा होता है।

ज्ञातव्य—बालक, वृद्ध, गर्भवती स्त्री का पक्षाघात तो प्रायः असाध्य होता है। इस योग से मैंने साठवर्षीय कई बुड्ढों को अच्छा किया है। युवक बलवान् और नवीन रोग तो इस की कुछ मात्रा में ही अच्छा हो जाता है। इस में घृत आदि पौष्टिक पदार्थों का सेवन करना चाहिये। और महानारायण तैल की

.लिश करें, ऊपर अरण्ड या आक के पत्ते इसी तैल में चुपड़ कर गरम करके लपेट देवें। उस पर गरम वस्त्र अथवा रूई बांध देवें। अनुभूत स्वर्गीय राजवैद्य कृष्णादयाल जी अमृतसरी।

योग–११

सन के बीज-१ तोला   शुद्ध भिलावे की मींगी-६ माशे

इन दोनों को कूटकर खूब गोघृत डालकर हलवा बनालो, और रोगी को खिलादो, २१ दिन तक यह योग सेवन करते रहें। इस से रोग निर्मूल हो जायेगा। कब्ज (मलवद्धता) न होने पावे। सोते समय सनाय, मिश्री और बादाम तैल मिला कर देवें।

योग–१२

कब्ज के लिए सोंठ—तीन माशा, अरण्ड का तैल—तीन तोला दूध में मिलाकर देवें। इससे दो तीन मल शुद्धि होकर पेट साफ हो जाता है।

पक्षाघात पर स्वेद योग–१३

पक्षाघात के रोगी को खाट पर एक वस्त्र बिछा कर लिटा देवें। वस्त्र न अधिक मोटा हो, न अधिक बारीक हो. सामान्य हो, ओढ़ने के लिये ऊपर कोई मोटा कम्बलादि से ढांप दें, मुख खाली रखें, आंखे बन्द करवा देवें, क्योंकि धुआं नेत्रों पर न लगे। इस खाट के नीचे बिना धुयें की आग रखें, और खाट के चारों ओर एक मोटा वस्त्र लपेट देवें। इस से आग पर डाली हुई औषधि का धुआं बाहर न जाने पावे। उस आग पर सन के बीज डाल देवें। इन बीज़ों का धुआँ उठ कर रोगी के शरीर पर लगेगा और पसीना निकलेगा। इसी प्रकार पहले बीज जलने पर पुनः डालते रहें, तथा

साथ-साथ रोगी के शरीर का पसीना भी साफ तोलिया से पूंछते रहें। नीचे वाली आग लम्बी बिछालें। सिर पैरों तक होनी आवश्यक है। जब पसीना आना बन्द हो जावे, तो बीज डालना बन्द करदें, और कम्बलादि कपड़ा जो ओढ़ा रखा है, दूर करके दूसरा कपड़ा पहनादें, और आग भी हटा दें। इस के पश्चात् नीचे लिखा हुआ क्वाथ, जो पहले ही बनाकर तैयार किया हुआ हो, तुरन्त पिला देवें।

क्वाथ—अरण्ड की जड़ की छाल, कौंच के बीज, खरैंटी की जड़, साबुत उड़द—इन सबको ६-६ माशे लेकर आध सेर जल में पकावें। जब आठ तोला शेष रहे, उतार कर छान लेवें। इस में भुनी हुई हींग १ माशा, सैंधा नमक ३ माशे मिलाकर रोगी को पिला देवें, और क्षुधा लगने पर इस क्वाथ के पश्चात् मूंग, चावल समान लेकर खिचड़ी बनाकर रखलें। रोगी जितना खा सके, गोघृत मिलाकर खिला देवें। खिचड़ी पतली होनी चाहिये। शाम को इसी प्रकार क्वाथ और खिचड़ी खाने को देवें।

पक्षाघात रोगी के लिए आवश्यक बातें

१- रोगी को आठ दस दिन स्नान न कराना चाहिये, पश्चात् उष्ण जल से स्नान करावें।

२- रोगी शीतल जल न पीवे, गरम जल ही पीवे, गर्मी में उबाल कर शीतल होने पर पीवे।

३- रोगी पूर्ण ब्रह्मचारी रहे, अच्छा होने पर भी न्यून से न्यून चार मास ब्रह्मचर्य रखे।

४- कब्ज का दूर करना अत्यावश्यक है।

५-शीतल वायु से बचे, विशेषकर पूर्वी वायु से।

६- रोगी को क्रोध न करने देवें और तीव्र आघातजन्य समाचार न सुनावें।

७- रोगी को संज्ञा का ज्ञान न हो, अथवा बेहोश हो, तो उसे चेतना में लाने का उपाय करें। कोई साधारण-सा नस्य देवें। तीव्र न देवें।

८- रोगी को निद्रा न आती हो, तो नींद लाने का उपाय करें। नेत्रों में अंजन निद्रा वाला अथवा, खाने के लिये सर्पगन्धा एक माशा का प्रयोग करें और जब तक अच्छी नींद न आवे, प्रयोग लगातार अन्य औषधियों के साथ सर्पगन्धा का भी करते रहें।

९- रोगनाशक तैल की नित्य प्रति मालिश करते रहें, अच्छा होने पर यदि नित्य न करें, तो तीन चार दिन अवश्य करें।

१०. पक्षाघात के रोगी को वर्षा और हेमन्त ऋतु (सर्दी) में सावधान रहना चाहिये, क्योंकि इन दिनों में रोग के आक्रमण का भय रहता है।

११- पक्षाघात पौष्टिक आहार के अभाव के कारण अधिक होते हैं, इसलिए दूध, घी, बादाम इत्यादि का सेवन करना लाभदायक है।

१२- रोगी को नवीन रोग में विश्राम करना चाहिये और जब रोग ठीक हो जावे, तो हल्का व्यायाम तथा भ्रमण आदि अधिक देर तक खड़ा रहना आदि कार्य करना चाहिये। जो रोगी चल फिर सकता हो, उसे चलाओ फिराओ, चाहे लाठी के सहारे चले, हठ भी न करो, अन्यथा गिर पड़ेगा।

अर्दित (लकवा) रोग

कारण—इस रोग को मुख का बांक हो जाना तथा भंगेड़ मारना भी इस प्रान्त में कहते हैं। ऊंचे स्वर से बोलना, अत्यन्त कठिन पदार्थों का चबाना, अधिक हंसना, जोर से जँभाई लेना, सिर पर अधिक भार उठाना, ग्रीवा टेढी करके सोना आदि कारणों से अर्दित रोग हो जाता है।

लक्षण

सिर, नाक, ओष्ठ, ठोडी, मस्तिष्क एवं नेत्र की संधियों का कुपित वायु मनुष्य के चेहरे को पीड़ित करके लकवा कर देता है। इस में मुख की एक ओर की नस नाड़ियां अकड़ जाती हैं और मुख टेढा हो जाता है तथा मनुष्य एक ही तरफ देखता है, सिर काँपने लगता है, बोला नहीं जाता, आँख, नाक, कपोल में दर्द होता है। फूँक नहीं लगा सकता।

असाध्य लक्षण

धातुयें क्षीण हो चुकी हों, पलक तक न झांप सके, अच्छी प्रकार से न बोल सके, नेत्र, मुख और नाक से पानी बहता हो, शरीर कांपता रहे अथवा तीन वर्ष पुराना अर्दित रोग असाध्य होता है। ऐसे रोगी की चिकित्सा विचार पूर्वक करें, क्योंकि इस प्रकार का रोगी अच्छा नहीं होता।

चिकित्सा योग—१

रोगी को अंधेरे कमरे में रखो और भोजन बन्द कर दो, शहद का पानी जोश देकर पिलाकर जायफल मुख में रखो। इस प्रकार से दो तीन दिन में ही ठीक हो जायेगा।

योग—२

जिस ओर लकवा लगा हो अर्थात् मुँह टेढा हो, उसी ओर के कान में औषधि का बफारा दो। अरण्ड के पत्ते, संहजना के पत्ते, आक के पत्तों को उबाल कर बफारा देना चाहिये। अथवा दूसरी कोई औषधि जो वात रोग में स्वेदन क्रिया के काम में ली जाती हो, उपयोग में लानी चाहिये।

योग—३

रोग प्रारम्भ होते ही रेचन कराना चाहिये, शराब आदि मादक द्रव्यों का त्याग करदें।

योग—४

महानारायण तैल को एक कटोरी में डालकर गरम करें, और उस तैल में नमक की पिसी हुई दो पोटली बनाकर डुबो-डुबो कर सेक करें। इससे शीघ्र लाभ हो जाता है और महानारायण तैल की सेक करने के पश्चात् निगुंण्डी (सम्भालु और अरण्ड के पत्ते जल में उबालकर कपड़े की पोटली में उन पत्तों को बांधकर गर्दन, गाल (कपोल) जबड़े पर सेक करें।

योग—५

यदि जीभ में अकड़ाहट हो, तो सैंधा नमक, सौंठ, काली मिर्च, पीपल, अम्लवेत को समान लेकर बारीक चूर्ण करके दिन में तीन चार बार जीभ पर मर्दन करो, अकड़ाहट नष्ट हो जायेगी और स्वाद ग्रहण शक्ति प्राप्त होगी, साथ ही वाणी शुद्ध हो जायेगी। मुख से गिरने वाली लार भी धीरे-धीरे बन्द हो जायेगी।

योग—६

राई ६ माशा — अकरकरा ६ माशा

इन दोनों को बारीक पीसकर शहद में मिलाकर दिन में तीन चार बार जीभ पर घिसें। इसके उपरोक्त योग के समान ही गुण हैं।

लेप योग—५

गूलर का दूध २ तोला निकालकर इस दूध में लहसुन को पीस लेवें, लहसुन उतना पतला हो जितना लेप हो जावे, इस लेप को अर्दित से दूसरी ओर अर्थात् जिस ओर मुख टेढा हो, उस के विपरीत इसका लेप करदो और उपले की आग से सेक करदो, जब तक लेप सूखे। यह लेप दिन में एक बार ही लगावें। इस प्रकार तीन चार दिन में लाभ हो जायेगा। लेप नित्यप्रति करना चाहिये।

लेप योग—८

पुनर्नवा (सांठी) की जड़ को पीसकर थोड़े से जल में घोलकर गरम करके अर्दित के रोगी के विपरीत मुख पर लेप करें, पश्चात् सेक करें। एवं उपरोक्त योग के समान क्रिया करें।

लेप योग—९

यह योग बड़ा आश्चर्यजनक है और अनेकों बार परीक्षित है, वर्षाकाल में एक लता उत्पन्न होती है जो झाड़ आदि वृक्षों का सहारा लेकर चढ़ती है। इसके पत्र तीन-तीन गवार की तरह के होते हैं. फल गुच्छों में होते हैं। कच्चे, हरे तथा पकने पर लाल, काले होते हैं। इसको हरयाणा में रामचना आदि कहते हैं, कुछ वैद्य इसी को अत्यल्पपर्णी भी कहते हैं। इसका कन्द (जड़) आलू अथवा शकरकन्द जैसी चिकनी लम्बी और गोलाकार होती है, स्वाद आलू जैसा होता है। एक लता के नीचे कई जड़=कन्द होते हैं। इस बेल के पत्ते वर्षा समाप्त होने पर सर्दी में गिर जाते हैं।

इसलिये वर्षाकाल में ही इसका स्थान देख लेवें अथवा निकालकर रखें ताजा अधिक लाभ करता है। उस मूल को आवश्यकता पड़ने पर निकाल लेवें और जल से पत्थर पर घिस उपरोक्त विधि के अनुसार लेप करें। एक सप्ताह में निश्चित लाभ हो जाता है।

ज्ञातव्य—गौ, भैंस आदि जब जेर न डालती हो, तो एक पाव डेढ पाव इसका कन्द लेकर दो सेर पानी में पकावें, लगभग तीन पाव रहने पर उस क्वाथ को रोगी पशु को पिलावें, इससे एक डेढ़ घण्टे के अन्दर अन्दर ही जेर डाल देगी। अनेक बार का अनुभव है।

योग—१०

शुद्ध शिंगरफ ६ माशे — शुद्ध हरताल तपकी ६ माशे
शुद्ध कुचला ६ माशे — शुद्ध बछ नाग ६ माशे

विधि—सबको बारीक पीसकर अदरक के स्वरस में दो तीन दिन खरल करें। पश्चात् चने समान गोली बनालें, एक-एक गोली प्रातः सायंकाल गौ के घृत चार तोला के साथ प्रयोग करें। यदि रोगी को कब्ज हो, तो गोदूध में एरण्ड तैल एक एक तोला मिलाकर गोलियों के साथ पिलाओ। इन दोनों अनुपानों में से एक अनुपान देवें। इस औषधि के साथ लेप अथवा महानारायण तैल का भी प्रयोग करें तो शीघ्र लाभ होगा।

योग—११

उत्तम षड्गुण बलिजारित मल्लचन्द्रोदय अथवा मल्लसिन्दूर ५ तोला, शुद्ध गन्धक आमलासार २ तोला दोनों को मिलाकर ४ घण्टे भलीभांति मर्दन करें। बारीक होने पर शीशी में सुरक्षित रखें। इसको एक से दो रत्ती लेकर अदरक स्वरस और शहद के साथ मिलाकर चटाओ। पथ्य में गेहूं की रोटी और बकरी का दूध दो। इसके सेवन से पक्षाघात अर्दित जैसा हठी रोग दूर होते हैं।

लकवे के श्वास रोग पर योग–१२

जिस रोगी को श्वास रोग हो, पश्चात् अर्दित (लकवा) रोग हो जावे तो उस रोगी को प्रतिदिन १ पाव उत्तम गुड़ खिलाओ और अन्न देना नितान्त बन्द करदो, कोई भी भोजन न दो, प्यास लगने पर गरम जल पिलाओ, १५ दिन में पूरा लाभ हो जायेगा। यदि कुछ कमी रह जाये तो और खिलादो। इस औषधि की अधिक मात्रा अथवा गर्मी बढ़ने का कोई भय नहीं। सरल प्रयोग है।

—०:०—

गृध्रसी (रांगड़) रोग

निदान—प्रथम कूल्हे में दर्द होकर पश्चात् कमर, सांथल (जंघा) घुटने पिंडली, टखने और पूरे पांव में पीड़ा होती है। अंग जकड़ जाता है। यदि गृध्रसी केवल वायु से हो तो अधिक पीड़ा होती है। शरीर कांपता है। घुटने, जांघ और अन्य संधियां फड़कती हैं और जकड़ जाती हैं। यदि कफ मिश्रित (वात+कफ) के प्रकोप से गृध्रसी हुई हो तो शरीर भारी लगता है, भूख कम लगती है। गृध्रसी के पुराना होने पर प्रायः पांव सूख जाता है।

चिकित्सा

१- गृध्रसी वात रोगी को प्रथम तीव्र वमन विरेचन देना चाहिये जिससे सब कच्चा मल (दोष) बाहर निकल जाये।

२- गोमूत्र १० तोला में अरण्ड तैल ३-४ तोला मिलाकर पिलाने से रींगन वायु (गृध्रसी) शान्त हो जाता है।

३- तिल तैल ३ अथवा ४ तोला, अदरक स्वरस १ तोला, दोनों को मिलाकर गरम करके पिलाने से रोग शान्त हो जाता है।

४- बांसा (अडूसा) पत्र, चिरायता, दन्ती मूल प्रत्येक ५-५ तोला लेकर, इनको जवकुट करके रखलें। पश्चात् इस में से दो तोला दवा लेकर आध सेर जल में क्वाथ करें। जब आधा पाव रहे, जानकर अरण्ड का तैल २ तोला मिलाकर गरम-२ ही रोगी को पिलावें। इसी प्रकार कुछ दिन यह औषधि देते रहें।

गुण—इससे पुराना गृध्रसी रोग अच्छा हो जाता है। जो रोगी गृध्रसी के कारण चलने फिरने से बन्द हो गया हो, वह इस औषधि से अच्छा हो जाता है।

योग ५

कुटकी २ तोला को कूट पीस छानकर खांड ४ तोला मिलाकर आठ मात्रा बनावें, इसमें से नित्य एक मात्रा बकरी के दूध में घृत और खांड मिलाकर सेवन करें। यदि उष्णता प्रतीत होवे तो फिर बकरी का दूध पीवें।

योग ६

छोटी हरड़ १ तोला — शुद्ध कुचला १ तोला
इन्द्रायण का गूदा ३ माशा — शुद्ध धतूरा बीज ३ माशे

इन सबको कूट पीस छानकर धतूरे के पत्तों के स्वरस में खरल करके सूखने पर, कुकरौंधा (गंधीली) के स्वरस में खरल करके एक एक रत्ती की गोली बनालें। प्रातः सायं गोदूध के साथ सेवन करें। हरड़ को घी में भून लेना चाहिये। इसके सेवन से गृध्रसी का रोग शान्त हो जाता है।

योग—७

सफेद फिटकरी भूनकर १ तोला, सुरंजान मीठा ३ तोला, कीकर (बबूल) का गोंद २ माशे।

इन को कूट छानकर पानी से जंगली बेर के समान गोलियां बनावें। इस की एक गोली प्रातः, एक गोली दोपहर, एक गोली शाम को ताजा पानी से देवें। यह औषधि निराहार न देवें। इस से रींगन वायु अवश्य अच्छा हो जाता है। इस के अतिरिक्त बवासीर के रक्त को शीघ्र ही बन्द कर देती है।

योग—८

सुरंजान मीठा-१ तोला
सोंठ-२ तोला
पान की जड़-२ तोला
काला नमक २-तोल
सनाय-२ तोला

इनको पीस छान कर एक तोला शाम को गरम जल से नित्य सेवन करें। दस दिन में गृध्रसी वात शीघ्र अच्छा हो जाता है।

योग-९

एलवा-२ तोला
हरड़ छाल-२ तोला
सुरंजान मीठा-२ तोला

इन को पीस छानकर जल संयोग से बड़ी मटर के समान गोलियां बनालें। रात्रि को सोते समय उष्ण जल से चार गोली सेवन करें। प्रातः कोष्ठ शुद्ध होकर दर्द दूर हो जाता है। इसका कुछ दिन सेवन करें।

योग—१०

कचरी जो खेतों में और सौज आकार्तिक में स्वयं उत्पन्न होती है। उसे पकने पर संग्रह करलें, उसको बीच से लम्बी २ चीर लें, उस कचरी में नमक भर कर छाया में शुष्क करलें, जब यह सूख जाये, सुरक्षित रखलें। रोगी को चार फांक (नग) कचरी गोघृत में भूनकर खिलादें। थोड़े ही दिनों में लाभ हो जायेगा।

योग--११

शुद्ध कुचला-३ माशा
बृहत् योगराजगूगल-१ तोला

इन दोनों को मिलाकर चार-चार रत्ती की गोली बनालें। रास्नादि क्वाथ में एक तोला अरण्ड का तैल मिलाकर गोलियों के साथ सेवन करें। प्रातः शाम एक सप्ताह में लाभ होगा।

योग—१२

सुरंजान मीठा-१
हरड़ छाल-१ तोला
सनाय-१ तोला
निशोथ-१ तोला
एलवा-१ तोला
इन्द्रायण का गूदा-१ तोला
शुद्ध गूगल-६ माशा
शुद्ध कुचला-४ माशा

इन सब को कूट छान कर गूगल को मिला घृतकुमारी के स्वरस में चने के समान गोली बनालें। इस की मात्रा तीन माशे से छः माशे है। गरम जल अथवा गरम दूध से रात्रि को सोते समय देवें। इससे निश्चित लाभ होता है।

योग—१३

हुलहुल बूटी के पञ्चांग को पीसकर एक रुपये के बराबर टिकिया बनालें, एवं दर्द वाले पैर की पिंडली पर जिस रग (नस) में दर्द हो, उसी पर बांध दें। जिस रग को दबाने से दर्द होता है, ठीक उस पर बांध दें। आठ नौ घण्टे के पश्चात् पट्टी खोल कर देखें लाल स्थान हो गया होगा, और थोड़े समय के पश्चात् छाला पड़ जायेगा। उस के फूटने पर पीले रंग का पानी निकलेगा तब उस पर सौ बार पानी से धोया हुआ घी, अथवा कोई मरहम लगादें, वह व्रण अच्छा हो जायेगा, और गृध्रसी में लाभ हो जायेगा। हुलहुल बूटी को हरयाणा में कूक्कर भंगरा कहते है। यह बूटी ज्वार

बाजरा के खेत्तों में होंती है। श्रावण मास से कार्तिक मास तक रहती है, कोई-कोई पौष पर्यन्त मिल जाती है। इस की लम्बाई दो से चार फुट तक होंती है। इस की डाली क्रम से नहीं होती है। सारी बूटी पर रोम से होते हैं। प्रत्येक डाली पर एक-एक पत्ता होता है, वह पत्ता पांच पत्तों में विभक्त होता है, हाथ की ऊंगुलियों के समान दिखाई पड़ता है। इस में से तीव्र गन्ध आती है, इसमें तीन इन्च लम्बी फलियां गोल होती हैं। और राई के दाने के समान काले भूरे रंग के बीज निकलते हैं। इस का रस कान के दर्द में प्रयोग होता है। ज्वर और सर्प के विष में भी प्रयोंग होती है। खाने तथा लगाने दोनों कामों में आती है। यह दो प्रकार की होती है, सफेद फूल वाली तथा पीले फूल वाली।

धनुर्वात रोग

लक्षण—इसमें सारा शरीर धनुष अथवा कमान के समान टेढ़ा हो जाता है। ठंडी, शीतल भूमि पर सोने से, चोट लगने से, अधिक खट्टी वस्तु के सेवन से यह रोग हो जाता है। अधिक तीव्र ज्वर आने से अथवा सन्निपात के होने से भी धनुर्वात हो जाता है। कभी हृदय और कभी पृष्ठ पर कमान जैसी खींच (तनाव) हो जाती है। आक्षेपक में स्नायु बार-बार खिचता है, और ढ़ीला पड़ता है। परन्तु धनुर्वात में बहुत देर तक कमान के समान रहता है। अर्थात् इस में स्नायु पूर्णरूप में ढ़ीले नहीं पड़ते, और रोगी धनुष की तरह बाहर अथवा भीतर के भाग में खिचता है। तब सारे शरीर में पसीना आता है। रोगी बोल नहीं सकता, गले के नीचे पानी उतरना कठिन होता है। पेट का स्नायु काष्ठ जैसा कठोर हो जाता है। तृषा अधिक लगती है, कब्ज हो जाती है। अन्त में श्वास रुक कर रोगी मर जाता है। इस रोग का रोगी अधिक से अधिक दस दिन जीवित रहता है।

चिकित्सा योग-१

मयूर अण्डत्वक् पिष्टी (बच्चा निकलने के बाद मोरनी छिलके को फेंक देती है, उसे एकत्र करलें) की मात्रा चार रत्ती से डेढ़ माशा तक रोग तथा आयु के अनुसार प्रयोग करें।

अनुपान—गुण—लहसुन—५ तोला, अदरक—५ तोला, प्याज—५ तोला, इन तीनों को पीसकर स्वरस निकाल लें। इसकी मात्रा १ से २॥ तोला तक है। ऐक से तीन घण्टे के अन्तर से देते रहें। इस औषधि के देने से पूर्व एक तोले से दो तोले तक घृत पिलावें, फिर मयूर अण्डत्वक् पिष्टी खिलाकर ऊपर रसोनादि-क्वाथ (लहसुन, अदरक, प्याज) पिला देवें, यह औषधि देने के पश्चात् घृत पिलावें, घृत के पीछे आधी रत्ती अफीम उत्तम खिलावें। इसी प्रकार दो, तीन मात्रा प्रयोग करें। ईश्वर की कृपा हुई तो तुरन्त लाभ होगा।

समीर गजकेसरी रस—२

शुद्ध कुचला—५ तोला
शुद्ध अफीम—५ तोला
कालीमिर्च—५ तोला

इन तीनों को तीन दिन तक पान के पत्तों के रस में खरल करके एक-एक रत्ती की गोली बनालें। यह अनेक प्रकार की वात व्याधियों को एवं स्नायु दौर्बल्य, रोग के पश्चात् की दुर्बलता और धनुर्वात रोगी को १ से ४ गोली बलाबल देखकर प्रथम घृत पान कराके प्रयोग करें। अनुपान में रसोनादि स्वरस जो उपरोक्त योग में लिखा है, एक तोला से तीन तोला तक देवें। पश्चात् घृत पिलावें। एक दो घण्टे में औषधि पुनः खिलावें। रोगी की अवस्था सुधरते ही औषधि की मात्रा भी न्यून कर देवें। रसोनादि स्वरस

भी न्यून करदें। परन्तु घृत उसी प्रकार देते रहें। भोजन के लिये गोदुग्ध सुपाच्य भोजन देवें।

टिप्पणी—कुछ वैद्य समान भाग एक औषधि के शुद्ध हिंगुल मिलाकर बनाते हैं, वह भी उत्तम है। अफीम को अदरक स्वरस की सात भावना देने से अफीम शुद्ध होती है।

विश्वाची वातरोग

यह बाहु (भुजा) का दर्द है। इस रोग में वायु दोनों बाहुओं में अथवा एक बाहु में घुसकर नसों को नितान्त बन्द कर देता है। जिस के कारण मनुष्य अपनी बाहुओं को फैला नहीं सकता और न ही ऊपर नीचे कर सकता है। उन बाहुओं से कोई कार्य नहीं होता, क्योंकि हिलने डुलने से दर्द होता है। इसी को विश्वाची कहते हैं।

चिकित्सा योग—१

बला (खरैंटी) इस को हरयाणा प्रांत में झाड़ू बनाकर काम में लाते हैं, और इस झाड़ू को रड़का कहते हैं। कुछ लोग इस पौधे को ढ़िढ भी कहते हैं। खरैंटी का क्षुप दो से चार फुट तक होता है।

इस खरैंटी को पंचांग को—५ तोला, तथा सैंधानमक-६ माशे, जल १ सेर में पका कर १० तोला क्वाथ शेष रखें। फिर छानकर गरम-गरम ही रोगी को पिलादें। सात दिन इसी प्रकार पिलाते रहें अवश्य लाभ होगा। अनुभूत है।

वातारि रस—२

शुद्ध मीठा तेलिया	५ तोला	शुद्ध धतूरा के बीज	५ तोला
शुद्ध कुचला	५ तोला	काली मिर्च	५ तोला
शुद्ध गूगल	१० तोला		

विधि—इन सब को कूट कर कपड़छान कर लेवें और गूगल को त्रिफला के क्वाथ में घोलकर पतला कर लें, फिर अन्य औषधि मिलाकर दो तोला गोघृत डाल कर खूब कूट लें। अथवा खरल करलें, फिर ३-३ रत्ती की गोली बनालें, घृत का हाथ लगाते रहें। फिर छाया में सुखा कर सुरक्षित रखलें।

गुण—एक-एक गोली प्रातः सायंकाल गौ के गरम दूध के साथ सेवन करें। यह विश्वाची वात जिस में बाहु शुष्क हो जाती है। अपबाहुक और गृध्रसी में लाभ होता है।

आमवात रोग

कारण—विरुद्ध आहार विहार वाले अर्थात् बिना अभ्यास के कठोर व्यायाम एवं परिश्रम करना, यह विरुद्ध विहार है। इसी प्रकार विपरीत भोजन रोग का कारण होता है। अति विषय सेवन, खट्टे पदार्थ अधिक खाने से, उपदंश रोग हो जाता है। आलस्य में पड़ रहने, व्यायाम न करने, मन्दाग्नि में भोजन पर भोजन करने, अधिक स्निग्ध भोजन के पश्चात् शीघ्र व्यायाम करने आम (आम-रस—कच्चा रस) वायु के द्वारा प्रेरित होकर कफ के स्थान में जाता है, फिर वही कच्चा रस जोड़ों (संधियों) में जाकर सूजन और दर्द करता है। इसी रोग को आमवात कहते हैं।

सामान्य लक्षण

जब आमवात कुपित होता है, तो हाथ पैर, टखना, पैर, कमर, घुटने और जांघ की सन्धियों में जहां भी दोष स्थित होजाता है, वहीं पीड़ा युक्त शोथ उत्पन्न करता है। उस भाग में जब आम-वात बढ़ जाता है, तब बिच्छु के काटने के समान दर्द होने लगता है, और कई उपद्रव होने लगते हैं, यथा तृष्णा वमन, मूर्च्छा, हृदय

में जकड़न, मलावरोध, अफारा, निद्रा का समय पर न आना, निद्रा विपर्यय होजाता है।

आमवात चिकित्सा

आमवात होते ही, सावधानी से चिकित्सा करनी चाहिए, क्योंकि यह रोग पुराना होने पर अच्छा होना कठिन हो जाता है, अथवा अच्छा ही नहीं होता। इस रोग वाले मनुष्य को उपवास करावें। दर्द के स्थान पर गरम औषधियों से सेक करें, पसीना निकालें, स्वेद कर्म करके विरेचन देवें, इस के पश्चात् औषधि प्रयोग करें।

योग-१

काली जीरी—७॥ तोला लेकर बारीक पीस कर शीशी में रखें, इसको जितना बारीक पीसें, उतना ही श्रेष्ठ है। इसकी मात्रा ३-३ माशा है। रात्रि में रखे हुए बासी पानी से सेवन करें। इसी बासी पानी से प्रातः शाम प्रयोग करें। क्योंकि बासी पानी हो अच्छा लाभ करता है। १५ दिन अवश्य सेवन करें, लाभ होगा।

योग—२

इन्द्रायण के फल का रस—३ पाव, नागौरी असगन्ध—१ तोला
सुरंजान मीठा—१ तोला सोंठ—१ तोला
हल्दी—१ तोला हरड़ छाल—१ तोला

विधि—इन्द्रायण स्वरस से भिन्न सब दवा को कूट छानकर इन्द्रायण के रस में खरल करके दो रत्ती की गोलियां बनावें। एक एक गोली उष्ण गोदूध से प्रातः शाम सेवन करें।

गुण—सन्धि से जकड़ा हुवा, पीड़ा शीघ्र ही शमन हो जाएगी।

योग-३

सुरंजान मीठा-, सोंठ, नागौरी असगन्ध, सनाय सब को समान भाग लेकर कूट कपड़छान करलें। इस चूर्ण को बनाकर रखें। ३-३ माशा प्रातः शाम सेवन करावें।

अनुपान—असगन्ध—२॥ तोला १ पाव जल में उबालकर आधा शेष रहने पर छानकर औषधि के पश्चात् पिलादें। यह क्वाथ दोनों समय नवीन बनाकर औषधि के साथ सेवन करावें। इस से गठिया वात में लाभ होगा।

योग-४

आक के पुष्प जो खिले न हों, सोंठ, कालीमिर्च, बासा (अडूसा) के पत्ते सूखे हुए। यह चारों समान लेवें; इनको पीस कर चने के समान गोलियां जल के संयोग से तैयार करें। इस की दो २ गोली प्रातः सायं काल उष्ण जल से सेवन करें।

योग-५

नीबू—१ तोला
सोंठ—१ तोला
सनाय—१ तोंला
शुद्ध जमाल गोटा—१ तोंला
हरड़ छाल—१ तोंला
सत नींबू—१ तोला

इन सब को बारीक पीसकर जल संयोग से झड़बेर समान गोलियां बनालें। इसकी एक गोली शाम को गरम दूध अथवा गरम पानी से देवें। इसकी कुछ मात्रा लेने से गठिया दूर हो जाता है।

योग-६

सुरंजान मीठा—१ तोला
उत्तम एस्प्रीन—२ माशे

सुरंजान को पीसकर एस्प्रीन मिलाकर रखें। इस औषधि की

८ मात्रा बांध लेवें। एक पुड़िया गरम दूध से प्रयोग करें। दर्द दस मिनट में दूर हो जाता है। यह दर्द को दूर कर देती है, किसी प्रकार का वात रोग हो।

योग-७

अमर वेल बफारा (स्वेदन) देने से गठिया वात की पीड़ा और शोथ को लाभ हो जाता है। बफारे के पश्चात् जब जल स्नान के योग्य हो जावे, इस जल से ही स्नान करे, गरम-२ से ही स्नान करे। फिर मोटा खद्दर का कपड़ा लेकर शरीर को खूब पौंछ लेवें रगड़कर पूछें। पथ्य में घृत अधिक सेवन करें। अवश्य लाभ होगा।

योग-८

आक के दो सेर हरे पत्ते लेकर एक घड़े में बिछा देवें, इन पर एक छटांक सोंठ रख देवें तथा ऊपर आक के पत्ते दो सेर और बिछा देवें। पश्चात् एक सेर जल डाल कर घड़े का मुख बन्द कर देवें, तथा ऊपर कोई भारी पदार्थ रख देवें, नीचे अग्नि जलावें, जब सब जल सूख जावे, तब अग्नि बन्द कर देवें, फिर बारह घण्टे पश्चात् भीतर की सोंठ को निकाल लेवें। उसको दो पाव गोघृत में भून लेवें, भून कर शहद में रख देवें। इस सोंठ की मात्रा दो माशा है। यह नित्य शहद से ही निकाल कर खानी चाहिए। रोगी को शीतल जल न देवें, और भोजन में गोघृत, गेहूँ की रोटी का चूरमा (चूरी) बनाकर खावें, और सोंठ भूनने के बाद जो घृत शेष था, उसकी मालिश करके रोगी सूर्य ताप में बैठ जावे, वायु से बचे, जब पसीना आवे, तो उसी समय कपड़ा ओढ़ना चाहिए। जिस से पसीने के द्वारा सब दोष निकल जावे। इस प्रयोग से तीन दिन में ही लाभ हो जाता है।

योग—९

कपूर देशी-२ रत्ती अफीम-आधी रत्ती

इनको मिलाकर सोते समय सेवन करें, कपड़ा ओढ़ लेवें, इस से स्वेद होकर दर्द में शान्ति हो जावेगी।

योग—१०

छोटी कण्टकारी-१ सेर हरमल-१ सेर
जायफल-२ तोला सहंजना पत्र-१ सेर
सहंजना की जड़-१ सेर।

विधि—इनको यवकुट करके एक मटके में डाल कर २० सेर जल भर देवें, इस घड़े के भीतर डेढ़ पाव देशी अजवायन बारीक कपड़े में बांध कर डाल देवें, पश्चात् आग पर रखें, मटके का मुख आटे से बन्द कर देवें। जब जल तीन सेर शेष रह जावे, उस में से अजवायन को निकाल कर खूब बारीक पीस लें, फिर जंगली बेर के बराबर गोली बनालें।

मात्रा—एक-एक गोली प्रातः सायंकाल गरम दूध अथवा गरम जल से प्रयोग करें। यह सब प्रकार के वात कफ के रोगों के दर्द को शमन करती है। इस के साथ मालिश भी करें, इस औषधि में जो जल शेष रहा था, उस में एक सेर तिलों का तैल डाल कर तैल सिद्ध कर लेवें, इसी तैल की साथ-साथ मालिश भी करें।

योग—११

शुद्ध एलवा-१ तोला निशोथ-१ तोला
हरड़ छाल-१ तोला बूजीदान-१ तोला
मीठा सुरंजान-१ तोला नींसू- ९ माशे

शकमूनिया—१ तोला	शुद्ध गूगल—२॥ तोला
हरड़ जुलाफा—१। तोला	सोंठ—१। तोला
उशारा रेवन्द—६ माशा	केशर असली—१। तोला

विधि—इन सब औषधियों को बारीक पीसकर और गूगल को भेड़ के दूध में पीस कर रवड़ी जैसा बनालें। इस में दूसरी कुटी हुई औषधियां मिलाकर खूब कूटें, जब मोम जैसी हो जावे, तब दो दो रत्ती की गोली बनालें, इस में से एक से दो गोली गरम दूध, दशमूलार्क, गरम जल, किसी एक के साथ प्रातः शाम सेवन करें।

गुण—गठिया, लकवा, पक्षाघात, कम्पवायु, कफ तथा वायु के रोगों में लाभ करती है।

योग-१२

शुद्ध एलवा—१ तोला	कालादाना—१ तोला
बाबूना—१ तोला	शुद्ध कुचला—१ तोला
सुरंजान कड़वा—१ तोला	इन्द्रायण फल का रस—१ सेर
शुद्ध गूगल—१ तोला	गारीकून—१ तोला

विधि—पहले गूगल को थोड़े से इन्द्रायण के रस में खरल करें, जब गूगल रस में मिल जावे तो एलवा मिलाकर खरल करें। जब गोली बनाने योग्य हो जावे, फिर इन्द्रायण रस मिलाकर पतला करके अन्य औषधि बारीक पीस कर मिलादें। घोट कर दो-दो रत्ती की गोली बनालें। छाया में सुखा कर शीशी में रखलें।

गुण—एक से तीन गोली तक प्रातः सायंकाल गरम दूध या गरम जल से प्रयोग करें, यह गोलियां गठिया, गृध्रसी, कटिदर्द को लाभ करती हैं। इन गोलियों से यदि अतिसार हो, तो मात्रा न्यून करदें। इन गोलियों को बृहत् योगराज गूगल के साथ सेवन करें

तो अधिक लाभ होगा। इन गोलियों का मैंने अनेक बार प्रयोग किया है। सर्वदा लाभ ही पाया है, आप बनाकर लाभ उठावें, विश्वास की औषधि है।

योग-१३

इन्द्रायणमूल को सुखाकर बारीक पीसकर छानलें। इस चूर्ण को छानकर गुड़ समान भाग मिलाकर चने समान गोली बनाकर रखलें। गुड़ को गरम पानी में मिलाकर फिर चूर्ण में मिलावें।

मात्रा—१ से ३ गोली गरम दूध या गरम जल से प्रयोग करें।

गुण—यह आमवातादि उपरोक्त रोगों का शमन कर देती है।

गठिया रोग पर तैल योग—१४

तिल तैल—१ सेर
भिलावा—१ पाव
कुचला—५ तोला
अरण्ड तैल—२ पाव
कपोत विष्ठा—५ तोला

विधि—सर्वप्रथम दोनों तैल मिलालें, फिर गरम करें, जब खूब गरम हो जावे, तब भिलावा कुचल कर डाल देवें। इस के धुयें से बच कर रहें। यदि धुआं लग गया तो सारा शरीर सूज जायेगा। जब भिलावा जल कर भस्म हो जावे, फिर कबूतर की विष्ठा और कुचला डाल कर भस्म कर लेवें। जब यह भी जल जावे, तो कढ़ाही को आग पर से उतार कर शीतल करलें। इसको छान कर मिट्टी का तैल और पैट्रोल १०-१० तोला अथवा मिट्टी का तैल १ पाव डालकर मिलाकर बोतल को कार्क लगादें। आवश्यकता पड़ने पर शोथयुक्त गठिया पर धीरे-२ मालिश करें तैल को गरम कर के मर्दन करना चाहिये। लाभ होगा।

वात रोगों की सामान्य चिकित्सा

लहसुन—३ माशा बायबिडंग—३ माशा
गौ-दूध—१ पाव जल—१ पाव

लहसुन और बायबिडंग को कूट कर जल व दूध में मिलाकर अग्नि पर गरम करें, जब जल समाप्त हो जाये, दूध मात्र शेष रह जाए, छानकर खांड मिलाकर गरम-२ ही सेवन करें।

गुण—गृध्रसी, अर्दित, पक्षाघात, उरुस्तम्भ इत्यादि रोग दूर हो जाते हैं। इस योग के साथ-२ भोजन निम्न वर्णित देवें तो शीघ्र ही लाभ हो जाता है। वैसे अलग-२ भी सेवन करने से लाभ होंता है। योग इस प्रकार है—

आक की जड़ को मिट्टी आदि से शुद्ध करलें, फिर दुगना जल मिलाकर क्वाथ तैयार करें, आधा जल शेष रहने पर छान कर इस जल के समान गेहूं डाल कर पकावें, शुष्क होने पर गेहूं को सूर्यताप में सुखालें, पश्चात् इस कों पीस कर चूर्ण (आटा) बना लेवें। इस की रोटी बनाकर गोघृत और खांड मिलाकर चूर्मा (चूरी) करके खायें, क्षुधा से तृप्त होंजायें। इसी प्रकार नित्य खाने से जीर्ण से जीर्ण वात रोग शान्त हो जायेगा। गठिया आदि वात रोगों में आशातीत लाभ होकर शरीर पुष्ट होता है। यह रसायन है।

योग—२

शुद्ध कुचला लेकर घृतकुमारी के स्वरस में दो तीन दिन खरल करके १-१ रत्ती की गोलियां बनालें। एक गोली मलाई में डाल कर निगल जावें।

गुण—स्नायु का दौर्बल्य, पक्षाघात, लकवा, कम्पन, जोड़ों का दर्द, कमर का दर्द, वातरोग, नपुसंकता और शीत से उत्पन्न रोगों में अनुभूत है।

वालनाशक लेप योग—३

धतूरे का ताजा कच्चा फल एक नग लेकर, उस पर एक अंगुल मोटा मिट्टी का लेप करके भूबल (गरम राख़) में भून लें, पश्चात् जब मिट्टी लाल हो जाये, तब आग से निकाल कर मिट्टी हटा कर गरम को ही कूट कर पीसलें, और दर्द के स्थान पर लेप करदें। लेप करने से पहले दर्द स्थान पर तैल लगादें। ऊपर अरण्ड का पत्ता लगा कर ऊपर रूई बांध देवें। दूसरे दिन ही दर्द दूर हो जायेगा।

योग—४

एक पोथिया (एक गांठ) लहसुन ५ तोला लेकर बारीक काट कर गोदूध एक पाव में मन्दी-२ अग्नि से पकावें, जब दूध का खोवा हो जाएं, तो इस में अपनी इच्छानुसार खांड अथवा मिश्री मिला कर दस नग लड्डू बनालें। एक लड्डू अपनी शक्ति के अनुसार खाकर ऊपर से गरम दूध पीवें। इसका दूसरा प्रकार ऐसे है, छः माशा से एक तोला लहसुन को काट कर छोटे-२ टुकड़े करलें, एक एक टुकड़ा करके निगल जावें, ऊपर से दूध पीवें। इसका प्रयोग शीतकाल में करें, इस से सब प्रकार का वात रोग निश्चित चला जःता है। इसका लाभ धीरे-२ होता है। परन्तु स्थाई होता है। गरम प्रकृति वालों को इस का प्रयोग नहीं करना चाहिये और लाल मिर्च, तैल, गुड़ का प्रयोग न करें।

योग-५

शतावर—१। तोला	बीज कौंच—१। तोला
बायबिडंग—१। तोला	सोंठ—१ तोला
कालीमिर्च—१ तोला	पीपल—१ तोला
अजमोद—एक तोला	बीज बिधारा—२ तोला
गोखरू—२ तोला	नागौरी असगन्ध—२ तोला
आक के फूल—२।। तोला	चूर्ण शुद्ध कुचला—७।। तोला
शुद्ध उत्तम गूगल—३० तोला	स्वर्ण माक्षिक भस्म—१। तोला

विधि—सब औषधियों को कूटकर वस्त्रपूत करलें। और गूगल को कूटते रहें, गोघृत डालते रहें, यहां तक कि गोघृत दस तोला मिल जावे, जब गूगल पतला हो जावे, दूसरी कुटी हुई औषधियों को थोड़ा २ डालते जावें, और कूटते जावें, जब सारी औषधि मिलकर एक हो जावे, तब ४-४ रत्ती की गोलियां बनालें। प्रातः शाम एक-एक गोली उष्ण दूध के साथ सेवन करें।

गुण—यह गोली वात व्याधि की शत्रु, वृद्ध पुरुषों की रक्षक है, स्त्री रोग अर्थात् प्रदर, प्रसूतविकार, विभिन्न प्रकार के योनि रोग, कमर दर्द, हडफूटन, सिर दर्द, छाती का दर्द, हाथ पैरों की निर्बलता, मासिकावरोध, नलों की शिकायत, पेट में रक्त का जम जाना आदि रोग सर्वथा ठीक हो जाते हैं। परमोपयोगी योग है।

योग—६

वात रोग ८४ प्रकार के कहे गए हैं, शास्त्रकारों ने सब की चिकित्सा वर्णित की है। जब वात रोग किसी जगह अधिक ठहर जाये, अथवा कष्टसाध्य हो, तो स्वेद कर्म करके दोष शमन करना चाहिये।

स्वेद कर्म

सम्भालू के पत्तें, अरणी के पत्ते, अरण्ड के पत्ते, सहंजना के पत्ते, आक के पत्ते, प्रत्येक आध सेर लेकर कूटकर २० सेर जल में मिट्टी के पात्र में पकावें, पानी दस सेर रहने पर पात्र को ढ़कदें, और आग बन्द कर देवें। रोगी को ऐक चारपाई पर बिना बिछौने के लिटा कर कम्बल उढ़ा देवें। कम्बल इतना बड़ा हो, जो चारों ओर लटकता रहें, अब खाट के नीचे उक्त घड़े की औषधि चौड़े मुंह के पात्र में उलट कर रखदें, इससे भाप उठेंगी, और पीड़ित भाग में लगकर उसे स्वेदित करेंगी। ध्यान रहे, रोगी का सिर कम्बल से बाहर रखा जावे, यह क्रिया बन्द कोठड़ी में होनी चाहिये। इस स्वेदन विधि से औषधियों की वाष्प लगकर बेहद पसीना आएगा, इसके लिये १५-२० मिनट का समय पर्याप्त है। स्वेदित होने पर पसीना पौंछ कर शरीर पर पिसी हुई सोंठ का बारीक चूर्ण मल देवें। जिस से रोमछिद्र बन्द हो जायें। यह रोग की प्रबलता अनुसार जितने दिन की आवश्यकता हो, उतने दिन ही करें। इस के साथ अच्छी विधि से तैयार किया हुआ महायोगराज गूगल और महानारायण तैल का भी प्रयोग करें।

वातनाशक गोलियां

शुद्ध कुचला—२० तोले	शुद्ध मीठा तेलिया—४ तोले
शुद्ध अफीम—४ तोले	रससिंदूर—४ तोले
कश्मीरी केशर—२ तोले	जावित्री—४ तोले
लौंग—५ तोले	जायफल—५ तोले
पीपल—५ तोले	कालीमिर्च—५ तोले
सोंठ—५ तोले	अकरकरा—५ तोले

विधि—सभी औषधियों को बारीक पीस कर इन्द्रायण के रस में दो दिन घोट कर दो-दो रत्ती की गोलियां बनालें।

गुण—एक से दो गोली तक प्रातः सायंकाल गरम दूध से सेवन करें, बड़ा ही प्रभावशाली योग है। गठिया का रोगी चाहे हिलने से रह गया हो, तीन मात्रा से हो चलने फिरने लगता है। तैयार करने के बाद यह गोलियां सारे दुःख भुला देती हैं।

गूगल बटी योग-७

छाल चित्रक, सफेद जीरा काला जीरा अजवायन, अजमोद, वच, वावची, चव्य, कालानमक सेंधानमक, कांचनमक, सज्जी-खार, जवाखार, प्रत्येक १-१ तोला। रससिन्दूर-२ तोला गोमूत्र में शुद्ध किया हुआ शुद्ध गूगल १८ तोले।

विधि—सब औषधियों को कूट छान कर गूगल में मिलाकर घृत का मौण लगा कर कूटलें, एक जीव होने पर गोली बनालें।

गुण—बड़ी आयु वालों को तीन माशा की मात्रा में खिलावें। यह बटी गृध्रसी रोग के लिये उत्तम है। इस के अतिरिक्त, आमवात मज्जागत वात तथा अनेक वात रोगों को दूर करती है। टूटी हड्डी को भी जोड़ देती है। अनुपान में महारास्नादि क्वाथ का प्रयोग करें।

वात रोगों पर कुछ अनुभूत तैल योग-१

सरसों का तैल-३ पाव
कपूर देशी-९ माशे

कपूर को बारीक करके तैल में डालें, पश्चात् साबुन ५ तोले का महलूल मिलाकर एक घण्टा धूप में रखदें, और तीन बार हिलादें। यह तैल तैयार हो गया।

गुण—इस तैल की मालिश करने से सब प्रकार के दर्द अर्थात् चोट, मोच, छाती का दर्द, पसलियों का दर्द, नमूनियां आदि रोगों में लाभ करता है।

साबुन का महलूल (घोल)—साबुन २ तोले चाकू से बारीक काट कर जल १० तोले में मिला दें। इस को खुले मुंह की शीशी में डालें, फिर धूप में रखदें, अथवा अग्नि पर गरम करलें, यही साबुन का महलूल है।

योग—२

धतूरे के पत्ते, असगन्ध (आकसन) के पत्ते, आक के पत्ते, १-१ सेर, माल कांगनी—१० तोले

विधि—सब पत्तों को कूट कर स्वरस निकाल लें। इस पत्तों के रस के समान तिलों का तैल लेकर इस तैल को गरम करें, फिर मालकांगनी डाल कर पकावें, जब मालकांगनी जल जावे, तैल को छान लें, फिर उस तैल में कुचला सालम-२ तोले डालकर पकावें, कुचला भस्म होने पर कुचले को निकाल लें, तैल को कुछ शीतल करलें। फिर उस में जो स्वरस पूर्व निकाल कर रखा है, थोड़ा-२ डालें और अग्नि पर पकावें। अग्नि मन्दी हो। जब तैल मात्र रह जावे, और पत्तों का रस जल जावे, अग्नि से उतार कर तैल को छान लें, जब तैल शीतल हो जाए, इस तैल से वजन में आधी मैथिलेटिडस्प्रिट और साथ में कपूर २ तोला मिलाकर सुरक्षित रखें। इस तैल का दर्द स्थान पर मर्दन करें। संधिवातादि रोगों में बहुत लाभदायक है।

योग-३

अफीम—१ माशा
कपूर देशी—१ तोला
नौशादर—८ माशा
तारपीन का तैल—४ तोले

विधि—इन सब को मिलाकर तीन दिन धूप में रखें, शाम को हिलाकर नित्य भीतर रख लें, और प्रातः फिर धूप में रखदें। इस के मर्दन से दर्द में लाभ होता है।
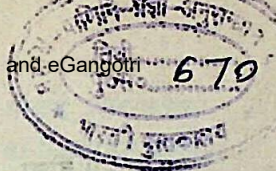
योग—४

मिट्टी का तैल—१ सेर सरसों का तैल—१ सेर
शहद की मक्खी का मोम-१ छटांक, इलायची का तैल-२। तोला
लौंग का तैल—४ माशा ।

विधि—पहले सब तैलों को मिला लेवें फिर मोम पिघला कर तैल में मिलादें यह तैल तैयार होगया। इस तैल को किंचित् गरम करके सूर्य ताप में बैठ कर मालिश करें। ऊपर रूई बांध देवें। यह तैल संधिवात, हड्डियों के दर्द, मोच, पार्श्वशूल, सिरदर्द में लाभ करता है।

योग—५

तिल तैल—१ पाव कपूर देशी—५ तोला
लाईक्वार एमोनियां—१५ तोला

(यह अंग्रेजी दवाखाना पर मिल जाता है)

निर्माण—तिल के तैल में कपूर को पीसकर मिलाकर खरल करें, जब कपूर और तैल मिल जावे, तब लाईक्वार अमोनियां (नौशादर का पानी) मिला कर एक जीव करलें। यह सफेद तैल तैयार हो गया। इस को कार्क वाली शीशी में बन्द रखें। इस तैल का मर्दन करने से नमूनियां, मोच, चोट, गठिया और सब प्रकार के दर्दों को लाभ करता है।

योग—६

कुचले का बारीक चूर्ण-८ तोले, बछनाभ का चूर्ण-४ तोले
मेथिलेटिड स्प्रिट--६० तोले।

इन सब को एकत्र मिलाकर १५ दिन तक रखें शीशी की डाट मजबूत लगावें। दिन में तीन चार बार हिला दिया करें अब

अफीम २॥ तोला को स्प्रिट ६ तोला में मिला कर घोल बना लेवें, फिर कर्पूर देशी ४ तोले को कार्बोलिक एसिड २ तोले में मिलाकर पिघलालें। अब पहले स्प्रिट वाले योग को छान लें, फिर वापिस शीशी में भरलें। बाद में अफीम और कर्पूर वाला मिश्रण भी मिला दें, इस के पश्चात् तिल का तैल ३ पाव मिलावें, बस औषधि तैयार है। दर्द के स्थान पर इस तैल का मर्दन करें।

गुण—सब प्रकार का वातरोग, चोट, मोच, नमूनियां, शूल, विषधर जन्तुओं के दंश में लाभ करता है। अत्यन्त उपयोगी तैल सिद्ध हुवा है।

योग—७

तारपीन का तैल—१ औंस
रेक्टीफाइड स्प्रिट—१ औंस
कपूर—४ औंस
जैतून का तैल—१ औंस
कास्ट्रायल—२ औंस
तिल का तंल—१ पौंड

विधि—तिल के तैल के अतिरिक्त अन्य सब औषधि को मिला कर गाढ़े नीले रंग की बोतल में डाल कर हिलावें, जब सब मिल जावे, तो तिल का तैल डाल कर हिलाव, मिल जाने पर इस को प्रातः आठ बजे से शाम के चार बजे तक सूर्य ताप में रखें इस पर छाया न आने पाये। तैल की बोतल को लकड़ी के तख्ते पर रखें। चार बजे बाद भीतर रखें वहां भी लकड़ी पर रखें। इस प्रकार आठ दिन करो। ६४ घण्टे सूर्य ताप में रखने से औषधि तैयार समझो। इस की मालिश करने से सब प्रकार का दर्द और वात रोग शान्त हो जायेगा। अनुभूत है। स्वर्गीय श्री देवराज जी मुनि गुरुकुल झज्जर।

योग—८

कविराज जगन्नाथ वैद्यवाचस्पति आरोग्य रत्नाकर जम्मू की प्रसिद्ध दवा।

गठिया, शरीर का दर्द, कान का दर्द, दांत का दर्द, भिड़-ततैया बिच्छू के दंश का दर्द आदि रोगों में रूई के फाया में लगाया जाता है। रोता हुआ रोगी हंसने लगता है। औषधि क्या है, एक जादू है। शरीर के किसी भाग में दर्द हो, लगाते ही छूमन्त्र हो जाता है। योग इस प्रकार है:—

मैथिलेटिड स्प्रिट—२४ औंस
सत पोदीना—१ तोला
कपूर देशी २॥ तोले
युकलिप्टस आयल—१ औंस
क्लोरोफार्म—१ औंस
सत अजवायन १ तोला
ईथर—४ ड्राम
तारपीन का तेल
विन्टर ग्रीन आयल—१॥ औंस

विधि— मैथिलेटिड स्प्रिट के अतिरिक्त अन्य सब औषधियों को एक शीशी में मिलालें। पश्चात् स्प्रिट मिलाकर बोतल में भरकर मजबूत डाट लगाकर रखलें। औषधि का प्रयोग जो औषधालय की ओर से लिखा हुआ आता है, उसी को लिखा जाता है।

१- दांत दर्द - यदि कीड़ा लगने के कारण दर्द हो, गढ़ा हो गया हो तो तैल को रूई के फाये में भरकर मसूड़े के चारों लगादें। तथा दांत के गढ़े में भर देवें। मुख में से जो पानी निकलेगा वह बाहर निकालें। यदि दर्द बिना कीड़े के हो, तो वैसे ही दवा लगादें।

२- मसूड़े का शोथ, दर्द—तैल को मसूड़े पर एक मिनट मर्दन करना चाहिए, अधिक शोथ हो, तो दिन में ३-४ बार लगावें, यदि शीघ्र लाभ चाहें तो मसूड़े के ऊपर किसी शस्त्र से चीरा देकर औषधि लगावें।

३- दांत में पानी लगने पर—
दिनमें दो बार औषधि लगाओ।

४- गले पड़ने पर, गले में गिल्टी हो, पानी पीने में दर्द होता हो, अथवा खुनाक हो, तो दिन में तीन बार लगावें।

५- शिर दर्द—दर्द पर दो मिनट मसलें।

६- कान दर्द, बहरापन, कान का बहना, कान में छः बूंद प्रातः और छः बूंद शाम को डाल कर एक मिनट रूई लगायें।

७- आंख दर्द—लाली, सूजन, आंखों को बन्द करके दिन में तीन बार लगादो।

८- शरीर के किसी भाग में दर्द हो, खाज या जलन का होना, दवा को पांच मिनट तक लगावो, दिन में तीन बार लगा देवें।

९- फोड़ा फुन्सी, मुंहासे, आग से जलने पर, उपरोक्त पांच मिनट ही लगाना चाहिये।

१०- चोट में खून आने और दर्द पर—प्रत्येक चार घण्टे के बाद लगावें।

११- दाद, चम्बल पर एक सप्ताह तक दिन में तीन बार पांच-पांच मिनट बाद फाये से लगावें।

१२- नासूर, भगन्दर पर—उपरोक्त दाद के समान लगावें।

१३- गठिया, शोथ, हड्डी का टूट जाना, फाये को दवा में भिगो कर दर्द के स्थान पर रख कर पट्टी बांधदें।

१४- बिच्छू, भिरड़, ततैया, मच्छर, खटमल, पिसू आदि विष, युक्त कीटाणु के काटने पर—पांच मिनट लगावें। बिच्छू के काटे हुए स्थान को थोड़ा सा काट कर रक्त निकाल कर लगावें, अथवा त्वचा के नीचे पिचकारी देवें शीघ्र लाभ होगा।

१५- गृध्रसी (रींगन वात) प्रत्येक सप्ताह में दो बार त्वचा के नीचे पिचकारी देने से लाभ होगा।

१६- नमूनियां दर्द गुर्दा पर, रूई का फाया भिगोकर लगा कर ऊपर पट्टी बांधदें, २४ घण्टे में तीन बार इस प्रयोग को करें।

गुर्दे के दर्द में आगे और पीछे दोनों ओर पट्टी बांधें।

१७- ऋतु पीड़ा, गर्भाशय का शोथ होने पर—फाये को भिगो कर गर्भाशय के मुख पर रखें और नाभि के नीचे वाले भाग पर पेट पर दवा का फाया लगाकर पट्टी बांधें।

ज्ञातव्य-उपरोक्त रोगों के कारण जिन स्त्रियों को सन्तान न होती हो,वह प्रति ऋतु आने पर तीन दिन रात को फाया तैलमें भिगोकर गर्भाशय के मुख में एक घण्टा रखें, इससे सब रोग दूर हो जायेंगे।

१८- शोथ, कम्पन अथवा किसी भाग का अकड़ जाना—पर पांच मिनट मालिश करें।

१९- अपण्डेसाईटिस, मसाने का रेत, मूत्रकृच्छ्र, कनफेड़, कण्ठ-माला, बवासीर,आतशक–इन रोगों में दिन रात में चार बार लगावें।

उपरोक्त दवा की विशेष जानकारी—

१- तैल को शीतल स्थान पर रखें।

२- तैल निकाल कर बोतल को भलीभांति बन्द कर दो।

३- मुख खुला रहने पर औषधि उड़ जायेगी।

४- यदि गले में तैल लगाने के समय कुछ पेट में चली जावे तो कोई हानि नहीं होती।

५- त्वचा की पिचकारी में तैल चौथाई ड्राम (१५) बूंद है। त्वचा की पिचकारी हाईपोडारमिक करनी चाहिये।

मल तैल–९

श्वेत संखिया ३ तोला, लौंग ४ तोला, जायफल ४ तोला, दारचीनी ४ तोला, काली मिर्च ४ तोला, शुद्ध गूगल ६ माशा, शुद्ध गन्धक ६ माशा।

विधि – सब औषधियों का बारीक चूर्ण करलें। फिर चक चीनी अथवा तामचीनी के पात्र पर बारीक कपड़ा खूब कस कर बांधदें। उस पात्र पर बन्धे हुए कपड़े पर लौंग, जायफल दारचीनी मिर्च का आधा चूर्ण रखदें (पात्र को भूमि में [illegible] उस
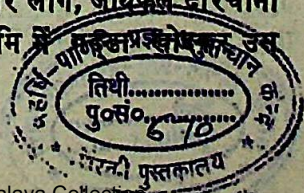
में रखलें, भूमि से ऊपर पात्र न रहे) इस चूर्ण के ऊपर संखिया का चूर्ण डालें, इस संखिया के चूर्ण के ऊपर और आस पास गन्धक और गूगल का चूर्ण डालें, जिससे संखिया का चूर्ण दिखाई न दे, इस गूगल और गन्धक के चूर्ण के ऊपर लौंगादि का आधा चूर्ण जो शेष था, वह डाल देवें अब पात्र पर सफेद अभ्रक का टुकड़ा इतना बड़ा हो, जिससे दवा और कपड़ा ढ़क जावे। इस अभ्रक के टुकड़े के चारों ओर मुलतानी मिट्टी की चार अंगुल ऊंची दिवार जैसी बना देवें। इसके भीतर अभ्रक के टुकड़े के ऊपर लकड़ी के जलने हुये कोयले डाल देवें, इनको कभी कभी पंखे से पवन (हवा) देते रहना चाहिये, जिससे आग सुलगती रहे। यह आग दो घण्टे देनी है। इस आग की गर्मी से दवा का तल निकल कर नीचे पात्र में चला जावेगा, इसको संभाल कर रखें। सावधानी रखें, कपड़ा न जलने पावे, नहीं नो सब औषधि पात्र में चली जायेगी।

सेवन विधि—सन्धिवातादि दर्दों पर इसकी १० बूंद, तिल तैल में मिलाकर मालिश करें। दमे के रोगी को नीम की सींक आदि किसी अन्य सींक को इस तैल में डालकर पान के पत्ते पर रगड़ दें और रोगी को खिलादें। नपुंसकता के रोगी को इस को एक बूंद प्रातः शाम दूध की मलाई में मिलाकर खिलावें और मूत्रेन्द्रिय के ऊपर मालिश करें, सींवन और सुपारी को बचावें।

गुण—यह तैल अत्यन्त तीव्र है। शीघ्र लाभ करने वाली दवा है। गठिया आदि वात रोगों पर इसकी मालिश करने से तत्काल लाभ प्रतीत होता है। दर्द से बेचैन रोगी को शान्ति हो जाती है। श्वास रोग में इसे खिलाते ही दौरा उसी समय बन्द हो जाता है। नित्य प्रयोग करने से दमे में शान्ति मिल जाती है। नपुंसकता के रोगी को इससे लाभ हो जाता है, कुछ दिनों में शक्ति आ जाती है। यह तैल उत्तम है, बनाकर लाभ उठायें।

स्वामी

१	हरयाणा के प्राचीन मुद्रांक	५
२	वीरभूमि हरयाणा	[illegible]
३	शेरशाह सूरी	-७५
४	वीर हेमू	-७५
५	मांस मनुष्य का भोजन नहीं	१-००
६	ब्रह्मचर्यामृत	-२५
७	बालविवाह से हानियां	-२०
८	स्वप्नदोष चिकित्सा	-३०
९	बिच्छू विष चिकित्सा	-२०
१०	पापों की जड़ (शराब)	-३५
११	हमारा शत्रु (तम्बाकू)	-३५
१२	नेत्र रक्षा	-३०
१३	व्यायाम का महत्व	-५०
१४	रामराज्य कैसे हो	-२०
१५	हरयाणा के वीर योधेय	७-००
१६	ब्रह्मचर्य के साधन १-२ भाग	-६०
१७	ब्रह्मचर्य के साधन ३ भाग (दन्त रक्षा)	-४०
१८	ब्रह्मचर्य के साधन ४ भाग (व्यायाम सन्देश)	१-५०

ह

पो०